मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 06 | दिसम्बर, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शिक्षा विभाग, राजस्थान

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

राजस्थान को शिक्षा का सिरमौर बनाएं

सम्मानीय शिक्षकों एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे मेरे समस्त साथियों! शिक्षा विभाग राजस्थान के मुखपत्र 'शिविरा' के स्तंभ 'अपनों से अपनी बात' के माध्यम से आपसे जुड़ना मुझे अपार खुशी प्रदान कर रहा है। मुझे आशा है कि यह माध्यम मेरे और आपके बीच में सेतु का कार्य करेगा जिससे हम राज्य में शिक्षा की बेहतरी के लिए और अधिक दृढ़ता से आगे बढ़ेंगे। जैसा कि आप जानते हैं कि हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के ऊर्जावान नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने की विशेष जिम्मेदारी मुझे दी गई है। मैं इसे अपना विशेष सौभाग्य मानता हूँ। आइए, आप और हम सभी मिलकर अपने राज्य राजस्थान को शिक्षा का सिरमौर बनाएँ।

मेरा स्पष्ट मानना है कि हमारे राज्य के प्रत्येक बालक एवं बालिका को शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले अपितु वर्तमान प्रतियोगी युग में वे सबल राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक भी बनें। हमारे विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु सुखद शैक्षिक वातावरण तो अनिवार्य है ही, साथ ही उनकी भौतिक संरचना भी सुदृढ़ हो, वहाँ की विद्यालय विकास समितियाँ (SDMC) ना केवल सक्रिय हों अपितु उनमें विद्यालय को श्रेष्ठतम विद्यालय बनाने का जुनून हो। हमारे योग्य शिक्षकों, अभिभावकों व समर्पित भामाशाहों से मेरा आग्रह है कि वे अपने-अपने क्षेत्र के प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी नैसर्गिक प्रतिभा को उचित मंच दिलाने व उसकी योग्यता के शत-प्रतिशत प्रकटीकरण का अवसर प्रदान करें।

वैश्विक महामारी कोविड-19 के चुनौतीपूर्ण समय में भी हमारे शिक्षकों और विभाग के कार्मिकों ने कोरोना वॉरियर्स की अग्रणी भूमिका निभाई एवं कक्षा और ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा की चुनौती स्वीकार की। अभिभावकों के मन में राजकीय विद्यालयों के प्रति सम्मान बढ़ा है, उत्साहजनक नामांकन वृद्धि इस बात का प्रमाण है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की पहल पर शुरू हुए राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेश हेतु अभिभावकों में उत्साह हमें इन विद्यालयों के संचालन की विशेष जिम्मेदारी का एहसास करवा रहा है। मेरे पिछले कार्यकाल में कक्षा 1 से 3 तक अंग्रेजी को अनिवार्य किया गया था तथा वर्तमान कार्यकाल में माननीय मुख्यमंत्री की बजट घोषणा के अनुसार राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों का विस्तार राज्य के प्रत्येक 5000 की आबादी वाले गाँवों और कस्बों तक आगामी वर्षों में किया जाएगा।

हमारे विद्यालय पूरी क्षमता के साथ क्रियाशील हैं परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में हमें अतिरेक से बचना है। मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) अपनाते हुए पूर्ण कोरोना गाइडलाइंस की पालना के साथ विद्यार्थियों को विद्याध्ययन करवाना है। दिसंबर माह शिक्षा-सत्र का उत्कर्ष है। अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के आयोजन में पूर्ण शुचिता और गंभीरता रखें। परीक्षा अवसर देती है श्रेष्ठ को सिद्ध करने का और रह गई कमी को सुधारने का। शिक्षक वर्ग को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि विद्यार्थियों का सतत मूल्यांकन हो तथा विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा और वार्षिक परीक्षा हेतु विशेष रूप से तैयार करें।

आप अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन श्रेष्ठतम रूप में करते रहें, आपके हितों का ध्यान रखना मेरी जिम्मेदारी है।

सभी के अच्छे स्वास्थ्य और मंगलकामना के साथ!

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

“अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के आयोजन में पूर्ण शुचिता और गंभीरता रखें। परीक्षा अवसर देती है श्रेष्ठ को सिद्ध करने का और रह गई कमी को सुधारने का। शिक्षक वर्ग को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि विद्यार्थियों का सतत मूल्यांकन हो तथा विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा और वार्षिक परीक्षा हेतु विशेष रूप से तैयार करें।

आप अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन श्रेष्ठतम रूप में करते रहें, आपके हितों का ध्यान रखना मेरी जिम्मेदारी है।”

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 6 | मार्गशीर्ष-पौष, २०७८ | दिसम्बर, 2021

प्रधान सम्पादक
काना राम

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- हमारी प्रतिबद्धता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 5

विशेष रपट

- राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2021 6
  मनोज कुमार

आलेख

- नवीन भवन लोकार्पण 10
  राजेन्द्र सिंह चारण
- त्यागमूर्ति देश रत्न-डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद 11
  रामगोपाल राही
- प्रेरक प्रसंग 12
  सौरभ बंसल
- मस्तिष्क एवं आत्मा की खुराक है अधिगम 13
  ओमप्रकाश सारस्वत
- गाँधी का शिक्षा दर्शन 15
  चेनाराम सीरवी
- विश्व मानवाधिकार दिवस 16
  मदन लाल मीणा
- मानवाधिकार 18
  सुभाष चौधरी
- प्लास्टिक का बहुतायात उपयोग : गंभीर खतरे 19
  प्रज्ञा गौतम
- सृजनशील बालक 21
  रामजी लाल घोड़ेला
- नो बैग डे 22
  रोहताश
- कार्मिक द्वारा अर्जित योग्यता अभिवृद्धि एवं उसका अंकन 23
  मनीष कुमार गहलोत
- उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु का आधार 24
  सीताराम गुप्ता
- चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा 25
  सत्यनारायण व्यास
- शिक्षक की भूमिका 26
  विद्या शंकर पाठक
- 2000 वर्ष प्राचीन पुरातात्त्विक साक्ष्य 27
  जफ़र उल्लाह खान
- बदलते परिवेश में शिक्षा के मायने 29
  भंवरलाल पुरोहित
- विद्यालय वातावरण और सीखना-सिखाना 30
  हंसराज गुर्जर

स्तम्भ

- आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2021 31-36
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 36
- बाल शिविरा 46-47
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 48
  देवेन्द्र प्रसाद डाबी
- हमारे भामाशाह 49-50

पुस्तक समीक्षा 37-45

- नेव निवाळी
  कहानीकार : किरण राज पुरोहित 'नितिला'
  समीक्षक : **दीपसिंह भाटी 'दीप'**
- काडर चेंज
  लेखक : ओम प्रकाश तंवर
  समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
- फाइव स्टार
  लेखक : डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
  समीक्षक : **दीनदयाल शर्मा**
- दो दूनी पाँच
  लेखक : भंवरलाल जाट
  समीक्षक : **राजेन्द्र प्रसाद मील**
- रातीघाटी युद्ध
  लेखक : जानकी नारायण श्रीमाली
  समीक्षक : **डॉ. चक्रवर्ती नारायण श्रीमाली**
- रात पछै परभात
  उपन्यासकार : सन्तोष चौधरी
  समीक्षक : **डॉ. रामरतन लटियाल**

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

स्वागत एवं अभिनन्दन

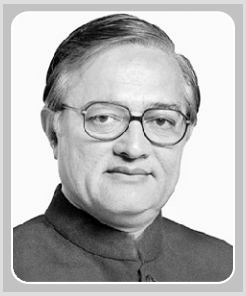

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक); संस्कृत शिक्षा; प्राथमिक शिक्षा (पंचायती राज के अधीनस्थ); कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

डॉ. बी.डी. कल्ला का जन्म दिनांक 04 अक्टूबर, 1949 एवं जन्म स्थान बीकानेर है। आपके पिताश्री का नाम (स्व.) श्री गिरधारी लाल जी कल्ला तथा माताश्री का नाम (स्व.) श्रीमती यशोदा देवी कल्ला है। आप शिक्षा में बी.एससी., एम.ए. (अर्थशास्त्र), एल.एल.बी. तथा पीएच.डी. उपाधि प्राप्त हैं।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती शिवकुमारी कल्ला है। आप 1980-85; 1985-90; 1990-92; 1998-2003; 2003-2008 तथा 2018 से लगातार राजस्थान विधानसभा के सदस्य (MLA) रहे हैं।

1980 से वर्तमान में, आपके पास राजस्थान सरकार में मंत्री; राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार); उप मंत्री, मुख्य सचेतक जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर रहने का तथा विभिन्न मंत्रालयों, विभागों को नेतृत्व देने का सुदीर्घ और गौरवशाली अनुभव है।

- 19 जुलाई 1981 से 16 अक्टूबर 1982 : उपमंत्री, शिक्षा, आयोजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग; संस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार।
- 16 अक्टूबर 1982 से 23 फरवरी 1985 : राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार।
- (17-10-82 से 23-02-85) राज्यमंत्री पर्यटन, कला, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग (स्वतंत्र प्रभार) तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा राज्य मंत्री।
- मुख्य सचेतक, राजस्थान विधानसभा में 01 मार्च 1985 से 06 फरवरी 1988 तक।
- 27 जनवरी 1988 से 09 फरवरी 1988 : मंत्री, सार्वजनिक निर्माण विभाग, संसदीय मामलात विभाग।
- 09 फरवरी 1988 से 12 जून 1989 : मंत्री, सार्वजनिक निर्माण विभाग, संसदीय मामलात विभाग, सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से संबंधित शिक्षा, प्रावैधिक शिक्षा विभाग।
- 12 जून, 1989 से 05 दिसम्बर, 1989 : मंत्री, सार्वजनिक निर्माण विभाग, इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, उपनिवेशन, सिंचित क्षेत्र विकास विभाग।
- 09 दिसम्बर 1989 से 04 मार्च 1990 : मंत्री, समाज कल्याण विभाग एवं आवासन विभाग।
- 1990-93 : सदस्य, सभापति तालिका, राजस्थान विधानसभा।
- 1990-91 : सदस्य, प्राक्कलन समिति 'ख'
- 1991-92 : सदस्य, प्रश्न एवं संदर्भ समिति
- 7.12.98 से 25-2-99 तक मंत्री, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा भाषा विभाग।
- 26.02.99 से 14.05.2002 मंत्री सामान्य प्रशासन, प्रशासनिक सुधार, सम्पदा, कार्मिक, मंत्रिमण्डल सचिवालय।
- 14.05.2002 से 25.01.2003 मंत्री, पर्यटन, कला एवं संस्कृति स्वायत शासन एवं नगरीय विकास।
- (अतिरिक्त प्रभार) कार्मिक, मंत्रिमण्डल, सचिवालय, सामान्य प्रशासन, सम्पदा, नागरिक उड्डयन विभाग।
- 25.01.2003 से 17.08.2003 : मंत्री, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, कार्मिक, मंत्रिमण्डल सचिवालय, सामान्य प्रशासन, सम्पदा, नागरिक उड्डयन, प्रशासनिक सुधार, शिक्षा विभाग (अतिरिक्त प्रभार)
- 17.08.2003 से 04.12.2003 : शिक्षा विभाग, कार्मिक, मंत्रिमण्डल सचिवालय, सामान्य प्रशासन, सम्पदा, नागरिक उड्डयन, प्रशासनिक सुधार विभाग।
- 1999-2000 : सदस्य, कार्य सलाहकार समिति।
- 11 दिसम्बर 2018 : पंद्रहवी राजस्थान विधान सभा के सदस्य निर्वाचित।
- दिसम्बर 2018 से : मंत्री, ऊर्जा, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, भू-जल, कला, सांस्कृतिक एवं पुरातत्व विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला अपने सरल, सहज, मिलनसारिता और हँसमुख मिजाज की बदौलत सर्वजन प्रिय हैं। आपके विराट अनुभव और प्रखर ऊर्जस्वी नेतृत्व में राज्य का शिक्षा विभाग नए आयाम स्थापित करते हुए शिक्षा का सिरमौर बनेगा।

विभाग का प्रत्येक शिक्षक और कार्मिक आपके नेतृत्व में नये उत्साह और ऊर्जा के साथ शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण मनोयोग के साथ अपना कर्तव्य श्रेष्ठतम रूप में संपादित करते रहने को दृढ़ संकल्पित है।

श्रीमती जाहिदा खान
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक) विभाग
राजस्थान सरकार

श्रीमती जाहिदा खान, राज्यमंत्री, शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक) विभाग, राजस्थान सरकार का शिक्षा विभाग राजस्थान के समस्त शिक्षकों एवं कार्मिकों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन, स्वागत।

श्रीमती जाहिदा खान का जन्म दिनांक 8 मार्च 1968 है। यह दिनांक अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्रीमती जाहिदा खान ने अपने जन्म दिवस की तिथि को सार्थक किया है आप सदैव महिला विकास, बालिका शिक्षा और नारी सशक्तीकरण के लिए समर्पित रही हैं।

राजनीतिक पृष्ठ भूमि आपको विरासत में मिली है। आपके वालिद मरहूम तैय्यब हुसैन खान साहब, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान क्षेत्र में सांसद तथा मंत्री रहे।

आपके पति (Er. Jalees Khan) महोदय, पंचायत समिति कामां भरतपुर के पूर्व प्रधान हैं। आप स्वयं सन् 2000 से 2005 तक पंचायत समिति, कामां भरतपुर में प्रधान रहीं।

श्रीमती जाहिदा खान भरतपुर के कामां निर्वाचन क्षेत्र से इण्डियन नेशनल कांग्रेस की निर्वाचित विधानसभा सदस्य (MLA) हैं। शिक्षा में आप बी.ए., एल.एल.बी. उपाधि प्राप्त हैं।

शिक्षा विभाग राजस्थान का प्रत्येक कार्मिक आप के ऊर्जावान नेतृत्व में राज्य की कल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में पूर्ण निष्ठा और मनोयोग से अपना योगदान देने हेतु दृढ़ संकल्पित है।

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

काना राम
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

हमारी प्रतिबद्धता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

समय चक्रानुसार प्रकृति वातावरण में ठण्डक घोल रही है परन्तु हमारे दृढ़ संकल्प, नई ऊर्जा के साथ हमें नैसर्गिक गरमाहट अनुभूत करवा रहे हैं। हमारी प्राथमिकता और प्रतिबद्धता है कि प्रत्येक विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और उसका सर्वांगीण विकास हो।

वर्तमान शिक्षा-सत्र अपने उत्कर्ष पर है, दिसम्बर माह इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसी समय हमें, शिक्षा और विद्यार्थी हित की अपनी समस्त योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और उपलब्धियों की समीक्षा करनी है और अभीष्ट लक्ष्य प्राप्ति की शत-प्रतिशत सुनिश्चितता भी।

विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन भी इसी माह में है यह केवल परीक्षा का आयोजन नहीं है, आयोजन की भी परीक्षा है। यह केवल विद्यार्थी की नहीं, हम सभी की है। महात्मा गाँधी के कथन के भावानुसार 'साधना की पवित्रता ही सिद्धि का निर्धारण करती है।'

परीक्षा एक माध्यम है मूल्यांकन का और मूल्यांकन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। मैं चाहता हूँ कि हमारे विद्यालयों का शैक्षिक परिदृश्य इतना आनंदमय हो जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी बिना किसी भय और तनाव के न केवल विद्याध्ययन करे अपितु परीक्षाओं में भी अपनी क्षमता का शत-प्रतिशत प्रदर्शन कर सके।

परीक्षा हो या खेल प्रतियोगिता, शीर्ष पर आना सभी को आनंद देता है अतः इस प्रतियोगी युग में सभी अपनी कार्ययोजना बनाकर समयबद्ध तैयारी करें और सफल हों।

शिक्षकों से मेरा विशेष आग्रह है कि जो विद्यार्थी परीक्षा में आशानुरूप उपलब्धि नहीं कर पाएं उन पर विशेष ध्यान दें। उनके लिए निदानात्मक और उपचारात्मक गतिविधियाँ करें। विशेष और अतिरिक्त कक्षाएँ भी संचालित करें ताकि हमारा प्रत्येक विद्यार्थी भविष्य की चुनौती को सहज स्वीकारने में सक्षम हो। ध्यान रहे विद्यार्थी को शैक्षिक परीक्षा के साथ-साथ जीवन की परीक्षा के लिए भी हमें तैयार करना है। आज के विद्यार्थी कल के सुनागरिक हैं, हमारा सौभाग्य है कि हम राष्ट्र निर्माण के इस शैक्षिक विशिष्ट अनुष्ठान के अंग अवयव हैं।

शिक्षा के इस महती कार्य से जुड़ आप सभी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में अपना कर्त्तव्य निर्वहन, पूर्ण मनोयोग और निष्ठा से करें।

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना।

(काना राम)

"समय चक्रानुसार प्रकृति वातावरण में ठण्डक घोल रही है परन्तु हमारे दृढ़ संकल्प, नई ऊर्जा के साथ हमें नैसर्गिक गरमाहट अनुभूत करवा रहे हैं। हमारी प्राथमिकता और प्रतिबद्धता है कि प्रत्येक विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और उसका सर्वांगीण विकास हो।"

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

विशेष रपट

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2021

❒ मनोज कुमार

भारत के पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हुए शिक्षा विभाग, राजस्थान ने राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2021का भव्य आयोजन बिड़ला ऑडिटोरियम, स्टेच्यू सर्कल, जयपुर में दिनांक 16 नवम्बर 21 को किया। शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या (दिनांक 15, नवम्बर, 2021) पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें सहभागी कलाकार प्रदेश के विभिन्न जिलों में कार्यरत शिक्षक रहे। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री महोदय, श्री गोविन्द सिंह डोटासरा तथा अध्यक्ष माननीय उच्च शिक्षा मंत्री महोदय, श्री भंवर सिंह भाटी थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा; श्री काना राम, निदेशक, माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा तथा डॉ. भंवर लाल, राज्य परियोजना निदेशक भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम दीप प्रज्वलन के साथ प्रारम्भ हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में शिक्षा विभाग में कार्यरत शिक्षकों द्वारा संगीत एवं नाट्य प्रस्तुतियाँ दी गई। सर्वप्रथम पधारो म्हारे देश, गीत की मधुर स्वर लहरियों के साथ सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान के रणबांकुरों की शान में वीर रस से ओत प्रोत प्रस्तुतियाँ दी गई, वहीं घूमर, गरबा एवं भांगड़ा नृत्य ने संस्कृतियों के समागम का रंग बिखेरा। इसके साथ ही ज्वलंत एवं समसामयिक विषय के रूप में राज्य सरकार की पालनहार योजना तथा प्रशासन गाँवों के संग और प्रशासन शहरों के संग अभियान की जानकारी देने और जनता को इस सम्बन्ध में जागरूक करने के उद्देश्य से एक नाटिका का भी मंचन किया गया। इस नाटिका की प्रस्तुति को सभी ने सराहा और इस प्रस्तुति का उल्लेख मुख्य रूप से माननीय मुख्यमंत्री के समक्ष 16 नवम्बर को सम्मान समारोह में भी किया गया।

शिक्षकों हेतु राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2021का भव्य आयोजन बिड़ला ऑडिटोरियम, स्टेच्यू सर्कल, जयपुर में दिनांक 16 नवम्बर 21 को किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री महोदय, श्री अशोक गहलोत तथा अध्यक्ष माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) महोदय, श्री गोविन्द सिंह डोटासरा थे। कार्यक्रम में माननीय उच्च शिक्षा मंत्री महोदय, श्री भंवर सिंह भाटी; माननीय तकनीकी एवं संस्कृत शिक्षा मंत्री महोदय, श्री सुभाष गर्ग; डॉ. डी.पी. जारोली, अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान; श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा तथा श्री कानाराम, निदेशक, माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सभी मंचासीन अतिथियों ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र एवं माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलन किया तथा माँ सरस्वती की वन्दना की। आगन्तुक महानुभावों का स्वागत गान द्वारा स्वागत किया गया। मंचासीन माननीय अतिथियों सहित सभागार में शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारीगण, सम्मानित शिक्षकगण, पूर्व सम्मानित शिक्षक, शिक्षक संघ पदाधिकारी, मीडियाकर्मी, व्यवस्थार्थ बनाई गई समितियों के सदस्य व अन्य अतिथियों ने व्यवस्थित रूप से बनाई गई दीर्घाओं में बैठकर समारोह का आनन्द लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी का आगमन रहा। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की मूर्ति के पास दीप प्रज्वलित कर की गई। श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा मंचासीन अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी दी गयी। श्री पवन कुमार गोयल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आज सम्मानित होने वाले ये शिक्षक हमारे लिए वन्दनीय हैं जिन्होंने अलग-अलग सन्दर्भों में अपने ज्ञान प्रकाश से समाज को ज्योतित किया। आदरणीय मुख्यमंत्री एवं शिक्षा राज्यमंत्री के नेतृत्व व निर्देशन में शिक्षा विभाग ने जो उपलब्धियाँ अर्जित की है उसमें ऐसी प्रतिबद्ध शिक्षक प्रतिभाओं का अपूर्व योगदान है।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) महोदय, श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने माननीय मुख्यमंत्री महोदय के समक्ष शिक्षा विभाग की उपलब्धियाँ बताने के पश्चात विभाग की मांगे भी रखी। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने कहा कि प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में नामांकन संख्या 10 लाख बढ़कर अब करीब एक करोड़ के आसपास पहुँच गई है तथा इन्सपायर अवार्ड मानक योजना, नामांकन आदि शिक्षा के कई क्षेत्रों में राजस्थान का देश भर में प्रथम स्थान रहा है। उन्होंने माननीय मुख्यमंत्री महोदय से शिक्षकों के लिए अलग से

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

योजना बनाकर उन्हें विशेष रियायत देने, राज्य में प्रतिबंधित जिलों की व्यवस्था समाप्त करने और विद्यालयों में सहायक कर्मचारियों के रिक्त पदों को भरने का भी आग्रह किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्री अशोक गहलोत ने कहा कि प्रदेश में महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की स्थापना एक क्रांतिकारी कदम है। इन स्कूलों के खुलने से गाँव-ढाणियों में रहने वाले किसान, गरीब व मजदूरों के बच्चों का अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने का सपना साकार हुआ है। उन्होंने शिक्षा के साथ संस्कार के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि बच्चों को अपनी संस्कृति एवं संस्कारों से कभी दूर नही होने दें। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि शिक्षा एवं शिक्षकों के हित में जो प्रस्ताव शिक्षा मंत्री द्वारा भेजे जाएँगे, सरकार की ओर से उन्हें स्वीकार किया जाएगा। गरिमामय मंच पर माननीय मुख्यमंत्री जी ने शिक्षक प्रशस्ति पुस्तिका 2019 का लोकार्पण किया, जिसमें विभिन्न संदेश एवं सम्मानित शिक्षकों की उपलब्धियों का प्रकाशन किया गया है।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष का शिक्षक सम्मान समारोह अपने आप में पूर्ण पारदर्शिता लिए हुए नई पहल के साथ मनाया गया। शिक्षकों के सम्मान हेतु चयन के लिए तीन स्तर निर्धारण किए गए जिसमें पारदर्शिता बरतते हुए ऑनलाइन आवेदन पत्र मांगे गए, चयन के मानदण्ड निर्धारित कर (मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को तथा वहाँ से निदेशालय को भिजवाए जाकर) राज्य स्तर, जिला स्तर, ब्लॉक स्तर पर चयन किया गया। प्रत्येक जिले से 03 शिक्षकों को (कक्षा 1 से 5 , 6 से 8 एवं 9 से 12) राज्य स्तर पर चयनित करते हुए कुल 33 जिलों से 99 शिक्षकों को सम्मानित किया। इस प्रकार से सत्र 2021-22 में राज्य स्तर पर 99 शिक्षकों को, जिला स्तर पर कुल-99 तथा ब्लॉक स्तर पर 702 शिक्षकों को सम्मानित किया गया, इस प्रकार कुल 900 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले तीन आदर्श विद्यालयों (राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय/राजकीय माध्यमिक विद्यालय) तथा तीन उत्कृष्ट विद्यालयों (राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय/ राजकीय प्राथमिक विद्यालय) के संस्था प्रधानों एवं राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित मापदण्डों के आधार पर जिला रेंकिंग में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले जिलों के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक को भी सम्मानित किया गया।

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में सम्मानित होने वाले कुल 111 शिक्षकों तथा अधिकारियों की सूची इस प्रकार है :-

(अ) राज्य स्तरीय सम्मानित शिक्षक सूची (कुल 99)

1. **सरिता यादव,** Teacher Level 1
   राप्रावि कनाडिया पं. स. श्रीनगर, अजमेर
2. **द्वारका प्रसाद बैरवा,** PET
   राउप्रावि उंदरी ब्लॉक केकडी जिला अजमेर
3. **रामावतार राव,** Lecturer
   राउमावि सिरोज, अजमेर
4. **आशा रानी सुमन,** Teacher Level 2
   राउप्रावि खरखडा, अलवर
5. **सुनिल कुमार शर्मा,** Teacher Level 2
   राउप्रावि मनेठी मुडावर, अलवर
6. **भूपेन्द्र सिंह,** Lecturer
   राउमावि नीमराना, अलवर
7. **शशि कान्त सेवक,** Teacher Level 2
   राउप्रावि तकता जी का तंडा, बांसवाड़ा
8. **राजेन्द्र प्रसाद सेवक,** Senior Teacher (Ele.)
   राउप्रावि फाटीखान, बांसवाड़ा
9. **नीरज उपाध्याय,** Lecturer
   राउमावि बडोदिया, बांसवाड़ा
10. **पूरण मल नागर,** Teacher Level 1
    राउमावि कलमंडा, बारां
11. **प्रद्युमन कुमार गौतम,** Teacher Level 2
    राउमावि कोटा रोड बांरा सिटी
12. **तरूण कुमार मित्तल,** Senior Teacher
    रामावि ठूंसरा, बारां
13. **ताकर राम,** Teacher Level 1
    राउमावि भीमालाई गांव, बाड़मेर
14. **अशोक कुमार पारीक,** Teacher Level 2
    स्वामी विवेकानन्द राज. मॉडल स्कूल बालोतरा, बाडमेर
15. **मोहन सिंह,** Lecturer
    राउमावि रानीया देशीपुरा, बाड़मेर
16. **लाखन सिंह,** Teacher Level 2
    राउप्रावि दयावाली, भरतपुर
17. **सोनवीर सिंह,** Teacher Level 2
    राउप्रावि दयावाली, भरतपुर
18. **राम कुमार सिनसिनवार,** Principal & Equivalent
    राउमावि हेलक, भरतपुर
19. **बन्ना लाल गुर्जर,** Teacher Level 1
    राप्रावि रेबारियों की ढाणी, भीलवाड़ा
20. **परमेश्वर प्रसाद कुमावत,** Teacher Level 2
    राउप्रावि शंभुपुरा ब्लाक शाहपुरा, भीलवाड़ा
21. **नारायण लाल गादरी,** PET
    राउमावि बापुनगर, भीलवाड़ा
22. **मधाराम चौधरी,** Teacher Level 2
    राउमावि केसरदेसर जाटान, बीकानेर
23. **सुबोध मिश्रा,** PET
    राउप्रावि इण्डस्ट्रीयल एरिया रानी बाजार, बीकानेर
24. **राम चन्द्र,** Senior Teacher
    रामावि मोरायत, बीकानेर
25. **हेमराज मीणा,** Teacher Level 1
    राप्रावि नंदपुरा, बूंदी
26. **ज्योति भदोरिया,** PET
    राउप्रावि बालापुरा कापरेन, बूंदी

27. **धनश्याम लाल लाडी,** Lecturer
राउमावि अलोद, बूंदी
28. **प्रहलाद राय खटीक,** Teacher Level 1
राप्रावि कालबेलिया बस्ती लालपुरा, चितौड़गढ़
29. **सोनल ओझा,** Teacher Level 2
राउमावि बोरडा, चितौड़गढ़
30. **गोपाल लाल शर्मा,** Headmaster - Equivalent
राबामावि पहूँना, चितौड़गढ़
31. **आशा राम जाट,** Senior Teacher (Ele. HM)
राउप्रावि बिलंगा, चूरू
32. **सोमवीर सिंह,** Teacher Level 2
शहीद भगवान सिंह राउप्रावि इंदासर, चूरू
33. **विजय कुमार आर्य,** Lecturer
राउमावि थीरपाली बाडी, चूरू
34. **हजारी लाल मीणा,** Teacher Level 1
राप्रावि सादरयान ढाणी कालाखों, दौसा
35. **रामअवतार धोबी,** Senior Teacher (Ele. HM)
राबाउप्रावि तालचीडी, दौसा
36. **बबली राम मीना,** Principal-Equivalent
राउमावि रींदली महवा, दौसा
37. **जयसिंह सिकरवार,** Teacher Level 1
राउमावि दयेरी, धौलपुर
38. **मनोज कुमार शर्मा,** Senior Teacher (Ele. HM)
राउप्रावि बरखेडा, धौलपुर
39. **भगवान सिंह मीना,** Lecturer
राबाउमावि पैलेस रोड, धौलपुर
40. **ममता यादव,** Teacher Level 1
राप्रावि हिम्मतपुरा, डूंगरपुर
41. **ख्याति शर्मा,** Prabodhak Level 2
राउप्रावि वाजरड़ा, डूंगरपुर
42. **मोहन लाल कलाल,** Lecturer
राउमावि महारवाल, डूंगरपुर
43. **मीना गुलाटी,** Teacher Level 1
राउमावि मानकसर, गंगानगर
44. **तरसेम सिंह,** Teacher Level 2
राउप्रावि 2 एल.सी., गंगानगर
45. **बलजिन्दर सिंह बरार,** Lecturer
राउमावि 4 जे.जे., गंगानगर
46. **मोहन लाल,** Teacher Level 2
राउमावि डाबडी, हनुमानगढ़
47. **जयबीर सिंह,** Principal & Equivalent
राउमावि डाबडी, हनुमानगढ़
48. **उत्तम कुमार,** Lecturer
राउमावि रासलाना, हनुमानगढ़
49. **नवल किशोर शर्मा,** Prabodhak Level 2
राप्रावि कालबेलिया की ढाणी कालवाड झोटवाडा, जयपुर
50. **रितु रानी शर्मा,** Senior Teacher (Ele. HM)
राउप्रावि टीबा श्योपुर, जयपुर
51. **रजनीश कुमार गुप्ता,** Lecturer
राउमावि हरसूलिया फागी, जयपुर
52. **संजीव इण्डिया,** Prabodhak Level 2
राउप्रावि उनराई, जैसलमेर
53. **सिकन्दर,** Senior Teacher (Ele. HM)
राउप्रावि रायपालों की ढाणी, जैसलमेर
54. **प्रहलाद कुमार,** Lecturer
राउमावि सितोडाई, जैसलमेर
55. **राम गोपाल पुरोहित,** Teacher Level 1
राउमावि कोटकास्ता, जालोर
56. **शेलजा माथुर,** Senior Teacher
महात्मा गांधी राज. विद्यालय शिवाजी नगर, जालोर
57. **राजेन्द्र कुमर करवासडा,** Senior Teacher
राउमावि भातीप, जालोर
58. **जालू राम,** Teacher Level 2
राउमावि खमला, झालावाड़
59. **उर्मिला मीना,** Teacher Level 2
राउमावि भैसानी, झालावाड़
60. **दिव्येन्दू सेन,** Lecturer
राउमावि सुनेल, झालावाड़
61. **पवन कुमार,** Teacher Level 1
शहीद फारूख अहमद राउमावि भीमसर, झुंझुनूं
62. **आन्नद कुमार झाझड़िया,** Senior Teacher (Ele. HM)
राउप्रावि दिलावरपुर, झुंझुनूं
63. **रामप्रताप,** Senior Teacher
रामावि गोवली, झुंझुनूं
64. **प्रदीप सिंह राठौड़,** Teacher Level 1
राउमावि रामसागर बेरा डेचु, जोधपुर
65. **नीता रावत,** Senior Teacher (Ele. HM)
राउप्रावि आंगणवा मंडोर, जोधपुर
66. **प्रेम राम,** Senior Teacher
स्वामी विवेकानन्द राज. मॉडल स्कूल फलौदी, जोधपुर
67. **अजीत सिंह सोलंकी,** Teacher Level 1
राप्रावि कटकरियान का पुरा मंडावरा, करोली
68. **राम सिंह मीना,** Teacher Level 2
राउप्रावि मिलकसराय, करोली
69. **वीरेन्द्र कुमार जाट,** Senior Teacher
रामावि रेवई, करोली
70. **यशवन्त कुमार शृंगी,** Teacher Level 1
राप्रावि हिरापुरा, कोटा
71. **योगेश मीना,** Teacher Level 2
राउमावि रामगंजमंडी, कोटा
72. **नीता डांगी,** PET
राउमावि मांददिया लाडपुरा, कोटा
73. **राजेन्द्र बांगड़ा,** Teacher Level 1
राप्रावि राईका की ढाणी बरनेल रोड जायल, नागौर
74. **भंवर सिंह खोखर,** Teacher Level 2
रामावि पायली, नागौर
75. **मोहम्मद अख्तर नदीम,** Lecturer
राउमावि जारोडा कलां, नागौर
76. **भागीरथ सिंह देवल,** Teacher Level 1
राप्रावि मामावास, पाली

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

77. **मोहन लाल जाट,** Teacher Level 2
राउप्रावि भाणिया सोजत, पाली
78. **दिनेश त्रिवेदी,** Lecturer
राबाउमावि सोजत सिटी, पाली
79. **संजय कुमार मेहता,** Teacher Level 2
राउप्रावि बनेडिया कलां, प्रतापगढ़
80. **हेमलता जैसवाल,** Prabodhak Level 2
राउप्रावि मंडावरा, प्रतापगढ़
81. **दीपक पंचोली,** Lecturer
राबाउमावि प्रतापगढ़
82. **कंचन कंवर,** Teacher Level 1
राबाउमावि भीम, राजसमंद
83. **विजय सोलंकी,** PET
राउमावि काछवली, राजसमंद
84. **वीना चौधरी,** Lecturer
राउमावि गुंजोल, राजसमंद
85. **चन्द्र प्रकाश गुर्जर,** Teacher Level 1
राप्रावि खेडा, सवाई माधोपुर
86. **शिव चरन मीना,** Teacher Level 2
राउप्रावि झाडोदा, सवाई माधोपुर
87. **मीना शर्मा,** Senior Teacher
रामावि आलनपुर, सवाई माधोपुर
88. **कल्पना,** Teacher Level 2
राप्रावि उज्जीन सिंह का नाडा बेरी, सीकर
89. **राकेश कुमार पूनिया,** Teacher Level 2
राउमावि नबीपुरा, सीकर
90. **पुरषोतम लाल स्वामी,** Lecturer
श्री कल्याण राउमावि सिल्वर जुबली रोड, सीकर
91. **छगन लाल मेघवाल,** Teacher Level 1
राप्रावि रतनगढ, सिरोही
92. **भावनीशा राठौड,** Teacher Level 2
राउमावि धामसरा, सिरोही
93. **सर प्रताप सिंह,** Lecturer
राउमावि अरठवाड़ा, सिरोही
94 **अनीता चौधरी,** Teacher Level 1
राउप्रावि भूरटिया, टोंक
95 **देवी लाल वैष्णव,** PET
राउप्रावि माताजी का धांवला, टोंक
96. **रामावतार यादव,** Lecturer
राउमावि सोहेला, टोंक
97. **भैरू लाल कलाल,** Teacher Level 2
राप्रावि सुरफालिया, उदयपुर
98. **गजेन्द्र पुरी गोस्वामी,** PET
राउप्रावि नया गुढ़ा, उदयपुर
99. **ओम प्रकाश खटीक,** Senior Teacher
राउमावि चीरवा बड़गांव, उदयपुर

(ब) आदर्श विद्यालय संस्था प्रधान सूची (कुल 03)

क्र.स.	संभाग	जिला	विद्यालय का नाम	संस्थाप्रधान का नाम
100	चूरू	चूरू	राउमावि तोलियासर, सुजानगढ़ चूरू	श्री कमलेश कुमार
101	चूरू	झुंझुनू	स्व. सै.प. ताडकेश्वर शर्मा राउमावि पचेरी झुंझुनूं	श्रीमती सुमित्रा स्वामी
102	पाली	जालौर	राउमावि कागमाला जालोर	श्री नारायण लाल

(स) उत्कृष्ट विद्यालय संस्था प्रधान सूची (कुल 03)

क्र.स.	संभाग	जिला	विद्यालय का नाम	संस्थाप्रधान का नाम
103	भरतपुर	धौलपुर	राउप्रावि रहल धौलपुर	श्री पारसराम
104	चूरू	चूरू	राप्रावि करणीसर चूरू	श्रीमती संतोष शर्मा
105	चूरू	झुंझुनू	राउप्रावि बामनवास झुंझनूं	श्री कैलाश चन्द्र

(द) जिला स्तरीय अधिकारी (जिला रैंकिंग) सूची (कुल 06)

क्र.स.	संभाग	जिला	जिला रैंकिंग	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक (सीडीईओ), समग्र शिक्षा	अतिरिक्त शिक्षा जिला परियोजना समन्वयक (एडीपीसी) समग्र शिक्षा
106–	जयपुर	जयपुर	प्रथम	श्री रतन सिंह यादव	107. श्री भंवर लाल जांगिड़
108–	चूरू	चूरू	द्वितीय	श्री लाल चन्द वर्मा	109. श्री रमेश चन्द पूनिया
110–	बीकानेर	हनुमान गढ़	तृतीय	श्री तेजा सिंह	111. श्री हंसराज जाजीवाल

पुरस्कृत शिक्षकों को प्रमाण-पत्र, स्मृति चिह्न, शॉल एवं 21 हजार रुपए की नकद राशि प्रदान की गई। सभी पुरस्कृत शिक्षकों/अधिकारियों ने और अधिक प्रेरणा तथा लगन से कार्य करने की प्रतिबद्धता प्रकट की।

अन्त में श्री काना राम, निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ने समारोह में पधारे माननीय मुख्यमंत्री महोदय जी; शिक्षामंत्री जी; तकनीकी एवं संस्कृति शिक्षामंत्री जी; उच्च शिक्षामंत्री जी; अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय एवं सम्मानित होने वाले शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, आयोजकों एवं सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त किया। श्रीमान निदेशक महोदय द्वारा निदेशालय बीकानेर तथा कार्यालय संयुक्त निदेशक, जयपुर संभाग, जयपुर के स्तर पर कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी संबंधित सदस्यों को सहयोग देने पर धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दौलतपुरा, डीडवाना, नागौर (राज.) **मो: 9414238513**

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

बदामबाई उदयलाल सिंयाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुड़ला, राजसमंद

नवीन भवन लोकार्पण

❒ राजेन्द्र सिंह चारण

बदाम बाई उदयलाल सिंयाल चैरीटेबल ट्रस्ट मुम्बई द्वारा जिला राजसमन्द के ग्राम गुड़ला में नवनिर्मित विशाल भवन का लोकार्पण दिनांक 15 नवम्बर 2021 को भव्य कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। श्री उदय लाल सिंयाल भामाशाह एवं मुख्य ट्रस्टी द्वारा माननीय मुख्यमंत्री महोदय, विधानसभा अध्यक्ष, शिक्षा मंत्री महोदय को कार्यक्रम में पधारने का निमंत्रण दिया गया। जिसे राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा एवं विधानसभा अध्यक्ष डॉ सी. पी. जोशी ने सहर्ष स्वीकार कर कार्यक्रम में शिरकत की अनुमति प्रदान की।

सम्पूर्ण जिला प्रशासन, ग्राम पंचायत धायला एवं शिक्षा विभाग ने इस आयोजन को सफल बनाने में श्री उदयलाल सिंयाल के साथ जुड़कर अपना अहम योगदान दिया।

15 नवम्बर 2021 का दिन ग्राम गुड़ला एवं राजसमन्द जिले के साथ राउमावि. गुड़ला के लिए ऐतिहासिक था। विद्यालय परिवार, ग्रामवासी, क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों ने बड़े उत्साह से इस कार्यक्रम की तैयारी में जोर शोर से बढ़-चढ़ कर भागीदारी की। विद्यार्थियों ने भी सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य, देशभक्ति गीत एवं राजस्थानी लोकनृत्य घूमर की प्रस्तुति दी।

सोमवार 15 नवम्बर प्रात : 11.30 बजे माननीय अतिथियों के शुभागमन के साथ ही लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। लगभग सात हजार से ज्यादा जनसमूह पाण्डाल मे मौजूद अतिथियों का भावभीना स्वागत करने के लिए आतुर था। जिला कलक्टर श्री अरविन्द पोसवाल एवं संभागीय आयुक्त श्री राजेन्द्र भटट् ने माननीय मुख्यमंत्री जी, शिक्षामंत्री जी, विधानसभा अध्यक्ष, सहकारिता मंत्री जी को विद्यालय भवन के पास तत्काल निर्मित हेलीपेड से एस्कॉर्ट करते हुए विद्यालय भवन में गाड़ियों के काफिले में आगमन किया। अतिथियों का विद्यालय की नन्हीं बालिकाओं द्वारा राजस्थानी संस्कृति एवं परम्परानुसार तिलक लगाकर अतिथि देवो भव:

की परम्परा का निर्वहन किया।

स्वागत द्वार पर श्री उदय लाल सिंयाल के परिवार के साथ श्री जितेन्द्र सिंयाल, श्री कमलेश सिंयाल, श्री भैरु सिंह चौहान, सरपंच एवं संस्थाप्रधान श्री राजेन्द्र सिंह चारण ने माननीय मुख्यमंत्री महोदय, विधानसभाध्यक्ष, शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा के साथ में सहकारिता मंत्री श्री उदयलाल आंजना का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने फीता काटकर भवन में प्रवेश किया और शिलापटट् का अनावरण किया। माननीय मुख्यमंत्री महोदय, शिक्षा मंत्री व अतिथियों के साथ सिंयाल परिवार के सदस्यों से रूबरू हुए। सिंयाल परिवार के स्नेही स्वजनों, मित्रगण, समाज के प्रबुद्धजन एवं आमंत्रित महानुभावों ने मुख्यमंत्री महोदय से मिलकर श्री उदयलाल सिंयाल द्वारा किए गए इस पुनीत कार्य की सराहना की। श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने सिंयाल परिवार की पीठ थपाथपाकर समाज के लिए आदर्श स्थापित करने के लिए शिक्षा विभाग की तरफ से आभार जताया।

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने स्वयं जनता के बीच पैदल चलकर मंच पर सभी अतिथियों के साथ पहुँचकर विशाल जनसमूह का धन्यवाद व अभिवादन किया। माननीय विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने कहा कि सिंयाल परिवार के इस प्रयास से गाँव के गरीब बच्चों को शहरी क्षेत्र के समान सुविधाएँ प्राप्त होगी। व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा का अहम योगदान है। माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने श्री उदय लाल सिंयाल का मंच पर स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया एवं इस पुनीत कार्य की प्रशंसा की। इसके साथ माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने जिला राजसमन्द में शिक्षा के विकास के लिए अनेक घोषणाएँ की। राउमावि. गुड़ला के उच्च माध्यमिक स्तर पर अतिरिक्त संकाय में विज्ञान एवं कृषि संकाय खोलने की घोषणा की।

शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा जी ने क्षेत्रीय निवासियों का धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ माननीय मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणाओं के आदेश तत्काल जारी करने की घोषणा की। अन्त मे मुख्यमंत्री महोदय के कर कमलों से गुड़ला की विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान किया जिसमें श्री भैरु सिंह चौहान, श्री मोहनी बाई, श्री राजेन्द्र सिंयाल, श्री नरेन्द्र सिंह चौहान एवं श्री लहरी लाल एवं श्री राजेन्द्र सिंह चारण को सम्मानित किया। कार्यक्रम कां संचालन श्री दिनेश श्रीमाली एवं गणपत सिंह चारण ने किया। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक महोदया श्रीमती एंजलिका पलात, जिशिअ माध्यमिक एवं प्रारम्भिक श्रीमती सुषमा भाणावत, सहायक निदेशक श्री कन्हैया लाल शर्मा, एडीईओ श्री शिवकुमार व्यास, श्री रिजवान फारुख, श्री पंकज सालवी, सीबीईओ प्रभारी श्री नगेन्द्र मेहता ने माननीय मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री एवं सहकारिता मंत्री के साथ भामाशाह श्री उदय लाल सिंयाल का अभिनन्दन पुष्पगुच्छ भेंट कर किया। निदेशालय माध्यमिक शिक्षा बीकानेर से सहायक निदेशक (CSR) श्री दिलीप परिहार, सहायक प्रभारी (CSR) श्री जगदीश चन्द्र एवं नरेन्द्र पंवार आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी अतिथियों एवं जनसमूह ने भोजन ग्रहण करने के साथ आत्मिक रूप से श्री उदय लाल सिंयाल परिवार का आभार प्रकट किया। सर्वे भवन्तु सुखिन: की मनोकामना के साथ सभी ने प्रस्थान किया।

प्रधानाध्यापक
ब.उ.सि.राउमावि. गुड़ला, राजसमंद (राज.)
मो. 9413263175

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

जयन्ती विशेष

त्यागमूर्ति देश रत्न -डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद

❒ रामगोपाल राही

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एकनिष्ठ निष्काम सेवा व्रती थे। जीवन की सब प्रकार की सुख सुविधाओं को छोड़कर वह देश के मुक्ति संग्राम में कूद पड़े। उनका सारा जीवन देश की निष्काम सेवा में व्यतीत हुआ। उन्होंने किसी प्रकार का पद नहीं चाहा- पर भारत का सर्वोच्च पद स्वयं उनसे सुशोभित हुआ। यह उनकी निष्काम तपस्या का परिणाम था। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने उनके महान व्यक्तित्व के गुणों के बारे में लिखा है कि केवल शब्दावली से डॉ. राजेंद्र प्रसाद के गुणों की रचना नहीं की जा सकती। सोने की कलम को मधु में डुबोकर लिखने पर ही उनके गुणों का बखान किया जा सकता है। इसी बात को वर्धा की हिन्दी प्रचार समिति ने कुछ इस प्रकार लिखा-चंदन की लेखनी को मधु में डूबोकर लिखने पर भी श्री राजेन्द्र बाबू के गुणों का पूरा बखान नहीं हो सकता।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 में बिहार के सहारनपुर जिले के जीरादेह ग्राम में हुआ था। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई, बाद में कोलकाता विश्वविद्यालय से मैट्रिक तथा वहीं प्रेसिडेंन्सी कॉलेज से इंटरमीडिएट और बीए की परीक्षा पास की जिसमें सर्वप्रथम रहे। आगे चलकर राजेन्द्र बाबू ने एम.ए. किया और सबसे पहले शिक्षक बने। परिवार वालों की इच्छा थी- वकील बनें। बाद में वे वकील भी बने व वकालत भी की। इस बीच उनकी मुलाकात महाप्राण गोखले से हुई। गोखले ने राजेन्द्र बाबू को देश सेवा के लिए प्रोत्साहित किया। राजेन्द्र बाबू तो पहले ही देश सेवा के लिए सक्रिय थे, अब और मुखर हो गए। अधिक सक्रिय होने के लिए राजेन्द्र बाबू ने अपने बड़े भाई को पत्र लिखा-वस्तुत: राजेन्द्र बाबू के हृदय में देश सेवा की तीव्र छटपटाहट थी। यह पत्र यही व्यक्त करता है साथ ही राजेन्द्र बाबू के चरित्र और गरिमा को व्यक्त करता है।

(प्रेरक पत्र के कुछ अंश) राजेन्द्र बाबू ने

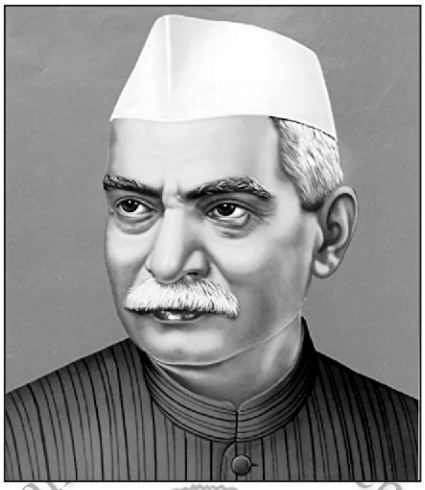

बड़े भाई को लिखा आज मेरा हृदय बहुत ही विचलित है इसलिए आपसे कहे बगैर नहीं रह पा रहा। मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि मुझे देश सेवा के लिए अर्पित कर दें। गोखले जी की भारत सेवक समिति में, मैं योगदान करना चाहता हूँ। मेरे लिए यह एक... कोई बहुत बड़ा त्याग करना नहीं कहा जाएगा। किसी भी अवस्था में अपने को खफा देने का ज्ञान मुझ में है, बहुत साधारण जीवन जीने का भी मैं अभ्यस्त हूँ। किसी प्रकार के मौज मजे का मुझ पर खिंचाव नहीं है। भारत सेवक समिति से जो कुछ प्राप्त होगा, उसी से मेरा गुजर हो जाएगा। हाँ, पारिवारिक दायित्व से मुझे छुटकारा देकर आपको कितना कष्ट होगा, मैं यह जानता हूँ, मुझे लेकर परिवार वालों के मन में जो आशा आकांक्षा जागी थी वह सब मिट्टी में मिल जाएगी। दरिद्रता घृणा की चीज नहीं। मनुष्यों में जिन्हें श्रेष्ठ कहा जाता है कहा गया है वे दरिद्र व्यक्ति ही थे। उन पर ना जाने कितने अत्याचार किए, वे व्यक्ति आज कहाँ हैं? बल्कि अत्याचार सहने वाले दरिद्र व्यक्ति ही आज सबके हृदय में बसे हुए हैं। आप आज्ञा दें। मैं भारत माँ की सेवा करना चाहता हूँ, मेरी और कोई इच्छा नहीं है।

राजेन्द्र बाबू बहुत ही सेवा भावी थे। मानव सेवा में अपना तन मन धन लगा देते थे। सन 1914 में बंगाल और बिहार के कुछ अंचलों में भयंकर बाढ़ आई। असम के व्यक्तियों के घर परिवार बह गए। राजेन्द्र बाबू दिन-रात बाढ़ पीड़ितों की सेवा में लगे रहे। वह बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में नाव में बैठकर जाते और वहाँ से पानी में डूब रहे लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाते। उनके लिए वस्त्र, भोजन की व्यवस्था करते, अथक परिश्रम के चलते रात्रि में निकटवर्ती रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर ही सो जाते। आगे इसी के चलते सन 1917 में चम्पारण में सत्याग्रह के अवसर पर महात्मा गाँधी से मुलाकात हुई। स्वयं महात्मा गाँधी ने डॉ राजेन्द्र बाबू को बुलाया था। किसानों का शोषण हो रहा था आंदोलन चल रहा था, गाँधीजी आए। आंदोलन के चलते अंग्रेज सरकार ने गाँधी जी को जेल में डाल दिया। जेल जाते जाते गाँधी जी बोले आंदोलन को जारी कौन रखेगा? गाँधी जी के इस कथन ने राजेन्द्र बाबू के आत्म तेज को जगा दिया। राजेन्द्र बाबू ने आंदोलन की कमान संभाली, आंदोलन चलता रहा। गाँधीजी के सत्याग्रह पर आंदोलन सफल हुआ, किसानों को राहत मिली। आंदोलन की सफलता से डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गाँधीजी से काफी प्रभावित हुए- उनके पूरे भक्त बन गए। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की महात्मा गाँधी के प्रति श्रद्धा जीवन पर्यन्त बनी रही। एक बार महात्मा गाँधी ने राजेन्द्र प्रसाद जी से कहा था - कम से कम एक व्यक्ति ऐसा है जो मेरे हाथ से विष का पात्र लेकर निसंकोच विषपान कर ले, और वह है राजेन्द्र प्रसाद। गाँधी जी की इस धारणा से राजेन्द्र प्रसाद का उनके प्रति अविचल विश्वास झलकता है। राजेन्द्र बाबू ने गाँधीजी के विचारों को दृढ़ विश्वास के साथ ग्रहण किया।

असहयोग आंदोलन में वकालत छोड़ने वालों में राजेन्द्र बाबू प्रथम थे। बिहार के राष्ट्रवादी देशभक्त मुसलमान मजहरूलहक ने पटना धामपुर मार्ग में गंगा के समीप अपनी सब संपत्ति त्याग कर सदाकत आश्रम की स्थापना की। राजेन्द्र बाबू यहीं रहकर देश सेवा में जुटे रहे।

राजेन्द्र बाबू को हिन्दी से विशेष लगाव

था। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रयाग 1924 में इन्हें सभापति बनाया गया।

राजनीति में अत्यधिक दिन रात सक्रिय राजेन्द्र बाबू का राजनीतिक जीवन बड़ा अचरज भरा रहा। राजेन्द्र बाबू का अधिकांश जीवन सत्याग्रह, आंदोलन, जेल से भरा हुआ है। वे वर्षों तक जेल में रहे। 1934 में जब राजेन्द्र बाबू जेल के अस्पताल में थे, उस समय बिहार में भयानक भूकंम्प आया था। इस भूकंम्प से जन-धन की अत्यधिक हानि हो रही थी। ऐसी स्थिति में यह सेवाव्रती- अस्पताल में कैसे पड़ा रह सकता था? राजेन्द्र बाबू बीमारी की अवस्था में ही पीड़ितों की पुकार सुन उनकी सेवा के लिए दौड़ पड़े। राजेन्द्र बाबू ने बिहार अर्थक्रेक रिलीफ सोसाइटी की स्थापना करके भूकंम्प पीड़ितों की सेवा तथा सहायता की। यह उनके सार्वजनिक जीवन की एक बेजोड़ कहानी समझी जाती है।

गाँधीजी के साथ-साथ राजेन्द्र बाबू राजनीति में पूरी तरह भागीदार रहे। आंदोलनों में सक्रियता के चलते ही 1934 में तत्कालीन सक्रिय पार्टी का वार्षिक अधिवेशन मुंबई में हुआ। राजेन्द्र बाबू को सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाया गया, इतना ही नहीं उसके बाद में भी फिर इन्हें ही अध्यक्ष बनाया गया था। दो बार लगातार अध्यक्ष रहे, जब यह अध्यक्ष रहे तब भी और उसके पश्चात भी राजेन्द्र बाबू देश की निरंतर सेवा करते रहे। गाँधीजी के नेतृत्व में इन्होंने स्वतंत्रता के हर आंदोलन में सक्रिय रूप से प्राण प्रण से भाग लिया। 1942 में महात्मा गाँधी ने करो या मरो के मंत्र के साथ देश सेवा का आह्वान किया। इस आंदोलन से घबराकर अंग्रेज सरकार ने सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। राजेन्द्र बाबू अस्वस्थ थे फिर भी उन्हें पटना के सदाकत आश्रम से गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। वे तीन साल जेल में रहे। अनेक राजनीतिक उलटफेर और परिवर्तन के बाद 2 सितंबर 1946 को भारत में अंतरिम सरकार बनी। राजेन्द्र बाबू अंतरिम सरकार में कृषि और खाद्य मंत्री बनाए गए। उस समय देश में अन्न संकट था। राजेन्द्र बाबू ने दूरदर्शिता एवं कार्य कुशलता से देश को दुर्भिक्ष व अन्न संकट से बचाया। तदन्तर 1946 में ही स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने के लिए संविधान सभा बनायी गयी। राजेन्द्र बाबू उसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। संविधान सभा का बुद्धिमता और कौशल से संचालन किया, जिससे यह सिद्ध हो गया कि साधारण वेशभूषा में भी असाधारण प्रतिभा होती है।

संविधान निर्माण के बाद 1952 में मताधिकार के आधार पर आम चुनाव हुए सर्वोच्च गौरवशाली राष्ट्रपति पद पर देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद निर्वाचित हुए। राजेन्द्र बाबू का विशाल हृदय अभूतपूर्व गौरवशाली राष्ट्रपति पद पर प्रथम और प्रधान नागरिक के रूप में पद आसीन होना उनके एकनिष्ठ देशभक्ति त्याग सेवा और तपस्या का ही परिणाम था।

इन्हीं गुणों से डॉ राजेन्द्र प्रसाद 1957 में भी दूसरी बार राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हुए। बाद में 1962 में स्वेच्छा से इस पद से मुक्त हो गए। राष्ट्रपति पद से मुक्त हो डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपने सदाकत आश्रम में लौट आए। यहाँ आकर भी आप पूर्व जीवन के समान ही लगन और उत्साह से देश सेवा कार्य में लगे रहे। राजेन्द्र बाबू सचमुच में देशरत्न थे, उनकी देश सेवा के सम्मान स्वरूप भारत सरकार ने 1962 में भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया।

सन 1963 में 28 फरवरी को त्यागमूर्ति राजेन्द्र बाबू का देहान्त हो गया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का व्यक्तित्व महान था। सुप्रसिद्ध साहित्यकार सेठ गोविंद दास जी ने, देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद नामक पुस्तक में उनके व्यक्तित्व के बारे में लिखा। जीवन भर अटूट सेवा, इन सबके साथ निष्ठा, लगन और त्याग पूर्ण कर्म मय जीवन का अपूर्व अवदान जिसने राजेन्द्र बाबू को न केवल उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक, सार्वजनिक जीवन में अपितु राष्ट्र जीवन में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एक अजातशत्रु के रूप में थे।

भूतपूर्व स्वर्गीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने शब्दों में पुण्य आत्मा राजेन्द्र बाबू एक महान दिव्य आत्मा पुरुष थे। राष्ट्र उनके त्याग मय जीवन को सदा याद रखेगा। उनका जीवन सदा हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

व्याख्याता (सेवानिवृत्त)
लाखेरी, बूंदी (राज)-323615
मो: 8949682800

Rajasthan Education Department

प्रेरक प्रसंग

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को किसी ने पत्थर का बना सुंदर फाउण्टेन पेन भेंट किया। उनका उस फाउण्टेन पेन से बहुत लगाव हो गया था। वे अपना लेखन कार्य उसी पेन से करते थे। काम समाप्ति के बाद स्वयं उसे संभाल कर रख देते थे।

एक दिन उनके ऑफिस का प्रमुख सेवक उनके मेज की सफाई कर रहा था। सफाई करते समय अचानक उससे वह पेन नीचे गिर गया और टूट गया। स्याही के कुछ छींटे कमरे में बिछे कालीन और महामहिम राष्ट्रपति जी के कपड़ों पर जा गिरे। राष्ट्रपति जी को उसकी लापरवाही पर क्रोध आ गया और उसको डांटते हुए अपने निजी कार्य से हटा कर दूसरी जगह भेज दिया।

सेवक चला तो गया, किन्तु डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी बेचैन हो उठे। अन्दर ही अन्दर उनका मन उन्हें बुरा-भला कहने लगा। वे उदास हो गए। इसी बीच कई मिलने वाले लोग आए किन्तु उनकी उदासी दूर नहीं हुई। उन्हें अपने सेवक से बुरा-भला कहने पर बड़ी ग्लानि हो रही थी। सेवक से अनजाने में हुई गलती के कारण उसे डांटना उन्हें उचित नहीं लगा। वे उससे क्षमा मांगना चाहते थे।

दूसरे दिन उन्होंने सेवक को बुलाया और उससे क्षमा याचना करने लगे। भारत का राष्ट्रपति एक सेवक से क्षमा मांगे, यह देखकर सेवक श्रद्धा से उनके चरणों में झुक गया। उनकी आँखें भर आई। उन्होंने उसी दिन उस सेवक को फिर से निजी कार्य पर रख लिया।

दोस्तों, जिंदगी में हम लोग भी कई बार छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा हो जाते हैं और दूसरे की थोड़ी सी गलती करने पर उससे उलझने लगते हैं और क्रोधित हो जाते हैं पर क्या ऐसा करना उचित है। सत्य तो यह है कि क्रोध हमेशा हमारा स्वयं का ही नुकसान करता है और इससे समस्या का समाधान नहीं निकलता है।

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन की यह कहानी हमें सीख दे जाती है कि एक उच्च चरित्र का आदमी स्वयं की गलती होने पर माफी मांगने से भी नहीं कतराता। इसलिए अपने जीवन में कभी भी छोटी-छोटी बातों को लेकर गुस्सा न करें और जीवन को प्रसन्नता से जिएं।

सौरभ बंसल
कनिष्ठ सहायक, शिविरा अनुभाग,
मा.शि.राज. बीकानेर
मो. 7665886464

शैक्षिक चिंतन

मस्तिष्क एवं आत्मा की खुराक है अधिगम

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

मानव शरीर की अद्भुत रचना की है भगवान ने। हमारा शरीर हमारा पावर हाउस है। उससे हम काम लेते हैं। वह हमारी पहचान है। लम्बे समय तक काम करने पर बीच-बीच में शरीर आराम और खाने के लिए (ईंधन) कुछ चाहता है। दिन भर काम करने के पश्चात रात्रि में पूर्ण आराम चाहता है। नींद पूर्ण आराम की द्योतक है। सामान्यतः 5-7 घंटे नींद लेने के पश्चात व्यक्ति नए दिन में नए उत्साह के साथ कार्य प्रारंभ करता है। एक यंत्र की भांति काम करने के लिए शरीर को ऊर्जा चाहिए और वह भोजन के रूप में मिलती है। मानव शरीर का संचालन मस्तिष्क से होता है। मस्तिष्क को तरोताजा, विकारमुक्त रखने तथा मस्त रहने की सलाह मनोवैज्ञानिक देते है। मस्तिष्क को उर्वरा शक्ति कहाँ से मिलती है? इस पर गहराई से विचार करें तो हम पाएंगे कि नित नया सीखते रहने, विभिन्न कक्षाओं (यथा संगीत, नृत्य, गीत, कविता, क्रीड़ा) के साथ संगति रखने से मस्तिष्क तरोताजा एवं ऊर्वरामय रहता है। मस्तिष्क के समान्तर महत्त्वपूर्ण है हमारी आत्मा। गाँधी आत्मा के उत्थान को शिक्षा कहते थे। इस प्रकार निरंतर सीखते रहना मस्तिष्क एवं आत्मा दोनों को खाद-बीज देने जैसा है। इससे कभी न समाप्त होने वाली खुशी प्राप्त होती है। अंग्रेजी में एक सुन्दर उक्ति है- 'Learning is a feast for the mind and spirit and a source of everlasting joy and happiness.'

अंग्रेजी साहित्य में अधिगम को मस्तिष्क एवं आत्मा का भोजन मानते हैं। जैसे स्थूल देह को चलाए रखने के लिए अन्न, जल एवं वायु आवश्यक है, वैसे ही स्थूल देह में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मस्तिष्क को सतत गति एवं प्रगतिवान (Progressive) बनाने के लिए जरूरी है कि उसे अधिगम की खुराक मिलती रहे। कार्यस्थलों पर भिन्न-भिन्न क्षमता एवं हैसियतों में विभिन्न व्यक्ति कार्य करते हैं। उनमें सुपरवाइजर एवं अधीनस्थ दोनों केडर के व्यक्ति होते हैं और सबके सब अपनी-अपने मर्यादा एवं शिष्टाचार में रहते हुए उस संस्थान की बेहतरी के लिए कार्य करते हैं। प्रबंध एवं प्रशासनिक व्यवस्था के अनुसार इन समस्त व्यक्तियों के ऊपर एक मुख्य नियंत्रक (Chief Controller) होता है, इसी सिद्धांत के अनुसार हमारे शरीर के विभिन्न अंग अपने-अपने लिए निहित व निर्धारित कार्य करते हैं। शरीर के इन विभिन्न अंगों के क्रियाकलापों का नियमन एवं नियंत्रण जिस अंग के द्वारा किया जाता है, उसका नाम मस्तिष्क है। मस्तिष्क को शरीर का मालिक अंग भी कहते हैं। उसका प्रमुख कार्य ज्ञान, बुद्धि, चिंतन, विचार, तर्कशक्ति, याद्दाश्त आदि को बढ़ावा देना है। इस प्रकार मस्तिष्क हमारे शरीर का मुख्य नियंत्रक (CEO) है। जिस प्रकार किसी उपक्रम का मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) सर्वाधिक वेतन एवं सुविधाएं प्राप्त करता है, उसी प्रकार शरीर के मुख्य कार्यकारी मस्तिष्क की सर्वाधिक परवाह करते हुए उसे स्वस्थ एवं विकारमुक्त रखना परम आवश्यक है। जैसा मन होगा, वैसा ही तन होगा। यह मन हमारा मस्तिष्क ही तो है।

आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विस्मयकारी युग है। आपकी मुट्ठी में रखे एंडरोइड फोन में दुनिया भर की जानकारी है। इस फोन का मूल्य उसकी मेमोरी (स्टोर करने की क्षमता) को देखकर निर्धारित किया जाता है। क्या कभी सोचा है कि भगवान ने हमें जो मस्तिष्क दिया है, वह कितनी सूचनाएं स्टोर कर सकता है, उसकी मेमोरी कितनी है...? हम कम्प्यूटर क्रांति की बात करते हैं, ऐसे अद्भुत आविष्कार करने वाले वैज्ञानिकों को धन्यवाद देते हैं, लेकिन ईश्वर ने हमारे शरीर में मस्तिष्क के रूप में जो अद्वितीय कम्प्यूटर दिया है, उसे नहीं देखते और न ही इसकी संरचना करने वाले ईश्वर को धन्यवाद देते।

मानव मस्तिष्क में लगभग 01 अरब तंत्रिका कोशिकाएं होती हैं। प्रत्येक तंत्रिका कोशिका में दस हजार से भी ज्यादा संयोग क्षमता रहती है। इससे ज्यादा जटिल एवं बारीक अंग और क्या होगा? परमात्मा ने खूब ही रचा है मानव मस्तिष्क। इसकी संग्रहण क्षमता अद्भुत अविश्वसनीय है। मेमोरी का मापन करने के लिए प्रचलित युनिट्स GB ⟶ MB ⟶ TB ⟶ PB है। लघु से वृहत का इसका वेटेज इस प्रकार है-

1 GB	= 1024 MB
1024 MB	= 1 TB
1024 TB	= 1 PB (Petabyte)

वैज्ञानिक शोध एवं अनुसंधान के अनुसार मानव मस्तिष्क की मेमोरी 01 TB से लेकर 2.5 PB तक होती है। है न अद्भुत एवं अविश्वसनीय! मानव मस्तिष्क मेमोरी की अपर लिमिट में आविनांक उपलब्ध अधिक से अधिक मेमोरी वाले कितने एंडरोइड फोन बनाए जा सकते है? जरा आकलन करके तो देखिए। यह जोड़-बाकी करना आसान नहीं होगा। आप दांतों तले अंगुली दबा लेंगे श्रीमान। मोटी-मोटी गणना के अनुसार 16 GB मेमोरी क्षमता वाले एक लाख छप्पन हजार एंडरोइड फोन बन जाएंगे। यह बात दीगर है कि एक सामान्य इंसान अपने पूरे जीवनकाल में मात्र 512 MB का ही उपयोग करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) 2020 में 5+3+3+4 पैटर्न में अब स्कूली शिक्षा+3 वर्ष से प्रारंभ हो जाएगी जबकि वर्तमान 10+2 पैटर्न में स्कूली शिक्षा +6 वर्ष से शुरू होती है। इसमें 3-6 वर्ष आयु वर्ग कवर्ड नहीं है। न्यूरो साइंस की रिसर्च के अनुसार बच्चे के मस्तिष्क का 85% विकास तो 6 वर्ष तक में ही हो जाता है। इस प्रकार 3+ के उपरांत के तीन वर्ष सीखने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर डॉ. कस्तूरीरंगन कमेटी ने पूर्व प्राथमिक (3 वर्ष)+ कक्षा पहली व दूसरी को मिलाकर पाँच वर्ष के Foundation Course की अनुशंसा की जिसमें बच्चे के बचपन की देखभाल करते हुए उसके लिए आनंददायी गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा सुनिश्चित की जाएगी। भवन की नींव की तरह यह पढ़ाई की नींव का पाठ्यक्रम होगा। इसका नाम ही अधिगम की बुनियाद (Foundation of Learning) रखा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लिखा है-Over 85% of a child's cumvlative BRAIN development occurs prior ot the age of six. Indicating the critical importance of appropviate

Rajasthan Education Department

can and stimulation of the brain in a child's early years for healthy brain development and growth.

Source : NPE' 2020 document/ part : School education/ Chapter I Early Childhood care and education : The Foundation of Learning/Point 1.1/ Page 6 of 55.

यह विचार करने की बात है कि बच्चे के मस्तिष्क का 85% समग्र विकास मात्र 6 वर्ष तक की आयु में हो जाता है, तो फिर आगे के वर्षों में यह गति क्यों नहीं रहती? मस्तिष्क की विकास दर बहुत ज्यादा है बशर्ते उसे उचित वातावरण मिले। मानव मस्तिष्क के इस माहात्म्य का पारायण करने के पश्चात इस बात में रुचि बढ़नी स्वाभाविक होगी कि मस्तिष्क को स्वस्थ, सानन्द, प्रफुल्लित एवं विकारमुक्त कैसे रखा जाए? इसके लिए सात्विक विचारों के साथ सात्विक अधिगम की खुराक मस्तिष्क को मिलनी आवश्यक है। शिक्षक एवं समाजशास्त्रियों के लिए तो यह और भी ज्यादा जरूरी है। इसके लिए कुछ यत्न, कुछ प्रयत्न हमें करने होंगे। इनमें कतिपय बिंदु इस प्रकार है–

(1) बनें सतत स्वाध्यायी– इस युग की विचित्र विडम्बना यह है कि व्यक्ति दुनिया भर को देखता है और उसके बारे में टीका टिप्पणी करता है। मगर अपने भीतर में नहीं झांकता। हम प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री आदि पर सम्पादकीय लिख सकते हैं मगर खुद का कोई पता नहीं रहता। आवश्यक है कि स्वयं का मूल्यांकन एवं परिष्कार करें। कहा भी है–

दोस पराए देखि करि, चला हसंत–हसंत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।।

–महात्मा कबीर

व्यक्ति जब स्वयं का मूल्यांकन करते हुए त्रुटि सुधार करता है तो उसके मस्तिष्क का परिष्कार एवं विकास होता है। याद रखिए, दूसरों के प्रति विकार भाव मानसिक कुस्वास्थ्य एवं स्वयं की चित्तभ्रम स्थिति के द्योतक हैं। इनसे बचना जरूरी है। स्वयं को टोकें, रोके और आदर्श पथ पर आगे बढ़ने के लिए सदैव उद्यत रहें। स्वयं अनुशासन व मर्यादा में रहें। स्वयं का सुधार जगत का सुधार है। महात्मा बुद्ध ने इसे आत्मदीपो भव कहकर समझाया है।

(2) उत्तम साहित्य का पारायण करें : दुनिया में स्वहितैषी, परहितैषी, सर्वहितैषी, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व हितैषी सुन्दर साहित्य उपलब्ध है। इनमें सर्व कल्याण, सर्व संकट हरण के मार्ग बताए गए हैं। महापुरुषों की जीवनियाँ उत्तम पथ पर चलने का आह्वान करती है। सद्साहित्य आत्म परिष्कार व परिमार्जन करता है। चित्त को शान्ति मिलती है। स्वहित से परहित का भाव मन में जगता है। आप खूब पढ़ें, अच्छे के लिए सोचें और अच्छा करें। महापुरुषों के द्वारा बताए पथ पर चलने का प्रयास करें। जरा कोशिश करके तो देखिए। आपको अद्भुत आनन्द की अनुभूति होगी। यह हमारे मस्तिष्क को तरोताजा व ऊर्जावान बनाए रखने की रामबाण औषधि है।

विद्यालयों में संधारित पुस्तकालय–वाचनालय ज्ञान के भंडार हैं। इनमें उपलब्ध ज्ञान का सांगोपांग उपयोग हम शिक्षकों को करना तथा विद्यार्थियों को करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। ज्ञान–धन सबसे बड़ा है। इससे बड़ा कुछ नहीं है। **न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते। (गीता 4/38)**

(3) उत्तम परम्परा उपनिषद् की : सज्जनों की संगति और सद्चर्चाएं आत्मा का परिष्कार करते हैं। समय–समय पर विभिन्न उत्तम चर्चाओं में शरीक होना चाहिए। उन पर खूब चिन्तन करना मस्तिष्क की उत्तम खुराक है। हमारे यहाँ उपनिषद (समीप बैठकर ज्ञानार्जन) की महान परंपरा रही है। जिसमें जिज्ञासु विद्वतजन के पास बैठकर ज्ञान ग्रहण करते थे। मन में शिष्य भाव (सीखने का भाव) होने पर ऐसा सम्भव हो सकता है। हमने जो जाना, समझा और सीखा है, उस पर समाज का अधिकार है। यह सामाजिक ऋण है। उसे अगली पीढ़ी को मय ब्याज सौंपकर जाने से इस ऋण से मुक्ति मिलती है। यह उदात्त एवं उज्ज्वल परम्परा सदियों से चली आ रही है। 'मैं अधिगम मार्ग का पथिक हूँ और मुझे अभी बहुत सीखना है' यह विनम्र भाव आपके चित्त को विमल, निर्मल कर आत्म परिष्कार का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह हमारे नाजुक पाक मस्तिष्क के लिए बहुत ही पौष्टिक एवं तत्काल फलदायी उत्तम खुराक है।

(4) सेवा पथ पर चलकर तो देखें– सेवा पथ पर चलने का गूढ़ अर्थ है कि हमारे मन में उत्तम मानवीय भाव हो तथा मन, वचन, कर्म से जरूरतमंद की यथा सामर्थ्य सहायता करने का संकल्प हमारे मन में हो। ऐसे भाव व संकल्प मस्तिष्क को सात्विक ऊर्जा प्रदान करते हैं। इनसे आत्मिक सुख का अहसास होता है। भले ही भौतिक साधन न हो अथवा मात्रा में कितने ही कम हो, हमारा चित्त स्वस्थ एवं सानन्द रहता है। परहित का भाव एवं उस दिशा में आपके प्रयास सारे रास्ते स्वयं खोल देंगे। कोई कमी नहीं रहेगी। बस मन में सच्चा भाव होना चाहिए। सेवा के इस दर्शन को स्पष्ट करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है–

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
पर हित बस जिनके मन माहिं।
ताकै जग कछु दुर्लभ नाहिं।।

(5) जब आवै संतोष धन–ज्यादा ऊहापोह की स्थिति चित्त में संशय एवं भ्रम पैदा करती है। इनसे मन मस्तिष्क को बचाना बहुत जरूरी है। संतोषी स्वभाव इसका निदान है। हम अधिक के लिए सद्प्रयास करें लेकिन जितना मिल जाए, उसे हरि कृपा समझकर संतोष कर लें। जो है उसका आनंद लें। जो नहीं है, उसके लिए 'जो है' उसका आनंद न गमाएं। यह मस्तिष्क के लिए परम आवश्यक है। तृष्णा बहुत बड़ी बाधा है। मृग तृष्णा की तरह मानव तृष्णा संतप्त होकर भागता फिरे, यह अच्छी बात नहीं है। सुख तो भीतर में महसूस होने वाली बात है जो सहज ही मिल सकता है। कुछ भी नहीं वाले सुखी एवं बहुत कुछ होने वाले दुखी देखे जा सकते हैं। यह तृष्णा का प्रभाव है।

ना सुख काजी पंडिता, ना सुख भूप भया।
सुख सहजां ही आवसी तृष्णा रोग गया।।
गो–धन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खानि।
जब आवै संतोष धन सब धन धुरि समान।।

ऐसे अन्य अनेक उपाय एवं विचार हो सकते हैं जो हमारे मस्तिष्क के लिए पौष्टिक खुराक का काम करते हैं। यह अधिगम वास्तविक अधिगम है। जब यह जान लेंगे तो फिर कुछ बाकी नहीं रह जाएगा। गुरुजन समाज के अग्रपुरुष हैं। उन्हें पुस्तक ज्ञान अथवा तय पाठ्यक्रम से ऊपर मनरंजन एवं परिष्कार के लिए छात्र–छात्राओं के मन में श्रेष्ठ विचार भरने हैं। इनका पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक तो स्वयं गुरुजन हैं। उनका कार्य, व्यवहार, व्यक्तित्व आदि पाठ्य बिन्दु अथवा अध्याय हैं जिनसे विद्यार्थी सीखेंगे। औपचारिक रूप से प्रार्थना सभा, बाल सभा, उत्सव पर्व आदि के अवसर पर ऐसी चर्चाएं करना बहुत सार्थक हो सकता है। मस्तिष्क को जितना परिष्कृत करेंगे, उतना ही जीवन परिष्कृत होता चला जाएगा। इति शुभम।।

शिक्षा संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए–विनायक लोक, बाबा रामदेवजी रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)–334401
मो: 9414060038

Rajasthan Education Department

शिक्षा विषयक विचार

गाँधी का शिक्षा दर्शन

❒ चेनाराम सीरवी

महात्मा गाँधी के शिक्षा विषयक विचार सर्वकालिक एवं सार्वभौमिक होने के साथ-साथ भारत के संदर्भ में सर्वथा उपयोगी है। शिक्षा संबंधी सिद्धांतों के निर्धारण में गाँधीजी ने देश की परिस्थितियों और व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया है। गाँधीजी का शिक्षा से तात्पर्य शिशु एवं मानव के शरीर, मन एवं आत्मा से निहित सर्वश्रेष्ठ तथ्यों के विकास से है। गाँधीजी के शैक्षिक विचार को निम्न बिंदुओं से समझ सकते हैं।

1. अध्यात्मोन्मुखी शिक्षा– महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है- 'आत्मा का प्रशिक्षण स्वयं एक महान कार्य है। आत्मा का विकास करना है और व्यक्ति को ईश्वर तथा आत्मानुभूति के लिए कार्य करने के योग्य बनाना है।' वे शिक्षा के केन्द्र में 'ईश्वर' को रखते है। उनका कहना है- 'जो ईश्वर में विश्वास करता है, वह सभी धर्मों में सामान्य रूप से श्रद्धा एवं विश्वास रखता है। गाँधीजी ने एक नए विचार को जन्म दिया-'सत्य ही ईश्वर है' इस सत्य की प्राप्ति के दो साधन है-अहिंसा और प्रेम। अहिंसा का अर्थ है- किसी को मारने की इच्छा मात्र का न होना। अहिंसा प्रेम से उत्पन्न होती है। इसमें विश्व भातृत्व का संदेश छिपा हुआ है।

2. चरित्रमूलक शिक्षा– महात्मा गाँधी 'चरित्र निर्माण' को शिक्षा का केन्द्रीय बिन्दु व मुख्य उद्देश्य मानते थे। उनकी यह धारणा थी- 'सच्ची शिक्षा की नींव चरित्र निर्माण है।' उनके अनुसार चरित्र व्यक्ति के आचरण में झलकता है। गाँधीजी ने व्यक्तित्व पवित्रता पर बल देते हुए कहा कि- 'चरित्र के बिना शिक्षा और पवित्रता के बिना चरित्र व्यर्थ है।' इस शिक्षा में सत्य, अहिंसा और प्रेम का त्रिकोण निहित है।

3. संस्कृतिमूलक शिक्षा– गाँधीजी ने संस्कृतिमूलक शिक्षा पर बल दिया है क्योंकि भारत में संस्कृति ने परिवार, समाज और राष्ट्र को भावात्मक एकता के सूत्र में बांधा है। संस्कृति ने ऐसे मूल्य दिए हैं जिसका जीवन पर घनीभूत प्रभाव पड़ा है। उन्होंने लोक संस्कृति की बात की जो व्यक्ति को समरसता, जीवंतता और आनंदमयता प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति सार्वभौम संस्कृति है, जिसमें वे तत्व निहित है, जो मानव शिक्षा के लिए सर्वथा उपयोगी तथा मानवीय गरिमा के अनुरूप है।

4. नारी शिक्षा – समाज अपना सर्वांगीण विकास तभी कर सकता है जब राष्ट्र की महिलाएँ भी पुरुष के साथ समानता से चलेगी। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संस्कार निर्माण में भूमिका भी अधिक है। इससे राष्ट्र विकास के साथ-साथ उसके द्वारा अर्जित किए गए संस्कारों में पूरे समाज का हित होता है। इसीलिए गाँधीजी ने नारी शिक्षा को अधिक महत्त्वपूर्ण आयाम दिया है। गाँधीजी ने शिक्षा नीति भारत की विशिष्ट परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक आधारों पर निर्मित एवं निर्धारित किए गए। इसे 'बुनियादी शिक्षा' नाम दिया। इस पर विचार करते हुए 'व्यक्ति के रूपांतरण' पर बल दिया है। इसके माध्यम से गाँधीजी लोकतंत्रीय समाज की स्थापना, नागरिकता के गुणों का विकास, आर्थिक उन्नति, नैतिक विकास आदि की संभावनाएँ देखते थे।

5. उद्योग केन्द्रित शिक्षा– गाँधीजी ने अपने अनुभव सिद्ध जीवन से ज्ञान व कर्म के पूरक संबंध को प्रमाणित किया। इस संबंध में अलगाव उत्पन्न करने वाली पश्चिमी ढंग की शिक्षा के सामने आक्रोश प्रकट करते हुए गाँधीजी ने कहा कि - 'देश में परिश्रम की उपेक्षा करने से भारत को नैतिक और आर्थिक क्षति पहुँची, जब से हमने शारीरिक श्रम से बुद्धि का संबंध छुड़ाया, तब से हमारी कोम का सब तरह से पतन हो गया।' इस तरह उन्होंने बुनियादी शिक्षा के अन्तर्गत श्रम के महत्त्व की पुनः प्रतिष्ठा की। जिसमें उन्होंने वातावरण के अनुकूल उत्पादक उद्योग को केन्द्र बनाकर विषय का ज्ञान कराने पर बल दिया।

6. अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा– गाँधीजी ने 'शिक्षा' का उपयोग अहिंसक अस्त्र के रूप में बच्चों को संस्कारित करने में किया। वे शुल्क को बच्चों की शिक्षा के लिए बाधक मानते थे, इसलिए 'वर्धा सम्मेलन' में सात वर्ष तक अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा का प्रस्ताव रखा। उनकी प्रेरणा से स्थापित विद्यापीठ द्वारा शुल्क लेकर शिक्षा देने वाली पश्चिमी शिक्षा को अनुपयुक्त सिद्ध कर दिया था।

7. शिक्षा का माध्यम– गाँधीजी ने शिक्षा के माध्यम के रूप में 'मातृभाषा' को अनिवार्य समझा है। गाँधीजी ने मातृभाषा को जीवनदायी कहा है। जिसके लिए गाँधीजी ने मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक रूप से ठोस कारण देते हुए कहा है- 'मातृभाषा को बच्चा जन्म से ही, वातावरण से सीख लेता है। उसे बचपन में दूसरी भाषा के द्वारा सब कुछ सिखाने की कोशिश उसके साथ बड़ी ज्यादती है। अपनी मानसिक गुलामी की वजह से ही हम मानने लगे हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।' उनके बौद्धिक विकास को ध्यान में रखते हुए गाँधीजी ने कहा है-'इस विदेशी भाषा के माध्यम ने हमारे देश में मौलिक विचारक पैदा करने की बजाए ऐसे लोग तैयार किए है जो हमारे देश में रहते हुए भी विदेशी है।'

8. स्वावलम्बी शिक्षा– स्वावलम्बी शिक्षा से तात्पर्य है आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक सभी दिशाओं में स्वावलम्बन। स्वावलम्बन का धर्म ही सब धर्मों का असली रूप है। शिक्षा में विद्यार्थी की सक्रिय भूमिका से ही उसे स्वावलम्बी बना सकती है। इस शिक्षा का भारत जैसे कृषि प्रधान और अधिकतर आबादी गाँव में रहने वाले देश के लिए महत्त्व अधिक बढ़ जाता है। स्वावलम्बन की बात कहते हुए गाँधीजी ने शारीरिक शिक्षा पर बल दिया क्योंकि शारीरिक स्वस्थता ही व्यक्ति की मन की स्वस्थता को भी बढ़ाती है। राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए श्रम और स्वावलम्बन अनिवार्य है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए गाँधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं उपादेय है।

सहायक आचार्य
RSCERT, उदयपुर (राज.) **मो: 9983449410**

Rajasthan Education Department

10 दिसम्बर

विश्व मानवाधिकार दिवस

❒ मदन लाल मीणा

सामान्य जीवन यापन के लिए प्रत्येक मनुष्य के अपने परिवार, कार्य, सरकार और समाज पर कुछ अधिकार होते हैं जो आपसी समझ और नियमों द्वारा निर्धारित होते हैं। इसी के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 दिसंबर 1948 को सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणापत्र को आधिकारिक मान्यता दी गई। जिसमें भारतीय संविधान द्वारा प्रत्येक मनुष्य को कुछ विशेष अधिकार दिए गए हैं अतः प्रत्येक वर्ष 10 दिसंबर को मानवाधिकार दिवस मनाया जाता है। मानव अधिकार से तात्पर्य उन सभी अधिकारों से हैं जो व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता एवं प्रतिष्ठा से जुड़े हुए हैं। यह सभी अधिकार भारतीय संविधान के भाग 3 में मूलभूत अधिकारों के नाम से वर्णित किए गए हैं और न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय है। जिसकी भारतीय संविधान न केवल गारंटी देता है बल्कि इसका उल्लंघन करने वालों को अदालत सजा भी देती है। वैसे तो भारत में 28 सितंबर 1993 से मानव अधिकार कानून अमल में लाया गया था और 12 अक्टूबर 1993 में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग का गठन किया गया था लेकिन संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 दिसंबर 1948 को घोषणा पत्र को मान्यता दिए जाने पर 10 दिसंबर का दिन मानवाधिकार दिवस के लिए निश्चित किया गया।

1. सब लोग गरिमा और अधिकार के मामले में स्वतंत्र और बराबर है। सभी मनुष्यों को गौरव और अधिकारों के मामले में जन्मजात स्वतंत्रता और समानता प्राप्त है।
2. प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के सभी प्रकार के अधिकार और स्वतंत्रता दी गई है रंग, लिंग, भाषा, धर्म, राजनीतिक या अन्य विचार,

राष्ट्रीयता या सामाजिक उत्पत्ति, संपत्ति, जन्म आदि जैसी बातों पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता।
3. प्रत्येक व्यक्ति को जीवन, आजादी और सुरक्षा का अधिकार है।
4. गुलामी या दासता से आजादी का अधिकार- किसी भी व्यक्ति को गुलामी या दासता की हालत में नहीं रखा जा सकता। गुलामी प्रथा और व्यापार पूरी तरह से वर्जित होगा।
5. यातना, प्रताड़ना या क्रूरता से आजादी का अधिकार- किसी को भी शारीरिक यातना नहीं दी जा सकती और ना किसी को अपमानजनक किया जा सकता है।
6. कानून के सामने समानता का अधिकार- हर किसी को हर जगह कानून की निगाह में व्यक्ति के रूप में स्वीकृति प्राप्ति का अधिकार है।
7. कानून के सामने सभी को समान संरक्षण का अधिकार- कानून की निगाह में सभी समान है और सभी बिना भेदभाव के समान कानूनी सुरक्षा के अधिकारी है।
8. अपने बचाव में इंसाफ के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाने का अधिकार- सभी को संविधान या कानून द्वारा प्राप्त बुनियादी अधिकारों पर किसी के द्वारा अतिक्रमण किए जाने पर समुचित राष्ट्रीय अदालतों की सहायता पाने का अधिकार है।
9. मनमाने ढंग से की गई गिरफ्तारी हिरासत में रखने के निर्वासन से आजादी का अधिकार- किसी को भी मनमाने ढंग से गिरफ्तार, नजरबंद या देश निष्कासित नहीं किया जा सकता।
10. किसी स्वतंत्र अदालत के जरिए निष्पक्ष सार्वजनिक सुनवाई का अधिकार- सभी को समान रूप से यह अधिकार है कि उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों के मामले में और फौजदारी के किसी मामले में उनकी सुनवाई अदालत द्वारा न्याय उचित और सार्वजनिक रूप से निरपेक्ष एवं निष्पक्ष हो।
11. जब तक अदालत दोषी करार नहीं दे देती उस वक्त तक निर्दोष होने का अधिकार- प्रत्येक व्यक्ति जिस पर दंडनीय अपराध का आरोप किया गया हो तब तक निरपराध माना जाएगा। जब तक उसे ऐसी खुली अदालत में कानून के अनुसार अपराधी न सिद्ध कर दिया जाए, जहाँ उसे अपनी सफाई की सभी आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त हो।
12. घर, परिवार और पत्राचार में निजता का अधिकार-किसी व्यक्ति की एकान्तता तथा परिवार, घर या पत्र व्यवहार के प्रति कोई मनमाना हस्तक्षेप ना किया जाए, नहीं किसी के सम्मान और ख्याति पर कोई आक्षेप हो। ऐसे हस्तक्षेप और आक्षेपों के विरुद्ध प्रत्येक को कानूनी रक्षा का अधिकार प्राप्त है।

13. अपने देश में भ्रमण और किसी दूसरे देश में आने जाने का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक देश की सीमाओं के अंदर स्वतंत्रता पूर्वक आने–जाने और बसने एवं अपने या पराए किसी भी देश को छोड़ने और अपने देश वापस आने का अधिकार है।
14. किसी दूसरे देश में राजनीतिक शरण माँगने का अधिकार– किसी व्यक्ति के सताए जाने पर उसे दूसरे देशों में शरण देने और रहने का अधिकार है परंतु इस अधिकार का लाभ ऐसे मामलों में नहीं मिलेगा जो वास्तव में गैर राजनीतिक अपराधों से संबंधित है।
15. राष्ट्रीयता का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र विशेष की नागरिकता का अधिकार है किसी को भी मनमाने ढंग से अपने राष्ट्र की नागरिकता से वंचित नहीं किया जा सकता।
16. शादी करने और परिवार बढ़ाने का अधिकार– शादी के बाद पुरुष और महिला का समानता का अधिकार– बालिग स्त्री पुरुषों को बिना किसी जाति, राष्ट्रीयता की रुकावट के आपस में विवाह करने और परिवार स्थापन करने का अधिकार है।
17. संपत्ति का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को अकेले और दूसरों के साथ मिलकर संपत्ति रखने का अधिकार है एवं किसी को भी मनमाने ढंग से अपनी संपत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता।
18. विचार विवेक और किसी भी धर्म को अपनाने की स्वतंत्रता का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को विचार, अंतरात्मा और धर्म की आजादी का अधिकार है। अपना धर्म या विश्वास बदलने और अकेले या दूसरों के साथ मिलकर तथा सार्वजनिक रूप में अथवा निजी तौर पर अपने धर्म या विश्वास को शिक्षा, क्रिया, उपासना तथा व्यवहार के द्वारा प्रकट करने की स्वतंत्रता है।
19. विचारों की अभिव्यक्ति और जानकारी हासिल करने का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को विचार और उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है। इसके बिना हस्तक्षेप राय रखना और किसी भी माध्यम के जरिए से तथा सीमाओं की परवाह न करके किसी की सूचना अवधारणा का अन्वेषण, ग्रहण तथा प्रदान इसमें सम्मिलित है।
20. संगठन बनाने और सभा करने का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को शांतिपूर्ण सभा करने या समिति बनाने की स्वतंत्रता का अधिकार है। किसी को भी किसी संस्था या सदस्य बनने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।
21. सरकार बनाने की गतिविधियों में हिस्सा लेने और सरकार चुनने का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश के शासन में प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्र रूप से चुने गए प्रतिनिधियों के जरिए हिस्सा लेने, सरकारी नौकरी को प्राप्त करने का समान अधिकार है।
22. सामाजिक सुरक्षा का अधिकार और आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों की प्राप्ति का अधिकार– समाज के एक सदस्य के रूप में प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा का अधिकार है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास का उस स्वतंत्र विकास के लिए जो राष्ट्रीय प्रयत्न, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा प्रत्येक राज्य के संगठन एवं साधनो के अनुकूल हो अनिवार्य आवश्यकता आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों की प्राप्ति का हक है।
23. काम करने का अधिकार– समान काम पर समान भुगतान का अधिकार और ट्रेड यूनियन में शामिल होने और बनाने का अधिकार, इच्छा अनुसार रोजगार के चुनाव, काम के उचित और सुविधाजनक परिस्थितियों को प्राप्त करने, समान कार्य के लिए बिना किसी भेदभाव के समान मजदूरी पाने एवं श्रमजीवी संघ बनाने और उनमें भाग लेने का अधिकार है।
24. शिक्षा का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार है जिसमें प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क होगी।
25. भोजन, आवास, कपड़े चिकित्सीय देखभाल और सामाजिक सुरक्षा सहित अच्छे जीवन स्तर के साथ स्वयं और परिवार के जीने का अधिकार।
26. काम करने के मुनासिब अवधि और सार्वजनिक छुट्टियों का अधिकार– प्रत्येक व्यक्ति को विश्राम और अवकाश का अधिकार है। इसके अंतर्गत काम के घंटों के उचित हदबंदी और समय–समय पर मजदूरी सहित छुट्टियां सम्मिलित है।
27. सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होने और बौद्धिक संपदा के संरक्षण का अधिकार – प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता पूर्वक समाज के सांस्कृतिक जीवन में हिस्सा लेने,कलाओं का आनंद लेने तथा वैज्ञानिक उन्नति और उसकी सुविधाओं में भाग लेने का अधिकार है।
28. प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की प्राप्ति का अधिकार है जिसमें उस घोषणा में उल्लिखित अधिकारों और स्वतंत्रताओं का पूर्णता को प्राप्त किया जा सके।
29. प्रत्येक व्यक्ति का उसी समाज के प्रति कर्त्तव्य हैं जिस में रहकर उसके व्यक्तित्व का स्वतंत्रता और पूर्ण विकास संभव हो।
30. घोषणा पत्र में शामिल किसी भी बात की ऐसी व्याख्या ना हो जिससे यह आभास मिले कि कोई राष्ट्र व्यक्ति या गुट किसी ऐसी गतिविधि में शामिल हो सकता है जिससे किसी की भी स्वतंत्रता या अधिकारों का हनन हो।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चांदेसरा,
तह. बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
मो: 9928173922

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

मानवाधिकार दिवस विशेष

मानवाधिकार

❒ सुभाष चौधरी

मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (Universal Declaration of human rights- UDHR) एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 दिसम्बर 1948 को पेरिस में अपनाया गया इसलिए हर साल 10 दिसम्बर को UDHR की सालगिरह के रूप में मानवाधिकार दिवस मनाया जाता है। मानव अधिकारों के इतिहास में यह बहुत महत्त्वपूर्ण घोषणा है क्योंकि इसके द्वारा ही पहली बार मानव अधिकारों को सुरक्षित करने का प्रयास किया गया था।

1991 में पेरिस में हुई संयुक्त राष्ट्र की बैठक ने सिद्धांतों का एक समूह (जिन्हें पेरिस सिद्धांतों के नाम से जाना जाता है) तैयार किया जो आगे चलकर राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाओं की स्थापना और संचालन की नींव साबित हुए।

क्या होते है मानवाधिकार?

1. संयुक्त राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार ये अधिकार जाति, लिंग, राष्ट्रीयता, भाषा, धर्म या किसी अन्य आधार पर भेदभाव किए बिना सभी को प्राप्त हैं।
2. मानवाधिकारों में मुख्यतः जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार, गुलामी और यातना से मुक्ति का अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार और काम एवं शिक्षा का अधिकार शामिल है।
3. यह वे अधिकार होते है जो कोई भी व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के इन अधिकारों को प्राप्त करने का हकदार होता है।

मानवाधिकार परिषद्:- मानवाधिकार परिषद् एक अंतर सरकारी निकाय है जिसका गठन 15 मार्च 2006 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव द्वारा किया गया था।

- इसे पूर्व में रहे संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के स्थान पर लाया गया था।
- यह पूरी दुनिया में मानवाधिकारों के संवर्द्धन और संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए उत्तरदायी है इसी के साथ यह संस्था मानव अधिकार के उल्लंघनों की भी जाँच करती है।
- इसके पास मानव अधिकार से जुड़े सभी महत्त्वपूर्ण मुद्दों और विषयों पर चर्चा करने का अधिकार है।
- यह परिषद् संयुक्त राष्ट्र महासभा में चुने गए 47 सदस्य देशों से मिलकर बनती है।

भारत के संदर्भ में मानवाधिकार एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन व संरचना- भारत में भी मानवाधिकारों की पैरोकारी एवं संरक्षण हेतु पेरिस सिद्धांतों के अनुसरण में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (National Human Rights Commission-NHRC) एक स्वतंत्र वैधानिक संस्था है जिसकी स्थापना मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम 1993 के प्रावधानों के तहत 12 अक्टूबर 1993 को भी की गई थी।

- मानवाधिकार आयोग का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है और 12 अक्टूबर 2018 को इसने स्थापना के 25 वर्ष पूरे किए।
- यह संविधान द्वारा दिए गए मानवाधिकारों जैसे-जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार और समानता का अधिकार आदि की रक्षा करता है और उनके प्रहरी के रूप में कार्य करता है।

NHRC की संरचना- NHRC एक बहु सदस्यीय संस्था है जिसमें एक अध्यक्ष सहित 7 सदस्य होते है इसमें से तीन कम से कम पदेन सदस्य होते है (Ex Officio)

- अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली उच्च स्तरीय कमेटी की सिफारिशों के आधार पर की जाती है।
- अध्यक्ष और सदस्यों का कार्यकाल 5 वर्ष या 70 वर्ष की उम्र जो भी पहले हो तक होता है।
- इन्हें केवल तभी हटाया जा सकता है जब सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश की जाँच में उन पर दुराचार या असमर्थता के आरोप सिद्ध हो जाए।
- राज्य मानवाधिकार आयोग में अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा राज्य के मुख्यमंत्री, गृहमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष के परामर्श पर की जाती है।

NHRC के कार्य और शक्तियाँ- मानवाधिकारों के उल्लंघन से संबंधित कोई मामला यदि NHRC के संज्ञान में आता है या शिकायत के माध्यम से लाया जाता है तो NHRC को उसकी जाँच करने का अधिकार है।

- इसके पास मानवाधिकारों के उल्लंघन से संबंधित सभी न्यायिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार है।
- आयोग किसी भी जेल का दौरा कर सकता है और जेल में बंद कैदियों की स्थिति का निरीक्षण एवं उसमें सुधार के लिए सुझाव दे सकता है।
- NHRC मानवाधिकार के क्षेत्र में अनुसंधान का कार्य भी करता है।
- आयोग के पास दीवानी अदालत की शक्तियाँ है और यह अंतरिम राहत भी प्रदान कर सकता है।
- इसके पास मुआवजे या हर्जाने के भुगतान की सिफारिश करने का भी अधिकार है।
- आयोग अपनी रिपोर्ट भारत के राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत करता है जिसे संसद के दोनों सदनों में रखा जाता है।

वर्तमान में NHRC चेयरमैन अरुण कुमार मिश्रा है।

व्याख्याता
राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय
भीनासर, बीकानेर (राज.)
मो: 8114489352

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पर्यावरण व स्वास्थ्य

प्लास्टिक का बहुतायत उपयोग : गंभीर खतरे

❒ प्रज्ञा गौतम

हमारी प्लास्टिक पर निर्भरता इस कदर बढ़ गयी है कि इससे पूर्णतया मुक्ति फिलहाल संभव नजर नहीं आ रही। प्लास्टिक हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। कितना भी प्रयास कर लें, अपने दैनिक जीवन में हम प्लास्टिक उपयोग से अछूते नहीं रह सकते। दिन भर में हम कितनी ही बार प्लास्टिक वस्तुओं के संपर्क में आते हैं। प्लास्टिक का यह असीमित उपयोग पर्यावरण के लिए तो सर दर्द बन ही गया है, साथ ही स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा है। हमारे जीवन में पूर्णरूपेण रचा-बसा यह पदार्थ अपने जीवन चक्र की प्रत्येक अवस्था (निर्माण से नष्ट होने तक) हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है।

हम जानते हैं कि खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग में प्लास्टिक का धड़ल्ले से उपयोग होता है। डिस्पोजेबल बर्तन और बोतलें अत्यधिक प्रचलन में हैं। जब हम बात करते हैं कि प्लास्टिक के पात्रों में संग्रहित पेय और खाद्य पदार्थों की तो प्रश्न यह उठता है कि यह प्लास्टिक खाद्य सामग्री संग्रहण के लिए कितना सुरक्षित है? दवाएं अब प्लास्टिक की बोतलों में आती है। शरबत, सॉस, जैम और अचार जैसी खाद्य सामग्री भी अब काँच की जगह प्लास्टिक के पात्रों में आ रही है। कुछ दवाओं, तरल और अम्लीय खाद्य पदार्थों का लम्बे समय तक प्लास्टिक पात्रों में संग्रहण स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। प्लास्टिक को कठोरता प्रदान करने के लिए बिसफिनॉल A और लचीला और मुलायम बनाने के लिए थैलेट्स मिलाए जाते हैं। ये दोनों पदार्थ शरीर की अन्तःस्रावी क्रियाओं में व्यवधान उत्पन्न करते हैं। प्लास्टिक पात्रों में उपस्थित रसायन बिस फिनॉल A (BPA) पर विवाद उठा, तो ज्यादातर प्लास्टिक सामग्री BPA फ्री लेबल के साथ बाजार में उपलब्ध हो गया। लेकिन प्लास्टिक के खतरों पर विवाद अभी थमा नहीं है। प्लास्टिक में BPA के अतिरिक्त भी अनेक घातक रसायन हो सकते हैं जिन्हें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है।

विविध प्लास्टिक और स्वास्थ्य खतरे– मुख्य रूप से सात प्रकार के प्लास्टिक है जिनसे रोजमर्रा उपयोग की वस्तुएं बनी होती हैं–

1. पालीएथीलीन टेरेथैलेट्स (PET)–PET प्लास्टिक अधिकांश खाद्य और पेय पदार्थों के संग्रहण में उपयोग लिया जाता है क्योंकि तुलनात्मक रूप से इसे सुरक्षित माना जाता है। बोतलें और डिब्बे सामान्यतः इसके बने होते हैं। यह ऑक्सीजन के प्रति अपारगम्य होता है, इसलिए इसमें खाद्य पदार्थ ज्यादा समय तक सुरक्षित रह सकते हैं। इसी प्रकार यह कार्बोनेटेड पेय पदार्थों की कार्बन डाई ऑक्साइड को बाहर नहीं निकलने देता। PET में एंटीमनी ट्राइऑक्साइड होता है जो कि एक कैंसर कारक पदार्थ है। PET बोतलों में लम्बे समय तक पेय पदार्थ रखना, कार या गैरेज के गर्म वातावरण में रखना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

2. हाई डेंसिटी पालीएथीलीन (HDPE)– ये लम्बी और अशाखित पॉलीमर शृंखला के बने होते हैं। यह प्लास्टिक सघन, अपारदर्शी और मजबूत होता है और PET से अधिक सुरक्षित माना जाता है। यह खाद्य और पेय पदार्थों के संग्रहण के लिए उपयुक्त है। लेकिन पराबैंगनी प्रकाश में लम्बे समय तक रखने पर यह हानिकारक रसायन खाद्य पदार्थों में छोड़ सकता है। दूध और जूस के अपारदर्शी डब्बे, शैम्पू, दवा आदि की बोतलें इसकी बनी होती है।

3. पालीविनाइल क्लोराइड (PVC)– यह सबसे ज्यादा हानिकारक प्लास्टिक है। पालीएथीलीन के बाद यह विश्व में सर्वाधिक प्रयोग में लिया जाता है। इससे खिलौने, मेडिकल ट्यूब्स, ब्लड बैग, पाइप, डिटर्जेंट बोतले इत्यादि बनाए जाते हैं। इस प्लास्टिक में सर्वाधिक विषाक्त रसायन जैसे BPA, थैलेट्स, लैड, पारा और कैडमियम आदि होते हैं। इस प्लास्टिक का पुनर्चक्रण भी मुश्किल से होता है और इससे काफी प्रदूषण भी कम होता है। इस प्लास्टिक को उपयोग में नहीं लेना ही बेहतर है।

4. लो डेंसिटी पालीएथीलीन (LDPE)– यह पालीथीन सबसे सरल प्लास्टिक है। LDPE में शृंखला युक्त पालीथीन होता है। इसलिए यह हल्का, लचीला और पतला होता है। अधिकांश प्लास्टिक बैग्स, दूध के डिब्बों और कागज के कपों के अस्तर, दबाने वाली शहद की बोतलों के ढक्कनों, धातु तारों के अस्तर आदि बनाने में प्रयुक्त होता है। तुलनात्मक रूप से इसे सुरक्षित माना जाता है लेकिन कुछ अध्ययन बताते हैं कि यह मानव पर हानिकारक हॉर्मोनल प्रभाव डाल सकता है।

5. पालीप्रोपीलीन (PP)– मजबूत और ऊष्मारोधी होता है। गर्म खाद्य के संग्रहण में काम में लिया जाता है। इसके अलावा यह गर्म बनियानों, डायपर्स, सेनेटरी नैपकिन्स में भी प्रयुक्त होता है। तुलनात्मक रूप से इसे भी सुरक्षित प्लास्टिक माना जाता है। लेकिन यह अस्थमा और हानिकारक हॉर्मोनल प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। इसका पुनर्चक्रण भी मुश्किल है।

6. पालीस्टाइरीन (PS)– डिस्पोजेबल बर्तन, पैकिंग फोम, हेलमेट के अन्दर लगी हुई फोम आदि पालीस्टाइरीन के बने होते हैं। गर्म और तैलीय भोजन के संपर्क में आकर बर्तनों से स्टाइरीन भोजन में घुल जाता है। यह एक न्यूरोटोक्सिन है। यह फेफड़ों, जींस, इम्यून सिस्टम और लीवर को भी प्रभावित करता है। इसका पुनर्चक्रण कठिनाई से होता है।

7. पालीकार्बोनेट्स (PC) और अन्य प्लास्टिक– इस श्रेणी में पालीकार्बोनेट्स और अन्य मिले-जुले प्लास्टिक आते हैं। पहले बहुत सारी उपभोक्ता वस्तुओं में पालीकार्बोनेट्स का उपयोग किया जाता था। हाल ही के कुछ वर्षों में इसका उपयोग सीमित कर दिया गया है क्योंकि इसमें उपस्थित रसायन बिसफिनॉल A (BPA) स्वास्थ्य संबंधी मसलों के कारण विवादों में है।

Rajasthan Education Department

क्या है बिसफिनॉल A और उसके विकल्प– बिसफिनॉल A एक रेजिन सदृश पदार्थ है जो पारदर्शिता और मजबूती प्रदान करता है। इसका रासायनिक सूत्र $(CH_3)_2 C(C_6H_4OH)_2$ है। इसमें दो हाइड्रोक्सिल समूह होने के कारण इसे बिसफिनॉल कहते हैं। यह कुछ प्लास्टिक पदार्थों जैसे पालीकार्बोनेट्स, एपोक्सी रेजिन्स और पालीसल्फोन का पूर्ववर्ती पदार्थ है। पालीकार्बोनेट प्लास्टिक ज्यादातर एकल उपयोग पानी की बोतलों में प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त यह सामानों की प्लास्टिक पैकिंग, हाइजीन उत्पाद, घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स, चश्मे के लैंस और खेल सामग्री आदि में प्रयुक्त होता है। थर्मल प्रिंटेड रसीदों में भी BPA की उच्च मात्रा होती है। प्लास्टिक लेवल 3, 7 और शब्द पी सी का अर्थ है कि उत्पाद में BPA है। बिसफिनॉल मादा हॉर्मोन एस्ट्रोजन जैसा व्यवहार करता है। कम मात्रा में भी यह शरीर की अन्तः स्रावी और उपापचयी क्रियाओं को प्रभावित कर सकता है।

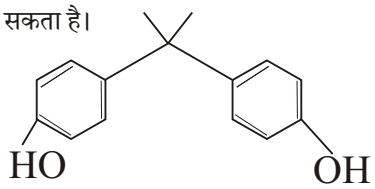

बिसफिनॉल A की आण्विक संरचना

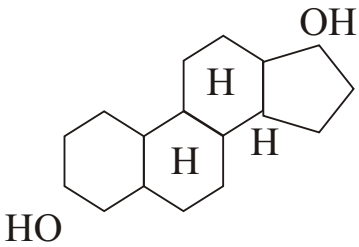

एस्ट्रोजन की आण्विक संरचना

सस्ती पानी की बोतलें पालीकार्बोनेट प्लास्टिक की बनी होती है। इनमें लम्बे समय तक पानी का संग्रहण करने पर BPA की कुछ मात्रा पानी या पेय पदार्थ में घुलती रहती है। टिन के फूड कंटेनर्स का अंदरूनी अस्तर एपोक्सी रेजिन का बना होता है। एक निश्चित अवधि के बाद इस परत से रसायन खाद्य पदार्थ में घुलने लगता है। चाय–कॉफी पीने के पेपर कप की प्लास्टिक कोटिंग में भी इसका उच्च स्तर होता है। कई वर्षों से BPA के सम्बन्ध में लगातार विवाद उठ रहे हैं। FDA ने अपनी नवीनतम 2014 की रिपोर्ट के आधार पर 50 ug/kg शरीर भार प्रतिदिन की मात्रा को सुरक्षित माना है। उद्योगों द्वारा सहायता प्राप्त शोध भी प्रतिदिन BPA की अल्प मात्रा के संपर्क को सुरक्षित बताते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में स्वतंत्र शोध के इससे उलट परिणाम है। 2.5 ug/kg की कम मात्रा भी शारीरिक क्रियाओं को प्रभावित कर सकती है। विवादों के बाद इसके स्थान पर बिसफिनॉल S और बिसफिनॉल F प्रयुक्त किए जाने लगे हैं। लेकिन इन पदार्थों की भी रासायनिक संरचना भी बिसफिनॉल से मिलती–जुलती ही है और ये भी शरीर में प्रविष्ट होकर वैसा ही व्यवहार करते हैं।

मानव शरीर पर दुष्प्रभाव– BPA पर समय–समय पर हुए अध्ययनों पर गौर करें तो बड़े डरावने परिणाम सामने आते हैं। यह भ्रूण, शिशुओं और छोटे बच्चों के मस्तिष्क और प्रोस्टेट ग्रंथि स्राव को प्रभावित करता है। शिशुओं को इसके संपर्क से अस्थमा होने की संभावना बढ़ जाती है। बच्चों में यह व्यवहार सम्बन्धी असामान्यता भी उत्पन्न कर सकता है। अनेक शोध उच्च रक्तचाप और BPA की मात्रा में भी सम्बन्ध दर्शाते हैं। एस्ट्रोजन के समान संरचना होने के कारण यह एस्ट्रोजन ग्रंथियों को बांध लेता है और शरीर की सामान्य प्रक्रियाओं को बाधित करता है। इसकी अल्प मात्रा भी वृद्धि, विकास, कोशिका मरम्मत, ऊर्जा स्तर और प्रजनन को प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा यह थायरॉइड ग्रंथि के कार्य को भी प्रभावित करता है।

रक्त में इसकी उपस्थिति महिलाओं में बार–बार गर्भपात, समय पूर्व प्रसव और कम अंड उत्पादन का कारण बनती है। महिलाओं में पालीसिस्टिक ओवेरी सिंड्रोम का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे ही पुरुषों में इसकी उपस्थिति शुक्राणुओं की गुणवत्ता और संख्या दोनों को प्रभावित करती है। यही नहीं BPA उत्पादन कम्पनियों में कार्य करने वाले पुरुषों तक में इस तरह की समस्याएँ हो रही हैं। महिलाएँ जो कार्य के दौरान BPA के संपर्क में आती है, कम वजन के शिशुओं को जन्म देती है। शिशुओं में जनन अंगों सम्बन्धी असामान्यता हो सकती है। ऐसे शिशु बड़े होने पर अति सक्रियता, अवसाद, भावनात्मक अस्थिरता और उग्र व्यवहार जैसी व्यवहारजन्य असामान्यताएँ दर्शाते हैं। दैनिक जीवन में इसके लगातार संपर्क से प्रोस्टेट और स्तन कैंसर की संभावनाएं बन सकती हैं।

कुछ अध्ययन बताते है कि रक्त में BPA का उच्च स्तर, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह का खतरा कई गुना बढ़ा देता है। यहाँ तक कि यह यकृत में हानिकारक एंजाइम स्तर को बढ़ा देता है।

नया BPA विवाद–एक शोध अध्ययन जो हाल ही में 5 दिसम्बर को 'द लांसेट डायबिटीज एण्ड एंडोक्राइनोलोजी' जर्नल में प्रकाशित हुआ है, उसमें बताया गया है कि अब तक रक्त में BPA की मात्रा जिस अप्रत्यक्ष तकनीक से निर्धारित की जाती रही है, उससे प्राप्त परिणाम सटीक नहीं थे। पुरानी तकनीक से रक्त में इसकी मात्रा बहुत कम आती थी जिसे स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित माना जाता था। इसके मापन की हाल ही में खोजी गयी तकनीक से प्राप्त परिणाम चौंकाने वाले थे। जब इस नवीन तकनीक का परीक्षण किया गया तो रक्त में BPA का स्तर मान्य स्तर से 44 गुना अधिक पाया गया। अब तक FDA इस रसायन से प्रतिदिन संपर्क की जिस मात्रा को सुरक्षित करार देता आया है, प्रतिदिन BPA संपर्क की वास्तविक मात्रा इससे कई गुना अधिक है।

अब तक इस रसायन की मानव मूत्र में उपस्थित मात्रा के आधार पर रक्त में इसकी मात्रा का निर्धारण किया जाता था। इससे प्राप्त परिणाम रक्त में इसकी बहुत कम मात्रा दर्शाते थे। इसके अतिरिक्त इस रसायन के विकल्प के तौर पर प्रयुक्त अन्य रसायनों की रक्त में मात्रा का भी इस अप्रत्यक्ष तरीके से सही निर्धारण नहीं हो रहा था। रॉय गेरोना जो यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में सहायक प्रोफेसर हैं, ने रक्त में BPA मापन की प्रत्यक्ष विधि विकसित की है, जो मानव शरीर में इसके उपापचयी पदार्थ की मात्रा का सटीक रूप से निर्धारण कर सकी है। ये उपापचयी पदार्थ शरीर में विभिन्न प्रक्रियाओं के फलस्वरूप बनते हैं, जब यह रसायन शरीर से गुजरता है। इस अध्ययन के परिणामों के बाद सभी प्रकार के केफिनॉल यौगिकों जो कॉस्मेटिक्स और साबुनों में डाले जाते हैं, जैसे पैराबीन्स, बेन्जोफीनॉस और ट्राइक्लोजन्स आदि का भी मानव शरीर में इसी प्रकार सटीक

Rajasthan Education Department

मापन होना चाहिए। इसके अलावा थैलेट्स जो प्लास्टिक के खिलौनों और अन्य उपभोक्ता प्लास्टिक वस्तुओं में पाए जाते हैं, के भी शरीर में सटीक मापन की आवश्यकता है।

दवाएँ भी नहीं सुरक्षित– प्लास्टिक वजन में हल्का होता है और परिवहन के समय टूट-फूट की समस्या नहीं रहती। इन दोनों कारणों की वजह से दवा उद्योग में प्लास्टिक की बोतलों का उपयोग किया जाने लगा है। दवा पैकिंग में PET बोतलों के उपयोग पर विवाद उठता रहा है। इस तरह का प्रस्ताव रखा गया है कि बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों की दवाओं को काँच की बोतल में रखा जाना चाहिए। मार्च 2015 से कुछ विशेष दवाओं की PET बोतलों में पैकिंग पर रोक लगा दी गई है। PET के स्थान पर HDPE प्लास्टिक को खाद्य और दवा संग्रहण के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता है।

व्यावहारिक सावधानियाँ– बाजार प्लास्टिक की आकर्षक वस्तुओं से भरे पड़े हैं। प्लास्टिक के खतरों से अवगत होते हुए भी हम अक्सर प्लास्टिक निर्मित सामग्री खरीद ही लाते हैं। प्लास्टिक का परित्याग मुश्किल है लेकिन प्लास्टिक का उपयोग सीमित किया जा सकता है। कैसा भी प्लास्टिक हो, पुराना होने पर और चरम वातावरण की परिस्थितियों में विषैले पदार्थ छोड़ता ही है। अतः उपयोग करते समय कुछ सावधानियाँ विशेष रूप से बरतनी चाहिए।

1. खाद्य पदार्थ, विशेष रूप से तरल खाद्य पदार्थ प्लास्टिक के बर्तनों में संग्रहित नहीं करने चाहिए।
2. गर्म खाद्य पदार्थ प्लास्टिक पात्रों में न भरे; ना ही प्लास्टिक पात्रों को माइक्रोवेव करें।
3. टूटे, पुराने और खरोंच लगे हुए प्लास्टिक पात्रों को उपयोग में न लें।
4. बच्चों व शिशुओं को प्लास्टिक की थैलियों के खिलौने न दें।
5. प्लास्टिक की थैलियों का पूर्णतः बहिष्कार करें।
6. अनावश्यक प्लास्टिक सामग्री खरीदने से बचें।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तालेड़ा, बूंदी (राज.)

सृजनशीलता

सृजनशील बालक

❑ रामजी लाल घोड़ेला

सृजनशीलता को कल्पना, चिन्तन, उत्पादन आदि की दृष्टि से देखा जाता है। स्टेगनर ने सृजनात्मकता के विषय में कहा है कि किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन सृजन कहलाता है। स्किनर के अनुसार सृजनात्मकता व चिन्तन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ या निष्कर्ष नवीन, मौलिक, अन्वेषणात्मक तथा असाधारण हो। इन परिभाषाओं का विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होगा कि किसी नई वस्तु की खोज इन परिभाषाओं का केन्द्रीय तत्व है। अतः हम कह सकते हैं कि सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है, जिसके द्वारा किसी नए विचार या नई वस्तु का निर्माण होता है। इन शब्दों के अन्दर व्यक्ति की वह योग्यता भी सम्मिलित है, जिसके द्वारा वह पूर्व प्राप्त ज्ञान का पुनर्गठन करता है।

पूर्व ज्ञान के पुनर्गठन के आधार पर सृजनात्मकता का उपयोग शिक्षा में किया जाता है। इसके लिए सृजनशील बालकों की पहचान आवश्यक है। ऐसे बालकों की पहचान के लिए हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. सृजनशील बालकों में मौलिकता एवं नवीनता का अद्भुत गुण होता है।
2. ऐसे बालक प्रत्येक बहुप्रचलित धारणा की नए सिरे से जाँच करने को उत्सुक रहते हैं।
3. इनका व्यक्तित्व जटिल होता है।
4. इनमें जिज्ञासा की मात्रा अधिक होती है। इसी कारण ये हर कार्य और प्रश्न का पूर्ण उत्तर चाहते हैं।
5. इनमें सामान्य बात पर भी ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति होती है। सामान्य बालक इन सामान्य बातों की अवहेलना कर देते हैं, किन्तु सृजनशील बालक इन बातों पर भी पूरा ध्यान देते हैं।
6. सृजनशील बालकों में साहस की अतिरिक्त मात्रा होती है। इस कारण वे जटिल के कार्यों में हाथ डाल लेते हैं।
7. संवेदनशीलता के कारण ये प्रत्येक कार्य को गंभीरता से लेते हैं।
8. ये कार्यों में व्यावहारिक, परिश्रमी एवं लगनशील होते हैं।

आज हम कक्षाओं में सभी विद्यार्थियों को एक ही दृष्टि से देखते हैं। इससे बालकों की सृजनात्मक शक्ति कालान्तर में समाप्त हो जाती है। बालकों की सृजनशीलता को उचित प्रशिक्षण, शिक्षा व अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने चाहिए। शिक्षक और अभिभावक चाहे तो सृजनात्मक योग्यता के लिए उचित प्रेरणा, अनुकूल परिस्थितियाँ और बालकों की इच्छानुकूल अध्ययन का वातावरण बना सकते हैं–

1. बालक को समस्या की पहचान व समाधान के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. 'यह रचना मेरी है' 'मैंने इसे हल किया है' जैसी भावना से बच्चों को अत्यधिक संतुष्टि प्राप्त होती है। वे वस्तुतः इस भावना से सृजनात्मक कार्यों की ओर बढ़ते हैं। बालकों को कुछ करने व सोचने के अवसर दिए जाने चाहिए।
3. बालकों में विद्यमान मौलिकता को प्रोत्साहन देने से नहीं चूकना चाहिए। तथ्यों का अंधानुकरण, दूसरों को अनुभवों की नकल, रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना चाहिए।
4. बालकों में व्याप्त भय और झिझक की भावना को दूर करना चाहिए।
5. बालकों की जिज्ञासा को दबाना नहीं चाहिए। इनकी जिज्ञासा शान्त करने के लिए हमें विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं, सामाजिक उत्सवों, धार्मिक व सामाजिक मेलों, प्रदर्शनियों और प्रदर्शनों का लाभ उठाना चाहिए। नियमित कक्षा-कार्यों को भी इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है, ताकि विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति बढ़ सके।
6. विद्यार्थियों को कलाकेन्द्रों, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक केन्द्रों का भ्रमण करवाना चाहिए। कलाकारों, वैज्ञानिकों और अन्य सृजनशील व्यक्तियों से मिलवाना चाहिए।

इन उपायों से विद्यार्थियों में निश्चित रूप से रचनात्मकता सृजनशीलता बढ़ेगी, उनमें मौलिकता अंकुरित होगी।

प्रधानाचार्य
C/o राज क्लॉथ स्टोर, लूणकरणसर, बीकानेर
राजस्थान-334603
मो: 6350087987

Rajasthan Education Department

शैक्षिक नवाचार

नो बैग डे

❐ रोहताश

नो बैग डे केवल एक शीर्षक या वाक्य ही नहीं है बल्कि यह विद्यार्थियों में पढ़ाई के तनाव और बस्ते के भार के विरुद्ध एक उद्घोष है। नो बैग डे समुदाय के साथ जुड़ने और समुदाय के प्रति पारस्परिक संबंधों को मजबूत करने की एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा के रूप में मील का पत्थर साबित होगा। माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने अपने वर्तमान कार्यकाल का दूसरा बजट पेश करते हुए सभी सरकारी स्कूलों में शनिवार को नो बैग डे के रूप में मनाने की घोषणा की, ताकि कुछ हद तक विद्यार्थियों का तनाव कम किया जा सके, लेकिन कोरोना काल की विपरीत परिस्थितियों के कारण और लॉकडाउन के चलते विद्यालयों को बंद करना पड़ा, इसलिए नो बैग डे की अवधारणा को लागू नहीं किया जा सका। अब परिस्थितियाँ अनुकूल होने पर इसके तात्कालिक और दूरगामी प्रभाव का अध्ययन संभव हो सकेगा। नो बैग डे माननीय मुख्यमंत्री महोदय के सात संकल्पों का एक अंग है। नो बैग डे के दिन किताबी या औपचारिक पढ़ाई नहीं होगी बल्कि इस दिन अनौपचारिक रूप से विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। इस दिन अध्यापक अभिभावक मीटिंग, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, स्काउट, एनएसएस, जीवन मूल्य, बाल सभाएं व अन्य सामुदायिक एवं संप्रेषणात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। इन गतिविधियों का आयोजन बदल-बदल कर किया जाएगा ताकि नो बैग डे भी उबाऊ विषय बनकर नहीं रहे।

सर्वप्रथम मानवतावादी दार्शनिक इवान इलिच ने अपनी पुस्तक डी स्कूलिंग सोसाइटी में संस्थागत शिक्षा द्वारा मानव के शोषण होने का विचार दिया। इलिच वास्तव में मानव जीवन के संस्थानीकरण के विरुद्ध थे। उनके अनुसार संस्थानीकरण मानव की उन्नति में बाधक है। इसलिए उन्होंने विद्यालय विहीन समाज का विचार दिया। इलिच का यह विचार सत्य है, लेकिन भारतीय परिस्थितियों में व्यावहारिक नहीं है।

नो बैग डे अवधारणा में विद्यालय, शिक्षक, विद्यार्थियों और अभिभावकों की पारस्परिक अन्यान्य क्रियाएँ करने वाला एक जीवंत समुदाय का निर्माण होगा, जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगी सिद्ध होगा। आधुनिक समय में परंपरागत शिक्षा की अपेक्षा वर्तमान शिक्षा का स्वरूप बहुत व्यापक हो गया है। अब विद्यार्थी केवल ज्ञान का संग्रह करने की वस्तु नहीं रह गया है, वरन आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप अधिक क्षेत्रों में निपुणता के साथ प्रत्येक परिस्थिति में समायोजन करने वाला विद्यार्थी बन गया है। नो बैग डे की शुरूआत से यह उद्देश्य कितना पूरा होगा यह तो भविष्य की बात है, लेकिन नो बैग डे के दिन सह शैक्षिक और शिक्षेतर गतिविधियों का सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों में अवश्य परिलक्षित होगा। कक्षा कक्ष शिक्षण में पाठ्यक्रम की जटिलता और गृहकार्य के बोझ तले दबकर विद्यार्थी तनावग्रस्त हो जाते हैं। शिक्षा एक स्वाभाविक प्रक्रिया होती है, लेकिन वर्तमान में कक्षा प्राप्तांकों के प्रतिशत के आँकड़ों के आधार पर विद्यार्थियों का आंकलन किया जाता है, जिससे शिक्षा एक प्रतियोगिता परीक्षा जैसी बन गई है और विद्यार्थी एक दूसरे से प्रतियोगिता करते हुए विद्यालयी परिस्थितियों से समायोजन नहीं कर पाते हैं। इन पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेकर विद्यार्थी को अपनी रुचि के अनुसार क्षेत्र में विशेष पहचान बनाने का अवसर मिलेगा। अतः नो बैग डे के दिन विद्यार्थी को उचित वातावरण और सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए, जिससे विद्यार्थी को अपनी प्रतिभा संवारने और विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता का विकास होगा।

विद्यार्थियों में सतर्कता, संवेदनशीलता, विवेक और धैर्य उत्पन्न करने वाली तथा शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करने वाली गतिविधियाँ करानी चाहिए। इन छोटे-छोटे अनुभवों से सीख कर आए विद्यार्थी एक दिन देश का भविष्य निर्धारित करते हैं। नो बैग डे के दिन पुस्तकीय ज्ञान बंद है लेकिन ज्ञान के अन्य सारे दरवाजे खुले रहते हैं। अतः विद्यार्थियों को कोई भी गतिविधियाँ करवाने से पहले उनके उद्देश्यों, नियमों, टीम भावना आदि के बारे में विस्तृत रूप से मौखिक बताना चाहिए कि अमुक गतिविधियों से हम क्या सीख सकते हैं। विद्यार्थी जीवन पर्यंत सीखता रहता है इसलिए नो बैग डे के दिन भी अनिवार्य रूप से अनौपचारिक रूप से शिक्षा मिलेगी। ये सभी गतिविधियाँ टाइम टेबल बनाकर करानी चाहिए और भविष्य में नीति निर्माण हेतु इनका रिकॉर्ड संधारित करना चाहिए। नो बैग डे के दिन करवाने वाली संभावित गतिविधियाँ निम्नलिखित प्रकार से है-

1. नामांकन अधिक होने पर पूरे विद्यालय को बाँट कर सदन वार साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता करवाना।
2. आयु वर्ग के अनुसार विद्यार्थियों के ग्रुप बनाकर गतिविधियाँ आयोजित करवाना।
3. कक्षा स्तर के अनुसार सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियाँ करवाना।
4. शारीरिक व्यायाम और योगाभ्यास करवाना।
5. श्रमदान, वृक्षारोपण विद्यालय परिसर की साफ-सफाई आदि कार्य करवाना।
6. अंत्याक्षरी, पहेलियाँ आदि का आयोजन करवाना।
7. शैक्षिक भ्रमण का आयोजन करवाना।
8. बैंक में खाता खुलवाना, बीमा करवाना आदि की जानकारी देना।
9. राज्य और केन्द्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देना।
10. विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों की जानकारी देना।
11. प्रतियोगिता परीक्षा और कॅरियर संबंधी जानकारी देना।
12. विद्यार्थियों का संकोच दूर करने के लिए स्थानीय खेलों का आयोजन किया जा सकता है।

इस प्रकार की गतिविधियों से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन, ईमानदारी, नैतिकता आदि गुणों का विकास होगा। अतः हम यह कह सकते हैं कि नो बैग डे अभी छोटी सी शुरूआत है, लेकिन आने वाले समय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की सीढ़ी बनेगी।

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर (राज.)
मो: 9828474829

Rajasthan Education Department

राज-काज

कार्मिक द्वारा अर्जित योग्यता अभिवृद्धि एवं उसका अंकन

❒ मनीष कुमार गहलोत

राजकीय सेवा में आने के लिए किसी भी व्यक्ति को निर्धारित पद के लिए आवश्यक योग्यता एवं अन्य अनिवार्य पात्रता की शर्त पूरी करने के उपरांत निर्धारित चयन प्रक्रिया से गुजरना होता है। किसी भी पद पर चयन हेतु निर्धारित योग्यता प्रमुख शर्त होती है। संबंधित नियंत्रण अधिकारी एवं समस्त चयनित राजकीय सेवकों का प्रमुख दायित्व है कि कार्मिक की राजकीय सेवा में आने से पूर्व अर्जित योग्यता का अंकन सेवा पुस्तिका में पूर्ण विवरण के साथ अवश्य कराए तथा सेवा में आने के बाद उसके द्वारा यदि कोई शैक्षिक या प्रशैक्षिक योग्यता अर्जित की जाती है तो लोकसेवकों से अपेक्षा की जाती है कि वह विभाग से संबंधित परीक्षा की अनुमति प्राप्त करने के उपरांत अर्जित योग्यता का संबंधित विभागीय अभिलेखों में अंकन करवाने हेतु परीक्षा परिणाम के बाद तत्काल आवेदन करें।

अर्जित योग्यता का अंकन समय पर नहीं करवाने से कई बार कार्मिक को पदोन्नति आदि मामलों में खामियाजा भुगतना पड़ता है। कार्मिक द्वारा प्रोबेशन काल पूर्ण करने के बाद विभाग द्वारा वरिष्ठता सूची का निर्माण किया जाता है। प्रकाशित अस्थाई वरिष्ठता सूची को कार्मिक भली भाँति जाँच लेवे, उससे संबंधित सूचना विशेषकर योग्यता का अंकन सही है या नहीं। यदि कोई गलती है तो स्थाई सूची प्रकाशन पूर्व संबंधित कार्यालय को आवेदन मय दस्तावेज के साथ अपनी आपत्ति दर्ज कराए क्योंकि भविष्य में प्रस्तावित डीपीसी का मुख्य आधार वरिष्ठता सूची एवं उसमें दर्ज सूचना ही है।

द्वितीय श्रेणी कार्मिक– राजकीय सेवा में आने के बाद किसी भी द्वितीय श्रेणी कार्मिक द्वारा यदि योग्यता का अर्जन किया जाता है तो कार्मिक द्वारा निर्धारित आवेदन मय दस्तावेजों के साथ तत्काल अपने संस्थाप्रधान/नियंत्रण अधिकारी से आवेदन अग्रेषित करवाकर संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना चाहिए। सीबीईओ कार्यालय द्वारा प्रथम चरण का परीक्षण कर अपनी अनुशंसा के साथ नियमित समय में कार्यालय संभागीय संयुक्त निदेशक को प्रेषित करना चाहिए। कार्यालय संभाग संयुक्त निदेशक द्वारा परीक्षण उपरांत मण्डल स्तर का आदेश प्रसारित किया जाता है तथा उक्त आदेश की एक प्रति निदेशालय माध्यमिक शिक्षा को प्रेषित की जाती है। निदेशालय द्वारा परीक्षण उपरांत राज्य स्तरीय आदेश प्रसारित करते हुए राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में इसका अंकन किया जाता है। प्रार्थी/नियंत्रण अधिकारी को राज्य स्तरीय आदेश की प्रति विभागीय वेबसाइट से प्राप्त कर आगे की कार्यवाही करनी चाहिए। लिंक :-

https ://education.rajasthan.gov.in/content/raj/education/secondary-education/en/order/seniority/senior_tec PTI_ orders.html

कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा के आदेश दिनांक 23.11.2021 के तहत द्वितीय श्रेणी कार्मिकों को प्रकाशित वरिष्ठता सूची में (06) छः माह पूर्व अर्जित योग्यता अभिवृद्धि का अंकन करवाने का एक विशेष अवसर प्रदान किया गया है। द्वितीय श्रेणी कार्मिम छः माह पूर्व अर्जित योग्यता का अंकन 20 मार्च 2022 तक करवा सकते हैं।

प्रथम श्रेणी/व्याख्याता एवं समकक्षः राजकीय सेवा में आने के बाद किसी भी प्रथम श्रेणी/व्याख्याता एवं समकक्ष कार्मिक द्वारा यदि योग्यता का अर्जन किया जाता है तो कार्मिक द्वारा निर्धारित आवेदन मय दस्तावेजों के साथ तत्काल अपने संस्थाप्रधान/ नियंत्रण अधिकारी से अग्रेषित करवाकर कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना चाहिए। सीबीईओ कार्यालय द्वारा प्रथम चरण का परीक्षण कर अपनी अनुशंसा के साथ नियमित समय में कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा को प्रेषित करना चाहिए। निदेशालय की संस्थापन शाखा द्वारा परीक्षण उपरांत प्रकरण वरिष्ठता अनुभाग को प्रेषित किया जाता है। निदेशालय के वरिष्ठता अनुभाग द्वारा परीक्षण उपरांत राज्य स्तरीय आदेश प्रसारित करते हुए राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में इसका अंकन किया जाता है। प्रार्थी/नियंत्रण अधिकारी को राज्य स्तरीय आदेश की प्रति विभागीय वेबसाइट से प्राप्त कर आगे की कार्यवाही करनी चाहिए। लिंकः-

https://education.rajasthan.gov.in/content/raj/education/secondary-education/en/order/Seniority/Senior_Lec_orders.html

प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य एवं समकक्षः राजकीय सेवा में आने के बाद किसी प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य एवं समकक्ष अधिकारियों द्वारा यदि कोई शैक्षिक या प्रशैक्षिक योग्यता का अर्जन किया जाता है तो संबंधित अधिकारी द्वारा निर्धारित आवेदन मय दस्तावेजों के साथ तत्काल सीबीईओ/नियंत्रण अधिकारी से अग्रेषित करवाकर अपना आवेदन कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा को प्रेषित करना चाहिए। निदेशालय की संस्थापन शाखा द्वारा परीक्षण उपरांत प्रकरण वरिष्ठता अनुभाग को प्रेषित किया जाता है। वरिष्ठता अनुभाग द्वारा राज्य स्तरीय आदेश प्रसारित करते हुए राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूची में इसका अंकन किया जाता है। प्रार्थी/नियंत्रण अधिकारी को राज्य स्तरीय आदेश की प्रति विभागीय वेबसाइट से प्राप्त कर आगे की कार्यवाही करनी चाहिए। लिंकः-

https://education.rajasthan.gov.in/content/raj/education/secondary-education/en/order/senior/senior HM_ order. html

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मोः 9460790500

Rajasthan Education Department

स्वाध्याय

उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु का आधार

❐ सीताराम गुप्ता

तैत्तिरीय उपनिषद् में एक दीक्षांत संदेश मिलता है जिसमें विद्या पूर्ण करके जाने वाले स्नातकों को कुछ उपदेश दिए गए हैं जैसे सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः अर्थात सत्य बोलिए, धर्म का पालन कीजिए व स्वाध्याय से मुँह न मोड़िए और भी अनेक नीति की बातों का पालन करने का परामर्श दिया गया है। स्वाध्याय के विषय में पुनः जोर देकर कहा गया है- 'स्वाध्यायाप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम। स्वाध्याय और प्रवचनों में प्रमाद अथवा असावधानी नहीं होनी चाहिए। स्वाध्याय के साथ-साथ प्रवचन पर भी बल दिया गया है। स्वाध्याय के द्वारा अपने ज्ञान में वृद्धि करते रहिए और विद्या का प्रचार-प्रसार भी। योग में भी स्वाध्याय की चर्चा की गई है। योग के आठ अंग हैं : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इन आठ अंगों में दूसरा अंग है नियम। नियम में पाँच व्रतों के पालन की बात की गई है : शौच, संतोष, तपस, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान। स्वाध्याय योग का भी एक उपांग है। इससे स्वाध्याय के महत्त्व का पता चलता है।

हम जो स्वयं सीखकर औरों को जो बताते या सिखाते हैं वह प्रवचन है फिर स्वाध्याय क्या है? यदि हम किसी भी स्तर की शिक्षा किसी आश्रम अथवा विद्यालय या विश्वविद्यालय से प्राप्त करते हैं तो इस प्रक्रिया में कुछ उपयोगी ज्ञान व कुशलताओं को सीखते हैं लेकिन ज्ञान व कुशलताओं की कोई सीमा नहीं होती। न सीखने की ही कोई सीमा होती है। जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए भी हमें निरंतर सीखने अथवा नया ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। जो जरूरी ज्ञान अथवा जानकारी हम औपचारिक शिक्षा अथवा डिग्री के माध्यम से नहीं प्राप्त कर पाते उसे पाने का तरीका है स्वाध्याय। जहाँ पठन-पाठन अथवा शिक्षा-दीक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं होती वहाँ जिज्ञासु जन स्वाध्याय के द्वारा ही अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं। हम विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त स्वयं जो कुछ भी पढ़ते हैं वह स्वाध्याय ही है।

यदि स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ देखें तो पहले स्वाध्याय का अर्थ था वेदों का अध्ययन एवं अनुशीलन। उसके बाद हर प्रकार के धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन अथवा पठन-पाठन को स्वाध्याय कहा जाने लगा लेकिन आजकल हर प्रकार के साहित्य के अध्ययन एवं अनुशीलन को स्वाध्याय कहा जाता है। आम बोलचाल की भाषा में वह ज्ञान या जानकारी चाहे वो आध्यात्मिक हो या धार्मिक अथवा साहित्यिक, सांस्कृतिक हो या सामाजिक जिसे हम बिना किसी की मदद के स्वयं अध्ययन द्वारा अर्जित करते हैं स्वाध्याय कहलाती है। स्वाध्याय स्वयं का अध्ययन अथवा आत्मज्ञान नहीं है। फ्रांसिस बेकन ने भी कहा है: अध्ययन उल्लास का, अलंकार का, योग्यता का कारण बनता है। Studies serve for delight, for ornament and for ability, यहाँ उल्लास, अलंकार व योग्यता की बात की गई है आत्मज्ञान की नहीं। फ्रांसिस बेकन यदि आत्मज्ञान की बात करते तो Studies की बजाय Self Realization लिखते।

स्वाध्याय अथवा मात्र पढ़ना भी यूँ ही नहीं हो जाता। स्वाध्याय के लिए एक मूल योग्यता अनिवार्य है और वो है अक्षर ज्ञान अथवा साक्षरता। जो व्यक्ति पढ़-लिख नहीं सकता, वह स्वाध्याय भी नहीं कर सकता। लेकिन हमारे यहाँ अनेक लोग हुए हैं जो निरक्षर थे लेकिन ज्ञान के मामले में उनका कोई सानी नहीं हुआ। कबीर का उदाहरण हमारे समक्ष है। कबीर ने सत्संग के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति की। सत्संग भी स्वाध्याय का पूरक ही है। ज्ञानवान लोगों की संगत में भी हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि आज हम सत्संगों का जो स्वरूप देख रहे हैं उससे सत्संग की पूर्णतः नकारात्मक छवि हमारे सामने आती है। आज के दौर में गुणवान व ज्ञानवान लोगों की संगति ही वास्तविक सत्संग कही जा सकती है। सत्संग का माध्यम श्रवण है तो स्वाध्याय का माध्यम है पुस्तकें।

हमारे यहाँ साधन को साध्य मान लेने की भूल प्रायः होती है। मार्ग को गंतव्य मान लेते हैं। स्वाध्याय को भी आत्मज्ञान मान लिया जाता है या आत्मज्ञान को स्वाध्याय कहने लग जाते हैं। वास्तविकता ये है कि स्वाध्याय आत्मज्ञान नहीं है। हाँ, स्वाध्याय द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति में सहायता मिलती है। आत्मज्ञान क्या है और हम आत्मज्ञान क्यों प्राप्त करें? ये भी शिक्षा अथवा स्वाध्याय या सत्संग से पता चलता है इसीलिए ये महत्त्वपूर्ण हैं। हम जिन यंत्रों की सहायता से कार्य करते हैं उनको भी महत्त्व देते हैं और उनकी पूजा करते हैं क्योंकि स्वाध्याय भी आत्मज्ञान का महत्त्वपूर्ण साधन है अतः उसे भी हम उसके समकक्ष ही मान लेते हैं। यदि आप स्वाध्याय को आत्मज्ञान (Self realization) मानते हैं तो एक बात बतलाइए कि इसकी प्रेरणा आपको कैसे मिली? वास्तव में आत्मोकर्ष, आत्मशुद्धि अथवा आत्मोत्थान साधना का विषय है। स्वाध्याय एक सूत्र है जो हमें साधना अथवा आत्मज्ञान अथवा आत्मोत्थान की ओर प्रेरित कर सकता है। उसके लिए भी हमें मन को साधना होता है।

हममें से कुछ लोग बहुत अधिक पढ़ते-लिखते अथवा स्वाध्याय करते रहते हैं। दुनिया के सारे ग्रंथों व ज्ञान को आत्मसात कर लेना चाहते हैं। इसका हम पर प्रभाव भी पड़ता है। लेकिन खूब पढ़ने-लिखने अथवा स्वाध्याय के बावजूद यदि हम आत्मज्ञान अथवा आत्मोत्थान की ओर अग्रसर नहीं हो सकते तो सारा स्वाध्याय निरर्थक है। वैसे आत्मज्ञान (Self realization) नामक चिड़िया कम ही दिखलाई पड़ती है। अतः इसकी मनमानी व्याख्या संभव है। ये स्वाध्याय ही है जिसके कारण हम कुछ ज्ञान या जानकारी प्राप्त कर पाते हैं व कुछ व्यवहार कुशल बनते हैं जिससे हमारी आजीविका भी चलती है व समाज में सामंजस्य भी बना रहता है।

अब आत्मज्ञान को छोड़िए स्वाध्याय के बावजूद यदि हम श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण नहीं कर पाते तो हमारे पढ़ने-लिखने अथवा स्वाध्याय में कुछ न कुछ खोट है। स्वाध्याय से हममें विवेक उत्पन्न होना चाहिए लेकिन उससे पहले यह विवेक अनिवार्य है कि हम क्या पढ़ें? किन ग्रंथों का कितना अध्ययन करें। हम प्रायः अपने को किसी एक विषय अथवा मत तक सीमित कर लेते हैं जो हमारे विकास में सबसे बड़ा बाधक होता है। हमें विभिन्न विषयों व विविध मतों का अध्ययन करना चाहिए तभी हम वास्तविक अथवा मूल तत्त्व को जानकर लाभान्वित हो सकते हैं। कुछ लोग सारे जीवन पढ़ते रहते हैं लेकिन मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की वाली हालत रहती है। यदि हमें सही-सही पता लग जाए कि हमें क्या पढ़ना चाहिए और क्या नहीं तो पढ़ने की जरूरत ही न रहे। लेकिन जब तक हम इतने ज्ञानवान अथवा प्रबुद्ध नहीं हो जाते पुस्तकों का ही आसरा है। अच्छी पुस्तकों की खोज और उनका पठन-पाठन जारी रखिए।

स्वाध्याय करने के लिए भी किसी माध्यम की आवश्यकता होती है और वो माध्यम है ग्रंथ अथवा पुस्तकें। पुस्तकों का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है इसमें संदेह नहीं लेकिन आज लोगों में पढ़ने की आदत कम होती जा रही है अतः पुस्तकें साथ रखने का सवाल ही पैदा नहीं होता। अब तो जिधर देखो लोग कान में प्लग या हैंड्सफ्री सेट लगाए मोबाइल से बातें कर रहे होते हैं या संगीत सुन रहे होते हैं। तकनीक बदलने से साधन या माध्यम बदल जाते हैं लेकिन पुस्तक का स्थान कोई साधन नहीं ले सकता। पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी मित्र होती है जिनके रहते

Rajasthan Education Department

कभी अकेलेपन का अहसास नहीं हो सकता। मित्र हमसे विवाद कर सकते हैं, हमारा विरोध कर सकते हैं, हमारी प्रशंसा अथवा चापलूसी कर सकते हैं लेकिन एक पुस्तक कभी ऐसा नहीं करती अतः उसके साथ निर्वाह करना सरल है।

जब तक किसी बीमारी का सही निदान नहीं हो जाता तब तक उसका उपचार भी संभव नहीं होता। पुस्तकें भी न केवल हमारा निदान करने में सहायक होती है अपितु उपचार करने में भी सक्षम होती है। साहित्य हमारे अंदर समाज को समझने की योग्यता उत्पन्न कर हमें अधिकाधिक संवेदनशील बनाने में सहायक होता है। व्यक्तित्व विकास अथवा आत्म विकास विषयक पुस्तकें हमारे मनोभावों का परिष्कार कर भावनात्मक संतुलन उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। ज्ञान-विज्ञान तथा दुनिया भर की दूसरी जानकारी तो पुस्तकों से बोनस के रूप में मिल ही जाती है। एक अच्छा यात्रा वृत्तांत हमें घर बैठे पूरी दुनिया की सैर करवाने में सक्षम होता है। एक अच्छी पुस्तक का हमारा दृष्टिकोण जीवन खुशहाल बना देने में समर्थ होती है।

पुस्तकों को हमारे स्वास्थ्य से भी सीधा संबंध है। पठन-पाठन और चिंतन-मनन के दौरान हमारी एकाग्रता का विकास होता है जिसका हमारे भौतिक शरीर पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस दौरान शरीर में अंतःस्रावी ग्रंथियों से ऐसे हार्मोंस निकलते हैं जो हमारे शरीर को न केवल आराम पहुँचाते हैं अपितु हमारी रोगों से लड़ने की शक्ति को भी बढ़ाते हैं। दूसरे फीलगुड हार्मोंस के कारण शरीर अच्छा अनुभव करता है और चुस्ती स्फूर्ति बनी रहती है। नींद अच्छी आती है। कहने का तात्पर्य ये है कि पुस्तकों से हमारी न केवल बाह्य जगत की जानकारी में वृद्धि होती है अपितु पठन-पाठन से आत्मिक विकास व रोगमुक्ति में भी सहायता मिलती है।

पिछले दिनों येल विश्वविद्यालय में हुए एक शोध के अनुसार औसतन आधा घंटा पुस्तकें पढ़ने वाले व्यक्ति पुस्तकें बिल्कुल न पढ़ने वाले व्यक्तियों की तुलना में दो वर्ष तक अधिक जीते हैं। इस तरह से पुस्तक पढ़ने की आदत व्यक्ति को दीर्घायु भी बनाती है। वास्तव में पुस्तकों से मिले ज्ञान व आत्मविकास में वृद्धि से व्यक्ति की विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की योग्यता, क्षमता व कुशलता में वृद्धि होती है। जिससे उसके जीवन में संतुष्टि बनी रहती है। इन सब बातों से उसे प्रसन्नता मिलती है और प्रसन्नता से अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु। नियमित रूप से अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत डालिए और जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ तनाव व दुश्चिंताओं से मुक्त होकर अच्छा स्वास्थ्य व दीर्घायु भी पाइए।

ए.डी.- 106 सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034
मो: 09555622323

चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा

❐ **सत्यनारायण व्यास**

विद्यालय बालक का दूसरा परिवार होता है, बालक जो कुछ भी सीखता है प्रथमतः अपने घर परिवार पर ही सीखता है, दूसरा अपने द्वितीय परिवार विद्यालय में सीखता है। अच्छा बालक ही आगे चलकर अच्छा नागरिक बनता है, अच्छे नागरिक में उसके चरित्र निर्माण, उसमें प्राप्त नैतिक शिक्षा इन्हीं दो परिवारों से मिलती है।

विभिन्न विद्वानों ने अपना-अपना मत दिया हुआ है, इन सबका यही निष्कर्ष है कि अच्छा नागरिक बनने के लिए नैतिक शिक्षा होनी ही चाहिए जिससे उसका चरित्र निर्माण सुदृढ़ता से हो सके। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक शिक्षा का अभाव काफी हद तक देखा गया है, केवल आधुनिक शिक्षा प्रणाली (किताबी ज्ञान) पर बहुधा जोर दिया जा रहा है। बहुधा ऐसी शिक्षा केवल ऊपरी आवरण बन कर ही रह गई है। जिससे न तो बुद्धि का सच्चा विकास हो पाता है, न ही चरित्र का निर्माण। आज वास्तव में मानव को चाँद पर पहुँचने की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि बालक के चरित्र निर्माण के लिए नैतिक शिक्षा की इसके लिए राष्ट्रव्यापी प्रयत्न की आवश्यकता है।

चरित्र का विकास (निर्माण) मात्र केवल नैतिक शिक्षा से ही संभव नहीं है। नैतिक शिक्षा को केवल आज अहिंसा, सत्य, औपचारिकता की भाषा तक सीमित न रखकर उसे अनुशासन, विनम्र और कर्म की भाषा बनाना होगा। नैतिक शिक्षा को जीवन में उतारने का साधन भी होना चाहिए और व्यावहारिक भाषा में ढालना भी।

बालक आसपास का वातावरण देखकर जल्दी सीखता है यदि वातावरण में दूषिता, अनैतिकता फैली हुई है तो वही सीखेगा। मानव जीव की प्रवृत्ति है कि वह कमियों का शीघ्र अनुसरण करता है और हम उस आदत को व्यक्ति का स्वाभाविक गुण मान बैठते हैं। हालात ऐसे ही रहे तो कोई नई बात नहीं कि बड़ों की अवज्ञा करना, चोरी करना, झूठ बोलना, गुरुजनों का अनादर करना जैसे कृत्य तो अवगुणों की परिभाषा से बाहर ही निकल जाएंगे और इसको प्राकृतिक स्वभाव मानकर गिना जाने लगेगा। मैं यह मानता हूँ कि यदि ऐसा होता है तो इसमें नैतिक शिक्षा का अभाव ही जिम्मेदार है। हम यह भी कह सकते हैं कि नैतिक शिक्षा वह है जिससे बालक और बुजुर्ग व गुरुजन भी बुराई में से भी अच्छाई को ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं नैतिक शिक्षा तथा विनय का कवच धारण करके हर मोर्चे पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। आज हम देखते हैं कि शिक्षकगण बालक की अनुशासनहीनता पर बहुत परेशान है। हालांकि बालक के चरित्र निर्माण में पैतृक परम्परा, माता-पिता का आचरण, गुरुजनों की शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान रहता है। प्रत्येक बालक प्रारंभिक पाठशाला के अध्यापक की बातों को ही अधिक महत्त्व तो देता ही है। वही शिक्षा ग्रहण करता है जो गुरु दिखाता है, सिखाता है। वही वह अपने जेहन में बैठा लेता है।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य की स्थिति को देखते हुए बालक के चरित्र निर्माण संबंधी बालकों की नैतिक शिक्षा का अध्ययन प्रारंभ करवाना अति आवश्यक हो गया है जिससे बालक के चरित्र निर्माण की नींव ही मजबूती पकड़ ले।

जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी के ढेर को लेकर चाक पर चढ़ाने के बाद जैसा स्वरूप देना चाहे वैसा दे देता है ठीक उसी प्रकार प्राथमिक विद्यालयों से ही नैतिक शिक्षा आरंभ करना अनिवार्य है, ताकि बालक का चरित्र नींव से ही मजबूत हो जाए।

वरिष्ठ सहायक (बजट अनुभाग)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर
मो. 9413481336

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

Rajasthan Education Department

गुणवत्तापूर्ण शिक्षण

शिक्षक की भूमिका

❒ विद्या शंकर पाठक

शिक्षक का 'शि' सुख, शांति व सौभाग्य का प्रतीक है। 'क्ष' अवसर, मौका, पल, क्षण का प्रतीक है। शिक्षक में 'अक्'- अर्थ का प्रतीक है- इस प्रकार शिक्षक अपने ज्ञान, विवेक से सुख, शांति व सौभाग्य का प्रदाता है। अध्ययन-अध्यापन सतत प्रक्रिया है। क्षण-क्षण, प्रतिपल का उपयोग कर सुअवसर अर्थात मौके का सदुपयोग कर विद्या मंदिर में आए हुए नव मासूम कलियों को पुष्पित पल्लवित करने का काम व प्रतिभा तराशने की महत्ती भूमिका का निर्वहन शिक्षक नैष्ठिक रूप से करता है।

शिक्षा अविरल जाह्नवी की अजस्र धारा है, जिसमें शिक्षक अपने नवाचार व अभिनव प्रयोगों द्वारा अद्भुत कौशल, टेलेंसी, ज्ञान, प्रत्युत्पन्नमति से विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की धारा में अहर्निश प्रवाहित होता रहता है, अर्थात संलग्न रहता है।

शिक्षक व सड़क दोनों की स्थिति एक सी होती है, सड़क राही को मंजिल तक, शिक्षक शिक्षार्थी को मंजिल तक पहुँचा देते है और वो वहीं के वहीं रहते हैं। शिक्षक उत्प्रेरक की महत्ती भूमिका का निर्वहन करता है। रवि रश्मि सी आभा विकिरण करने का काम शिक्षक करता है। शिक्षा जिससे ज्ञान, विवेक, तप, साधना व अनुष्ठान है, जिससे मानव सच्चा इंसान बनता है। जीवन मूल्यों के संधारण में शिक्षक ही महत्ती भूमिका का निर्वहन करता है, पाथेय प्रदाता शिक्षक ही होता है। शिक्षक ही बालक को तालीम व तहज़ीब देता है, वही राष्ट्र निर्माता है। मेरे भगवान मेरे बालको में है। बालक ही विद्या मंदिर का भगवान है, शिक्षक अपने ज्ञान सलिल से उसके मन मस्तिष्क को प्रक्षालित करता है अर्थात् अभिषेक करता है। अनन्तर मंदिर में आए हुए नव मासूम कलियों को पुष्पित पल्लवित करने का काम बड़ी आत्मीयता, निष्ठा, श्रद्धा से करता है, वही विद्यार्थी के जीवन में ज्ञान दीप प्रज्वलित कर आलोक भरता है।

शिक्षक और पिता की भूमिका समतुल्य है, यह दोनों ही समानान्तर चलते हैं, बालक के निर्माण में मातृ देव के अनन्तर, पितृ देव व गुरुदेव की भूमिका श्रेष्ठतम रहती है, गुरु ही अज्ञानता रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर उत्प्रेरित करता है, तमसो मा ज्योतिर्गमय। विद्यार्थी रुपी मीनार को तैयार करने में लगभग 25 वर्ष लग जाते हैं, इनको अपना प्रतिफल दीर्घ अवधि के बाद मिलता है। अनाम, अगोचर परिणाम की उपलब्धि। एक कृषक खेत में अपने अथक श्रम जल से खेती करता है, उसका प्रतिफल उसे मौसमी फसल के रूप में 6 महीनों में मिलता है, हालांकि यह सब सुवृष्टी व अनुकूलता पर निर्भर है। कभी कभी अतिवृष्टि, अनावृष्टि के कारण मनोनुकूल प्रतिफल नहीं भी मिलता है। प्रकृति व मानवीय प्रयास दोनों के समान्तर रहने पर सुफ़ल की प्राप्ति हो सकती है। विद्यालय के श्रेष्ठतम परीक्षा परिणाम के लिए शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक के बीच आपस में समन्वय अभीष्ट दायक होता है। सुनिश्चित लक्ष्य का संधारण एवं कृत संकल्पित होना अति आवश्यक है, संकल्प से कामना की सिद्धि होती है। कर्मभूमि पर लगन, निष्ठा श्रद्धा व तत्परता से स्वकर्म में रत रहना ही श्रेष्ठतम धर्म है। एतदर्थ शिक्षक वृन्द, प्रधानाचार्य के निर्देशन में अग्रानुसार गुणवत्ता युक्त शिक्षण के विविध सोपान की अनुपालना कर श्रेष्ठतम गुणात्मक शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम अर्जित कर सकते हैं-

1. वार्षिक कार्य योजना का निरूपण करना।
2. प्रभावी पाठ योजना एवं गृह कार्य मूल्यांकन योजना।
3. नियमित दैनंदिनी संधारण।
4. विषय वार कक्षा में अपने कालांश के अनुसार छात्र-छात्राओं की उपस्थिति लेना।
5. कालांश में अनुपस्थित छात्रों के लिए प्रभावी अभिभावक संपर्क।
6. समुचित समय प्रबन्धन।
7. संतुलित अध्ययन के लिए उत्प्रेरित करना।
8. रात्रि कालीन प्रभावी पर्यवेक्षण एवं निर्देशन
9. विषय वार समय तालिका का संधारण व शैक्षिक निर्देश देना व अध्ययन कक्ष में लगवाना।
10. अनुवर्तन कार्य पर विशेष बल देना।
11. प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षण के लिए प्रतिमाह विषयवार क्विज़ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन करना व अंकन भी प्रदत्त करना। छात्र संख्या के आधार पर दल बना कर आपस में प्रतिस्पर्धात्मक तरीके से आयोजन किया जाना समीचीन।
12. स्वनिर्मित प्रश्न बैक संधारण के लिए प्रेरित करना।
13. नियमित व गहन अध्ययन पर विशेष बल देना।
14. प्रभावी शिक्षण के लिए पाठ तैयार करके ही कक्षा में जाना, जिससे आत्मविश्वास की अभिवृद्धि होगी।
15. शिक्षक, शिक्षार्थी व अभिभावक के बीच समन्वय पर विशेष बल।
16. समय की पाबन्दी विशेष बल।
17. नियमित कक्षा शिक्षण कराना।
18. समय-समय पर छात्र प्रगति विवरण बताना।
19. सरल, सहज व बोधगम्य विषय वस्तु का संप्रेषण।
20. यूनिट टेस्ट निष्पादित करना, अभिलेख संधारण।
21. शिक्षक आपके द्वार मोहल्ले के अनुसार अभिभावक की बैठकों का आयोजन करना।
22. स्व-मूल्यांकन प्रपत्र संधारण व मासिक पाठ्यक्रम विभाजन व प्रगति विवरण का संधारण किया जाना भी सम्यक रहेगा।
23. आकर्षक विद्या मंदिर व भौतिक संसाधन समुपलब्ध कराना, पुस्तकालय का समुचित प्रबन्धन पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग रहना।

वैश्विक महामारी कोविड-19 संक्रमण दौर के चलते विगत 2 वर्षों से शिक्षण संस्थान प्रभावित हुए ऑनलाइन शिक्षण का प्रबंधन व शिक्षाविदों एवं उच्चाधिकारियों द्वारा अभिनव प्रयोग व नवाचार जैसे- स्माइल के माध्यम से शैक्षिक अभिरुचि उत्प्रेरित करना। घर -घर सम्पर्क कर होम वर्क दिया जाना। निश्चित ही विभाग की यह पहल पालनीय है, अभिप्रेरणीय व श्लाघनीय है।

शैक्षिक यात्रा में शिक्षक, शिक्षार्थी व अभिभावक तीनों में त्रिकोणात्मक जुनून व जज्बे की जरूरत है, मनोयोगपूर्वक काम करने से सफलता मिलती है।

प्राध्यापक (सेवानिवृत्त)
सरोदा, डूंगरपुर (राज.)
मो: 9660937790

Rajasthan Education Department

पुरातत्त्व

2000 वर्ष प्राचीन पुरातात्त्विक साक्ष्य

❒ जफ़र उल्लाह खान

नगरफोर्ट, तहसील-उनियारा, जिला-टोंक से मालवा जनपद के ढालित सिक्के बनाने का पक्की मिट्टी का 2000 वर्ष प्राचीन साँचा माह जून, 2021 में मिला है। जयपुर से टोंक लगभग 100 किलोमीटर एवं टोंक से नगरफोर्ट 30 किलोमीटर दूर स्थित है। नगरफोर्ट में दूर दूर तक टीलें फैले हैं। इन टीलों के नीचे प्राचीन सभ्यता के पुरावशेष एवं प्राचीन ईंटों की दीवारें निकलती रहतीं हैं। इसी क्रम में नगरफोर्ट, टोंक से मालवा जनपद की ताँबें की मुद्राएँ ढालने का 'पक्की मिट्टी का साँचा' माह जून, 2021 में मिला है। इस साँचे में एक साथ 11 आकार की मुद्राएँ ढाली जाती थी। साँचे में इनका आकार 'चाँदी की चिह्नित मुद्राओं' के अनुरूप बना हुआ है। इन साँचा में 'चाँदी की चिह्नित मुद्राओं' के आकारानुसार एक साथ 11 आकार की ताम्र मुद्राएँ ढाली जाती थी। साँचें में अंकित आकार की 'चाँदी की चिह्नित मुद्राएँ' पुस्तक 'प्राचीन भारत की चिह्नित मुद्राएँ' में देखी जा सकतीं हैं। जिसका विवरण तालिका में आगे दिया गया है।

यह साँचा राजकीय संग्रहालय, अजमेर की मुद्रा पुरापंजिका में क्रमांक संख्या 1866 दिनांक 19-6-2021 पर दर्ज/संग्रहित है। इस 'पक्की मिट्टी के साँचें' का आकार लगभग 7.5 सेंटीमीटर व्यास है। साँचे के दोनों भागों की मोटाई लगभग एक-एक सेन्टीमीटर है।

सर्वप्रथम श्री ए. सी. एल. कर्लाइली, पुरातत्वविद् द्वारा इस प्राचीन शहर की खोज की थी। कर्लाइली ने 'रिपोर्ट ऑफ ए टूर इन ईस्टन राजपूताना इन 1871-72 एण्ड 1872-73' में इस प्राचीन शहर का विस्तृत वर्णन प्रकाशित किया है। कर्लाइली को खुदाई के दौरान लगभग 6000 से ज्यादा मुद्राएँ मिलीं हैं। इन में अधिकतर मुद्राएँ मालवा जनपद की थीं। जिन पर ब्राह्मी लिपि में 'मालवा जयते' अथवा 'मालवना जय' अंकित था। कर्लाइली के अनुसार ज़मीन में दबें इस शहर की उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 1.568 मील और पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 1.739 मील थी। वर्तमान नगरफोर्ट के पास स्थित इस क्षेत्र में अब भी थोड़ी सी खुदाई पर ही प्राचीन ईंटें एवं पुरावशेष निकलने लगते हैं, यह इस बात की गवाही देते हैं कि यहाँ ज़मीन के नीचे प्राचीन शहर बसा हुआ है। रिपोर्ट में टकसाल टीलें का भी उल्लेख किया है। कर्लाइली के अनुसार बरसाती नाला गरवा तब भी मौजूद था। जिसमें बरसात के समय बहुत पानी बहता है। भौगोलिक परिवर्तन से पहले यह नगर के दक्षिण हिस्से से बहने वाली नदी की एक सहायक धारा रही होगी ओर इसके दोनों ओर नगर बसा हुआ था।

आर्कियोलॉजिकल सर्वे के तत्कालीन महानिदेशक मेजर जनरल एलेक्जेंडर कनिंघम ने कर्लाइली की रिपोर्ट की प्रस्तावना में लिखा है कि कर्लाइली को उत्खनन में मिले अधिकांश सिक्कों पर 'जय मालवन' लिखा है। यह मुद्राएँ 250 बी.सी. से लेकर 400 ए.डी. तक मिलतीं हैं। उनका निष्कर्ष था कि यह शहर अवश्य ही 850 वर्षों तक इस अवधि में आबाद रहा होगा।

पुरातत्व विभाग ने कर्लाइली की इस विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर 1942 से 1950 तक नगरफोर्ट में उत्खनन कार्य करवाया था। तब भी यहाँ से बड़ी मात्रा में सिक्के एवं आभूषण मिले थे। इसके साठ साल बाद 2008-09 में श्री टी. जे. अलोने, अधीक्षक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया था। इस कार्य के दौरान भी तीन स्थानों से मुद्राएँ मिली थी। श्री अलोने जयपुर सर्किल से, स्थानान्तरण के बाद उत्खनन कार्य रोक दिया गया था।

इसी क्रम में नगरफोर्ट टोंक में दबे प्राचीन शहर के टिलों से मालवा जनपद की ताँबे की मुद्राएँ ढालने का 'पक्की मिट्टी का साँचा' माह जून, 2021 में मिला है। यह साँचा राजकीय संग्रहालय, अजमेर में संग्रहित है।

राजस्थान में रैढ, नगर (टोंक); विराटनगर (बैराठ), इस्माइलपुर, सांभर, जसन्दपुरा (जयपुर); नगरी (चित्तौड़गढ़); महुवा देव जी (बूँदी); आहाड़ (उदयपुर); नोह (भरतपुर); गुरारा (सीकर) आदि विभिन्न स्थानों पर पुरातात्त्विक उत्खनन या संयोगवश घरों, खेतों में खुदाई करते समय भारतीय मुद्रा इतिहास के प्राचीनतम चिह्नित सिक्के मिले हैं। इन समस्त दफिनों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चिह्नित मुद्राओं (पंचमार्क सिक्के) के आकार में भिन्नता है, लेकिन इन सभी स्थानों पर मिली मुद्राओं की संख्या में समानता एवं एकरूपता है। इनके बनाने की ठप्पा विधि भी एक तरह की है। चाँदी या ताँबे को गला कर चद्दर बनाए जाने की विधि में भी समानता है, लेकिन मुद्राओं की चद्दर की मोटाई में अन्तर अवश्य है। इस चद्दर की मोटाई प्रयेत्क क्षेत्र की टकसाल में उपलब्ध तकनीकी सुविधा के अनुसार रखी जाती रही होगी। जिन केन्द्रीयकृत टकसालों में उच्च श्रेणी की तकनीक उपलब्ध थी, उनके सिक्के पतली चद्दर बनाकर पाँच चिह्न टंकित किए जाते थे। केन्द्रीय सत्ता से दूर की टकसालों में उच्च श्रेणी की तकनीक उपलब्ध नहीं होने के फलस्वरूप चद्दर की मोटाई अधिक रखी गयी है। चिह्नित मुद्राओं (पंचमार्क सिक्के) की मोटाई में अन्तर होते हुए भी इनके भार/वज़न एवं पाँच चिह्नों के मुद्रित करने की विधि में समानता एवं एकरूपता है। चद्दर की पट्टी से निश्चित तौल वाले टुकडे काटे जाते थे। फिर इन टुकड़ों पर पाँच चिह्न टंकित किए जाते थे। गोलाकार सिक्के बनाते समय चाँदी की निश्चित तौल की गोली बनाकर उसे पीट-पीट कर चपटा किया जाता होगा, उसके बाद पाँच चिह्नों को मुद्रित किए जाते होंगे।

इसके अतिरिक्त ताँबें की ढालित मुद्राएँ बनाई जाती थी। इन्हें बनाने की विधि में कई विद्वानों के अलग-अलग मत थे। नगर फोर्ट, टोंक से मिले साँचें से यह स्पष्ट हो गया है कि ढालित मुद्राओं का आकार 'चाँदी की चिह्नित मुद्राओं' के आकारानुसार रखा गया है। इनका वजन सन्तुलित करने के लिए साँचे में मुद्रा के आकारानुसार गहराई रखी गयी है। बड़े आकार के साँचे की गहराई कम है तथा छोटे आकार के साँचे की गहराई अधिक है।

मालवा जनपद के ढालित सिक्के राजस्थान के ग्राम-रैढ़, नगरफोर्ट, तहसील-उनियारा, जिला-टोंक से पहले भी मिले थे। यह

सिक्के विभाग की मुद्राशाखा, निदेशालय, जयपुर में संग्रहित हैं। ढाले हुए जनपदीय सिक्के राजकीय केन्द्रीय संग्रहालय, एल्बर्ट हॉल, जयपुर में भी प्रदर्शित हैं।

'ऐतिहासिक मुद्राएँ' पुस्तक में प्रकाशित सिक्का क्रमांक (62) पेज संख्या-163 एवं (63) पेज संख्या-164 देखे जा सकते हैं, यह ढालित मुद्राएँ नगर फोर्ट, टोंक से ही मिली हैं। मालवा जनपद की ढालित मुद्राएँ नगर फोर्ट, टोंक से समय समय पर मिलती रहीं हैं। रैढ़, नगरफोर्ट से वर्ष 1939-41 में 3123 चिह्नित आहत मुद्राएँ मिली थीं। यह मुद्राएँ मुद्राशाखा, निदेशालय, पुरातत्व एवं सग्रहालय विभाग, जयपुर में संग्रहित है। इनमें से 11 चाँदी की 'चिह्नित आहत मुद्राओं' के आकारानुसार वर्तमान में मिला 'पक्की मिट्टी का साँचा' तैयार किया गया है।

(1) सिक्का क्रमांक (62) दर्ज सं.-सीएमजे-1/2/68, पेज संख्या-163

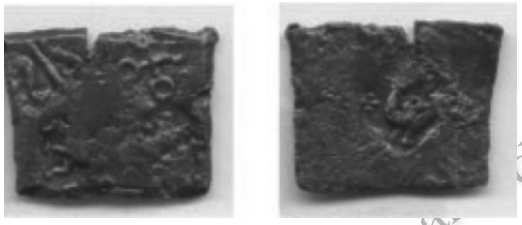

(2) सिक्का क्रमांक (63) दर्ज संख्या 6/89/3109, पेज संख्या-164

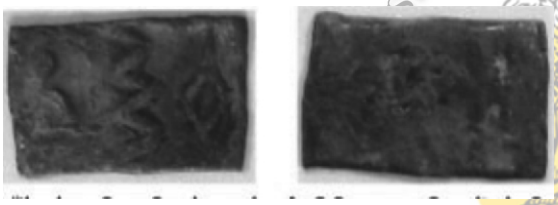

ताँबे के ढालित सिक्के बनाने की विधि आहत सिक्कों से बिल्कुल विपरीत थी। ताँबे के ढालित सिक्के बनाने हेतु सर्वप्रथम 'पक्की मिट्टी का साँचा' तैयार किया जाता था, इस साँचे में ताँबे को पिघलाकर डाला जाता था। साँचों में सूर्य, षडचक्र पर्वत, बोधिवृक्ष, उज्जैनी-चिह्न, हाथी, त्रिशूल एवं वृषभ आदि अंकित मिलते हैं। ढाले हुए सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि का अंकन भी मिलता है। इस पक्की मिट्टी के साँचे में चिह्न दिखाई दे रहें हैं। नगर फोर्ट, टोंक से मिले पक्की मिट्टी के साँचे से यह जानकारी मिलती है कि एक साँचे से एक साथ 11 ढालित मुद्राएँ ढाली जाती थीं। मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में यह नवीन जानकारी है। चिह्नित आहत मुद्राओं के अनुसार पक्की मिट्टी का साँचा संख्या (5) में चिह्न में (1) सूर्य, (2) षडचक्र एवं (3) पाँच पत्तियों की डाली तथा साँचा संख्या (7) में (1) आयताकार जलाशय में चार मछलियाँ, (2) सूर्य एवं (3) मुकुट के चारों तरफ छः वृषभ के मुखमण्डल निम्नानुसार स्पष्ट स्पष्ट स्पष्ट दिखाई दे रहें हैं:

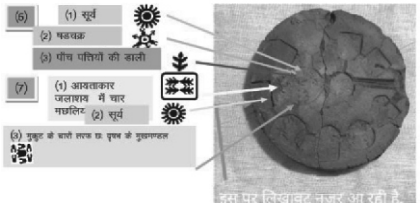

मालवा जनपद द्वारा 'चाँदी की चिह्नित मुद्राओं' के आकारानुसार 11 प्रकार की पक्की मिट्टी का साँचा तैयार किया गया है, इस साँचे में ताँबें की ढालित मुद्राएँ नगर फोर्ट की टकसाल में ढाली जाती थी। पक्की मिट्टी के साँचे के मुख से तीन तरफ नालियाँ जा रही हैं। इन नालियों के माध्यम से अन्य मुद्राओं के साँचों में ताँबा पहुँचाया जाता था। प्रत्येक मुद्रा एक दूसरे से नालियों से माध्यम से जोड़ी हुई हैं ताकि सभी साँचों में ताँबा जा सके। ताँबा डालने की मुख्य नाली के ऊपर से क्रम संख्या 1 आरम्भ किया गया है।

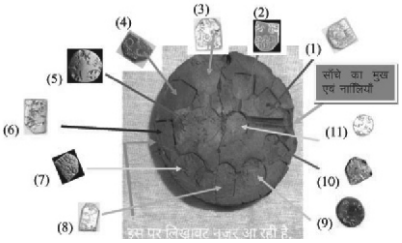

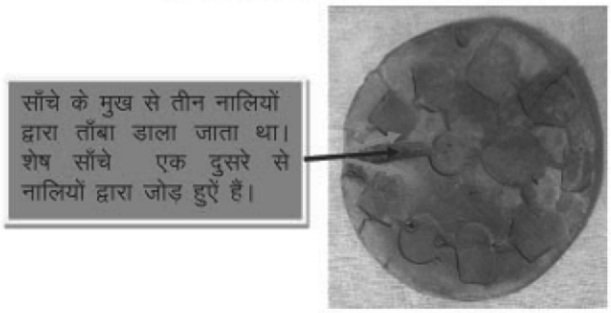

उक्त प्रामाणिक पुरातात्त्विक साक्ष्य के अनुसार नगरफोर्ट, टोंक में मालवा जनपद की टकसाल थी। श्री ए. सी. एल. कर्लाइली, पुरातत्वविद् की 'रिपोर्ट ऑफ ए टूर इन ईस्टन राजपूताना इन 1871-72 एण्ड 1872-73' में टकसाल टीले का वर्णन किया है।

इस पक्की मिट्टी के साँचें में ताँबें की मुद्रा ढालने के लिए चाँदी की मुद्राओं के आकार को आधार बनाया गया है। पक्की मिट्टी के साँचे में ताँबें की मुद्राओं का वजन/भार सन्तुलित करने के लिए बड़े आकार के साँचों की गहराई कम है तथा छोटे आकार के साँचों की गहराई ज्यादा रखी गयी है।

'दी टेक्निक ऑफ कास्टिंग कॉइन्स इन एन्शिन्ट् इण्डिया' बी. साहनी साहब ने साँचे से ढाली हुई मुद्राओं को बनाने विधि लिखी है, इस विधि में ताँबें को पिघलाकर साँचे के बीच एवं साईड में से ताँबें डालें का सचित्र विवरण दिया है, (फलक-1 क्रम संख्या 4, 5, 128-138) जबकि नगरफोर्ट से प्राप्त पक्की मिट्टी के साँचे में ताँबा डालने के लिए साइड में मुख बनाया गया है। इस प्रकार के साँचे मथुरा से भी मिले हैं। जिसमें एक साथ पाँच मुद्राओं को ढाला जाता था। मथुरा से प्राप्त साँचों को स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद ने स्थापित किया था। (पेज-59) अतरंजी खेड़ा से प्राप्त साँचों में एक-एक अलग-अलग पंचमार्क्ड मुद्राएँ ढालने के साँचे मिलें हैं। इन सभी पर पचंमार्क्ड सिक्कों के चिह्न बनें हैं। सीथो-पार्थियन्स की मुद्राएँ बनाने के लिए साइड से मुख में ताँबा डालने का सचित्र वर्णन दिया है (फलक-5 क्रम संख्या 119 से 122)।

उक्त पुस्तक के पेज संख्या 57 पर भारतीय मुद्रा इतिहास में साँचे में डालकर मुद्राओं का विशेष आकृति देने हेतु समय-समय पर विभिन्न

स्थानों से उत्खनन या संयोगवश प्राप्त हुए साँचों हेतु डा. वी. एस. अग्रवाल द्वारा निम्नानुसार कालक्रमबद्ध कर प्रकाशित किया है:-

1. कांस्य का साँचा (ईरान, तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व, पंचमार्क्ड)।
2. रोहतक से प्राप्त साँचा (100 ईसा पूर्व)।
3. तक्षशिला से प्राप्त साँचा (15 ईसा पूर्व)।
4. मथुरा से प्राप्त साँचा (लगभग 1 व 2 शताब्दी ईसा सन्)।
5. अतरंजी खेड़ा से प्राप्त साँचा (कुषाण काल 2 शताब्दी ईसा सन्)।
6. साँची से प्राप्त साँचा (पश्चिमी क्षत्रप साम्राज्य 150 से 388 ईसा सन्)।
7. कोंडापुर से प्राप्त साँचा (पंचमार्क्ड, आन्ध्र एवं क्षत्रप मुद्राएँ)।
8. सुनेत से प्राप्त साँचा (3 शताब्दी ईसा सन् पोस्ट कुषाण एवं प्री गुप्त साम्राज्य)।
9. काशी से प्राप्त साँचा (चन्द्रगुप्त द्वितीय 325-453 ईसा सन्)।
10. नालन्दा से प्राप्त साँचा (गुप्तकाल नरसिंह गुप्त 500-550 व जयगुप्त 625-675 ईसा सन्)।
11. कडक्कल से प्राप्त साँचा (14 एवं 15 शताब्दी ईसा सन्)।

इस पक्की मिट्टी के साँचे से शोधकर्त्ताओं को ढालित ताम्र मुद्राओं को बनाने की प्रामाणिक स्रोत मिलेगा तथा भारतीय इतिहास को नगर फोर्ट में मालवा जनपद की टकसाल होने का पुरातात्त्विक साक्ष्य प्राप्त होगा।

उक्त साँचे में मुद्राओं के आकारानुसार 'चाँदी की चिह्नित आहत मुद्राएँ निम्नानुसार पुस्तक 'प्राचीन भारत की चिह्नित मुद्राएँ' में प्रकाशित है:-

क्रम संख्या	उक्त प्रदर्शित मुद्रा क्रम संख्या	मुद्रा के प्रकाशन की पुस्तक का नाम	पुस्तक में प्रकाशित मुद्रा का क्रमांक एवं पेज संख्या
1.	(1)	'प्राचीन भारत की चिह्नित मुद्राएँ' संस्करण 2016 लेखक जफर उल्लाह खाँ	मुद्रा क्रमांक (206) दर्ज सं.-251 फलक-11, पेज संख्या 399.
2.	(2)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (217)दर्ज सं.-251, फलक-5, पेज संख्या 410
3.	(3)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (185)दर्ज सं.-251, फलक-47, पेज संख्या378
4.	(4)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (187) दर्ज सं.-6, फलक-64, पेज संख्या 380
5.	(5)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (42) दर्ज सं.-6, फलक-17, पेज संख्या 562
6.	(6)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (25) दर्ज सं.-251, फलक-3, पेज संख्या 100.
7.	(7)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (131)दर्ज सं.-251, फलक-8, पेज संख्या 324.
8.	(8)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (92)दर्ज सं.-251, फलक-2, पेज संख्या 285.
9.	(9)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (56)दर्ज सं.-6, फलक-8, पेज संख्या 248.
10.	(10)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (106)दर्ज सं.-6, फलक-88, पेज संख्या 299.
11.	(11)	--,,--	मुद्रा क्रमांक (54)दर्ज सं.-220, फलक-1, पेज संख्या 346

अधीक्षक उत्खनन (सेवानिवृत्त)
राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग
शेखावाटी रेजीडेंसी, प्लाट नं. 42-43, एस/एफ-2 स्टार हाइट के सामने,
100 फीट रोड, जयपुर (राज.)-302012
मो: 982920027

शिक्षा सतत

बदलते परिवेश में शिक्षा के मायने

❐ भंवरलाल पुरोहित

गुरु ज्ञान की सोंटी,
कितनी प्यारी कितनी मुस्कान
गुरु बना अध्यापक और
ब्लेक बोर्ड का जमाना
कभी ज्ञान का था खजाना
अब ये किस्सा हुआ कुछ पुराना
आ गया मोबाइल हाइटेक का जमाना
कैसे आजमाना, नए परिवेश का अफसाना।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, कोविड महामारी भी यही परिवर्तन लेकर आई है, चुनौती के रूप में शिक्षा के सारथियों ने संभालने का जिम्मा उठाया है। अब महसूस हो रहा है कि कितनी उपयोगी है, एसडीएमसी/एसएमसी जिनका उपयोग चुनौती में किया जा सकता है। पिछले दो वर्षों तक विद्यालय बंद रहे, लेकिन अध्यापन की निरन्तरता हेतु प्रायोगिक तौर कसौटी पर खरा उतरने हेतु विभाग द्वारा स्माइल 1.0 से 3.0 तक कार्यक्रम को लागू करने में अनुकरणीय कार्य किया लेकिन चुनौतियों ने भी पीछा नहीं छोड़ा।

- नेटवर्क की अनुपलब्धता।
- मोबाइल का न होना।
- बिजली का बाधित होना।

इन सब चुनौतियों के सरोकार को देखते हुए घर-घर, मोहल्ला शिक्षण चार्ट कौशल को माध्यम बनाकर अध्ययन करवाना शुरू किया।

कोरोना महामारी में बच्चों का बचपन, शिक्षा, खेलकूद बुरी तरह प्रभावित हुआ। कक्षा 1 से 5 तक बच्चों का बहुत बड़ा नुकसान हुआ, अतः नए रास्ते नयी राह की ओर शिक्षकों को चलना पड़ा। ब्लैक बोर्ड, सामाजिक दूरी, चार्ट के माध्यम से मोहल्ला शिक्षण कार्यक्रम संचालन किया। छात्रों से अभिभावक संपर्क कर नई राह में आने वाली हमारी आने वाली चुनौतियों का हल निकल कर आया। हमारी चौपाल, देवालय जहाँ बैठकर पलों को महसूस किया। मैंने स्वयं ने नया सानवाड़ा में एक मंदिर में कक्षा को देखकर एक सुखद अनुभूति प्राप्त की। इन सब प्रयासों के बावजूद भी कुछ छात्र/छात्राएँ शिक्षा से वंचित रहे, शिक्षकों ने स्माइल तकनीक के कारण स्वयं तकनीकी में स्मार्ट बनकर यू-ट्यूब पर वीडियो बनाकर भेजने प्रारंभ किए लेकिन शिक्षा का यह अनुभव भी बहुत उत्साहवर्धक नहीं रहा। प्रयास की कड़ी में बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ बनाने हेतु पीरामल फाउंडेशन की 'टेब लैब' की क्रियान्विति को अंजाम देने का प्रयास किया गया। इस क्षेत्र में भामाशाह सहयोग से इस योजना को सार्थक करने में शिक्षक समुदाय डिजिटल क्रांति की मशाल जन-जन तक पहुँचाने तथा सार्थक में परिणाम में प्रयासरत हूँ।

एक ही आवाज एक ही आह्वान
डिजिटल क्रांति ही हो हमारी पहचान।।

आने वाले समय में प्रत्येक छात्र/छात्रा को भामाशाह सहयोग से टेब दिलवाने की कार्यवाही की शुरूआत की जाकर हम सभी मिलकर शिक्षा की सतत प्रक्रिया को जारी रखेंगे ताकि महामारियों पर हमारी जीत बालकों की मुस्कान को छीन नहीं पाए।

सीबीईओ पिण्डवाडा
नई धनारी, पोस्ट-धनारी, सरूपगंज, सिरोही (राज.)

शिक्षण-अधिगम

विद्यालय वातावरण और सीखना-सिखाना

❒ हंसराज गुर्जर

सीखना-सिखाना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। बच्चा हो, जवान हो या चाहे वृद्ध। सभी जीवन भर सीखते रहते हैं। यहाँ सीखने-सिखाने का अर्थ महज पढ़ना-लिखना नहीं है। बल्कि इसमें तमाम सूचनाएँ, जानकारियाँ व अनुभव भी शामिल है। जो हमें समाज से, बड़ों से, छोटों से, सहपाठियों से, अपने परिजनों से, प्रकृति से तमाम उन चीजों से जिनसे हम कुछ नया देखकर, सुनकर, अनुभव करके, अनुसरण करके, अभ्यास करके, बार-बार गलतियाँ करके बिना भय, डर के रुचि के साथ, आनंद के साथ सीखते ही नहीं बल्कि मौका आने पर सीखी हुई बातों को व्यवहार में भी उपयोग करते हैं और यह सारी कवायद हम इसलिए करते हैं कि हमारा सामाजिक जीवन हम बेहतरी के साथ जी सके।

अब हम बात करते हैं विद्यालय में बालकों के सीखने-सिखाने की। पहले हमें यह भी जानना जरूरी है कि बच्चे आखिर सीखते कैसे हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में वह तमाम बातें जो ऊपर कही गई है। जैसे बच्चे भय मुक्त माहौल में अच्छा सीखते हैं। बच्चे आपस में एक-दूसरे से बातचीत करके भी सीखते हैं। बच्चों को सबसे प्रिय काम खेलना लगता है तो शिक्षक को चाहिए कि खेल-खेल में ही बच्चों को सिखाएं। बच्चे अनुकरण करके, सुनकर, देखकर व गलतियों से भी सीखते हैं। बच्चों को खूब सारे अवसर उपलब्ध करवाकर खुद करके भी सीखते हैं।

शिक्षक को क्या करना चाहिए? शिक्षक अपनी कक्षा व विद्यालय में ऐसा वातावरण निर्मित करें कि बच्चे सीखने के लिए, शिक्षक से अपने सहपाठियों से व अन्य बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों से व परिजनों से मदद मांगने में झिझक व संकोच न करे।

तो इसके लिए सबसे जरूरी बातों में पहली बात है-बच्चों का शिक्षक पर विश्वास। जितना विश्वास होगा उतना ही डर कम होगा।

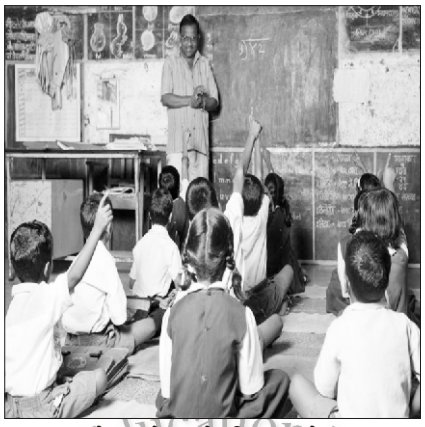

डर कम होगा तो बच्चे शिक्षक से बातचीत, सवाल-जवाब सहज भाव से कर पाएँगे।

दूसरी बात- शिक्षकों को विद्यालय व कक्षा-कक्ष में बालकों को हमेशा बच्चे हैं, ऐसा समझकर व्यवहार नहीं करना चाहिए। बल्कि एक व्यक्ति के रूप में पूर्ण इकाई समझकर ही बातचीत व व्यवहार करना चाहिए।

तीसरी बात- सबसे महत्त्वपूर्ण जो मुझे महसूस हुई वह यह है कि शिक्षकों का विद्यालय व अपने खुद के व्यक्तिगत जीवन में एक जैसा होना। बच्चे बहुत सारी बातें शिक्षकों का समय पर आना, मुस्कुरा कर बातचीत करना, सहयोग, प्रेम, ईमानदारी आदि नैतिक मूल्य कब सीख जाते हैं, पता ही नहीं लगता है।

चौथी बात-बच्चों की गलतियों पर ज्यादा टोका-टोकी करने से भी वह मदद मांगने से कतराने लग जाते हैं। इसलिए गलतियों में भी अच्छाई ढूँढ़कर पहले उसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

पाँचवी बात-प्रश्न या कोई भी चुनौती का जल्दी से हल शिक्षक को स्वयं न बताकर बच्चों को ही जूझने देना चाहिए। जब उनको हल मिलता है तो वे बेहद प्रसन्न व उनका सीखना पक्का होता है। शिक्षक को उत्तर बताने की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, जो अक्सर अधिकांश शिक्षक करते हैं।

छठी बात- बालकों को समूह बनाकर बातचीत करने, चित्र बनाने, कविता, कहानी आदि शिक्षक को साथ में रहकर करवाने से भी बालक आपस में मदद मांगने में झिझकते नहीं है।

सातवीं बात- शिक्षकों को बच्चों की आपस में तुलना करने से भी बचना चाहिए जैसे यह बहुत होशियार है, यह पढ़ाई में कमजोर है आदि यह सब बच्चों को प्रोत्साहित न करके हतोत्साहित करते हैं।

आठवीं बात- बालकों को अपने तरीकों से काम करने की आजादी देनी ही चाहिए। अपनी कमियों, गलतियों को भी बालक स्वयं ही खोजे, ऐसा माहौल, गतिविधियों के माध्यम से हम कर पाते हैं तो बच्चों में आत्मनिर्भरता का भाव आता है।

नवीं बात- हर बच्चा सीख सकता है, हर अध्यापक सीखा सकता है। इस सोच को बच्चों के साथ काम करते समय शिक्षक को ध्यान में रखनी चाहिए। बच्चों के बार-बार पूछने पर झल्लाहट, चिड़चिड़ाहट व गुस्सा नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से भी बच्चे मदद मांगना बंद कर देते हैं।

अंतिम बात- शिक्षक को बच्चों से बातचीत करते समय बच्चों को औपचारिकता नहीं लगनी चाहिए। इसके लिए आप उनकी बात को बड़े ध्यान से, हाव भाव के साथ मतलब आपकी आँखें व शरीर की स्थिति बच्चों के साथ जुड़ी ही होनी चाहिए। ऐसा नहीं करने पर बच्चे धीरे-धीरे अपनी शंका/समस्या प्रकट करना बंद कर देते हैं।

सार रूप से कहा जाए तो बच्चों व विद्यालय को अपना समझकर ही आप कार्य करेंगे तो बच्चे आप से मदद भी मांगेंगे व अपनी मन की बात भी करेंगे। ऐसा करने वाले शिक्षकों की बच्चों में, समाज में एक अलग ही पहचान बनती है।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बीलोता,
ब्लॉक-उनियारा, टोंक (राज.)
मो: 9829434517

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2021

1. **2021-22 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।**
2. **प्रदेश के समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यालयों के संचालन के संबंध में।**
3. **सत्र 2021-22 में पाठ्यक्रम संक्षिप्तीकरण, परीक्षा/आकलन आयोजन, परीक्षा पैटर्न तथा प्रश्न-पत्र पैटर्न के संबंध में।**
4. **द्वितीय श्रेणी अध्यापक एवं समकक्ष स्तर के प्रकाशित वरिष्ठता सूचियों में नामांकन, विलोपन, संशोधन एवं योग्यता अभिवृद्धि के अंकन के संबंध में।**
5. **मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) के सम्बन्ध में।**

1. 2021-22 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा./हि.नि./28203/2019-20 दिनांक : 09.11.2021 ● निदेशक, प्रारंम्भिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर ● निदेशक, समग्र शिक्षा, स्कूल शिक्षा विभाग, शिक्षा संकुल, जयपुर ● समस्त संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारम्भिक) ● समस्त डाइट प्राचार्य ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● समस्त विशिष्ट संस्थाएँ ● उप-पंजीयक कार्यालय ● विषयः 2021-22 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प. 21 (7) शिक्षा-2/हितकारी निधि/2017 दिनांक 15.06.2018 के द्वारा अनुमोदन उपरांत हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2021-22 का शिक्षा विभाग के समस्त राजपत्रित एवं अराजपत्रित संवर्ग (प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा) के कार्मिकों के वेतन विपत्र माह दिसम्बर, 2021 देय जनवरी, 2022 पूर्व निर्धारित दर से कटौती कर भिजवाया जाना है, वेतन से कटौती बाबत दिशा निर्देश इस कार्यालय के पत्र दिनांक 08.11.2021 द्वारा जरिए मेल प्रेषित किए जा चुके है, अतः समस्त आहरण वितरण अधिकारी अपने अधीनस्थ समस्त कार्मिकों के वेतन से कटौती की जानी सुनिश्चित करें।

राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित वार्षिक अंशदान की दरें-

1. समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित) -रुपये 500/- प्रतिवर्ष
2. समस्त अराजपत्रित कार्मिक (अध्यापक एवं सहायक कर्मचारी सहित) -रुपये 250/- प्रतिवर्ष

हितकारी निधि कल्याणकारी योजनाएँ- इस कल्याणकारी योजनान्तर्गत 2018-19 से नियमित अंशदाता को ही लाभ प्राप्त हो सकेगा।

1. सेवा में रहते कार्मिक के निधन पर उसके आश्रितों द्वारा आवेदन करने पर आर्थिक सहायता। 1,50,000/-
2. शिक्षा विभाग के कार्मिकों के 500 बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता (आवेदन आमंत्रित करने पर) 10,000/-
3. शिक्षा विभागीय कार्मिक एवं उसके आश्रित के असाध्य रोग से पीड़ित होने पर अधिकतम सहायता। 20,000/-
4. एक मुश्त छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत शिक्षा कर्मियों के पुत्र/पुत्री के राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हुए 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करने पर छात्रवृत्ति। (राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा आयोजित X^{th} के 950 एवं 50 विशिष्ट उपाध्याय, संस्कृत के छात्र/छात्राओं को) (आवेदन आमंत्रित करने पर) 11,000/-
5. बालिका उपहार योजनान्तर्गत (सेवाकाल में एक बार) के पुत्री के विवाह पर, प्रति वर्ष 1000 प्रकरणों में। 11,000/-
6. मंत्रालयिक एवं च.श्रे.कर्म. को भारत भ्रमण सुविधा के तहत राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने पर अधिकतम सहायताः- 12,000/-
7. बालिका शिक्षा हेतु ऋण। 50,000/-

हितकारी निधि की सफलता के लिए आपके अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों में इस पत्र की प्रतिलिपि मय आपके निर्देशों के भिजवाए, ताकि सफल परिणाम प्राप्त हो सके। अंशदान की कटौती होने के पश्चात निर्देशानुसार ECS Cash Book एवं कटौती शिड्यूल की प्रति अध्यक्ष, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से भिजवाई जानी है, कटौती शिड्यूल में कार्मिक के I.D. संख्या का आवश्यक रूप से उल्लेख करें, क्योंकि यही I.D. कार्मिक का खाता संख्या है, तदनुसार खातों में प्रविष्टियाँ की जाएगी।

अतः समस्त आहरण वितरण अधिकारी, हितकारी निधि अंशदान माह दिसम्बर 2021 देय वेतन जनवरी, 2022 का निर्देशानुसार वेतन से कटौती कर भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

● **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं अध्यक्ष हितकारी निधि राजस्थान, बीकानेर।

2. प्रदेश के समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक की नियमित शिक्षण गतिविधियों के संचालन के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/विविध दिवस/2018 दिनांक : 12.11.2021 ● विषयः प्रदेश के समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक की नियमित शिक्षण गतिविधियों के संचालन के संबंध में। ●परिपत्र ।

राज्य सरकार की स्वीकृति दिनांक 12.08.2021 से दी गई अनुमति के अनुसरण में प्रदेश के समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को अभिभावकों की स्वीकृति उपरान्त स्वैच्छिक रूप से दिनांक 01.09.2021 से तथा दिनांक 17.09.2021 के आधार पर कक्षा 6 से 8 की नियमित शिक्षण गतिविधियाँ दिनांक : 20.09.2021 से तथा कक्षा 1 से 5 की नियमित शिक्षण गतिविधियाँ दिनांक 27.09.2021 से 50% क्षमता के साथ संचालित किए जाने संबंधी इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक : 24.08.2021 एवं 18.09.2021 द्वारा जारी S.O.P. में वर्णित निर्देशों के अनुरूप कक्षा शिक्षण किया जा रहा है। इस क्रम में राज्य सरकार के निर्देश दिनांक 08.11.2021 से दी गई अनुमति के आधार पर राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक की नियमित शिक्षण गतिविधियाँ दिनांक 15.11.2021 सोमवार से 100% क्षमता के साथ संचालित की जानी है। उक्त संचालन में-

1. प्री-प्राइमरी कक्षाओं तथा कक्षा 1 से 12 के कक्षा शिक्षण हेतु मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) पूर्व में जारी मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) के अनुरूप ही रहेगी।
2. विद्यालय में प्रार्थना सभा, सामूहिक खेल तथा उत्सवादि का आयोजन कोविड उपयुक्त व्यवहार की सुनिश्चितता की शर्त पालना पर अनुमत होगी।
3. विद्यालय में विद्यार्थी लंच के समय अपने कक्ष में ही भोजन करेंगे, जिनके साथ कक्षाध्यापक का भी तत्समय कक्षा में रहना सुनिश्चित किया जाए। विद्यार्थियों द्वारा लंच टिफिन व भोजन का पारस्परिक उपयोग नहीं किया जाए।
4. गृह विभाग द्वारा जारी की गई गाइडलाइन में मिड डे मील संबंधी निर्देश पूर्ववत है। इस संबंध में मिड डे मील योजना के तहत गर्म भोजन उपलब्ध करवाए जाने के संबंध में दिशा-निर्देश पृथक से जारी किए जाएंगे।
5. विद्यार्थियों को पीने का पानी यथासंभव घर से लाने हेतु शिक्षकों द्वारा प्रेरित किया जाए तथा पानी की बोतल के पारस्परिक (अदला-बदली) उपयोग से बचने हेतु पाबन्द किया जाए। घर से पानी नहीं ला पाने वाले विद्यार्थियों हेतु विद्यालय परिसर में समुचित स्वास्थ्यप्रद स्थान पर शुद्ध एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
6. संस्था में अध्ययन अवधि एवं आवागमन के दौरान फेस मास्क पहनना अनिवार्य होगा। 'नो मास्क नो एंट्री' की पालना आवश्यक है।
7. विद्यालय परिसर तथा कक्षाओं में सामाजिक दूरी का ध्यान रखा जाए एवं विद्यालय में किसी भी स्थान पर विद्यार्थी, अभिभावक एवं कर्मचारी अनावश्यक रूप से एकत्रित नहीं हो, इसका विशेष ध्यान रखें।
8. विद्यालय परिसर में स्थित कैंटीन को आगामी आदेशों तक बंद रखा जाना है।
9. प्रत्येक फ्लोर पर क्लासरूम एवं फैकल्टी रूम में कुर्सियों, सामान्य सुविधाओं एवं मानव संपर्क में आने वाली सभी वस्तुओं जैसे रेलिंग, डोर हैंडल्स सार्वजनिक सतह इत्यादि को प्रतिदिन सैनिटाइज किए जावे एवं खिड़की दरवाजों को खुला रखा जाए ताकि हवा का पर्याप्त प्रवाह सुनिश्चित रहे। विद्यालय में प्रतिदिन काम में आने वाली स्टेशनरी व अन्य उपकरणों को आवश्यक रूप से सैनिटाइज किया जाए।
10. विद्यालय के शैक्षणिक/अशैक्षणिक स्टाफ तथा आवागमन हेतु संचालित बस, ऑटो एवं कैब के चालक इत्यादि को वैक्सीन की दोनों खुराक आवश्यक रूप से लेनी होगी।
11. शैक्षणिक/अशैक्षणिक स्टाफ/विद्यार्थियों के आवागमन हेतु संचालित स्कूल बस, ऑटो, कैब इत्यादि वाहन की बैठक क्षमता के अनुसार ही अनुमत होंगे।
12. विद्यालय में सार्वजनिक स्थान पर थूकने पर प्रतिबंध हो एवं उल्लंघन किए जाने पर नियमानुसार आर्थिक दंड कारित किया जावे।
13. विद्यालय परिसर में विद्यार्थी, शिक्षकगण, कार्मिक के कोविड पॉजिटिव या फिर संभावित संक्रमण की स्थिति बनने पर संस्थान द्वारा संबंधित कक्षा-कक्ष को 10 दिनों के लिए बंद किया जाए।
14. किसी भी विद्यार्थी/शिक्षक/कार्मिक में कोविड-19 के लक्षण पाए जाने पर उसे तुरंत निकटस्थ अस्पताल में इलाज हेतु रेफर करवाया जाएगा एवं संस्था द्वारा एंबुलेंस की व्यवस्था की जाएगी।

यह सक्षम स्तर से अनुमोदित है।

● **(काना राम) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. सत्र 2021-22 में पाठ्यक्रम संक्षिप्तीकरण, परीक्षा/ आकलन आयोजन, परीक्षा पैटर्न तथा प्रश्न-पत्र पैटर्न के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा.द./गुण.प्र./परीक्षा/61196/ 2021-22 दिनांक : 20.11.2021 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारम्भिक ● विषयः सत्र 2021-22 में पाठ्यक्रम संक्षिप्तीकरण, परीक्षा/ आकलन आयोजन, परीक्षा पैटर्न तथा प्रश्न-पत्र पैटर्न के संबंध में। ●प्रसंग : शासन उप सचिव, शिक्षा (ग्रुप-6) विभाग, राजस्थान, जयपुर का पत्रांक : प.3 (4) शिक्षा-6/2021 जयपुर, दिनांक : 01.09.2021 के क्रम में। ●संदर्भ : इस कार्यालय का पूर्व प्रसारित परिपत्र क्रमांक : शिविरा-माध्य/ मा-स/22402/समान परीक्षा/06/2014-15/244, दिनांक : 02.06.2014

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि शासकीय अनुमोदनोपरान्त जारी विभागीय शिविरा पंचांग में उल्लिखित समयावधि के अनुरूप कक्षा-09 से 12 हेतु अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन समान परीक्षा व्यवस्थान्तर्गत इस कार्यालय के पूर्व प्रसारित संदर्भित परिपत्रानुसार अग्रांकित निर्देशानुसार करवाए जाने की सुनिश्चितता करावें:-

1. **<u>अर्द्धवार्षिक परीक्षा आयोजन :</u>**

● सत्र 2021-22 में समस्त राजकीय/गैर राजकीय माध्यमिक/उच्च

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 09 से 12 तक के विद्यार्थियों हेतु अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन दिनांक : 13.12.2021 से 24.12.2021 के मध्य जिला समान परीक्षा योजना के माध्यम से जिला स्तर पर किया जाएगा। जिला परीक्षा संयोजकों द्वारा प्रश्न-पत्र का निर्माण, मुद्रण एवं वितरण सम्बन्धी संदर्भित निर्देश दिनांक 02.06.2014 के अनुरूप कार्यवाही सम्पन्न की जाए।

- कक्षा 06 से 08 तक की अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन (प्रश्न पत्र निर्माण) विद्यालय स्तर पर ही किया जाना है।
- सत्र 2021-22 हेतु कक्षा 01 से 05 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन नहीं किया जाकर विद्यार्थी का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) प्रक्रियान्तर्गत पोर्टफोलियो के अनुरूप तथा शिक्षकों द्वारा किए गए आकलन के आधार पर किया जाना है। इस हेतु आवश्यकतानुसार पेन एण्ड पेपर टेस्ट अर्द्धवार्षिक परीक्षा हेतु निर्धारित अवधि के दौरान लिए जा सकेंगे।

2. अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं का पाठ्यक्रम :

कोविडजनित परिस्थितितियों के मद्देनजर RSCERT एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा समस्त कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम के संक्षिप्तीकरण उपरान्त सत्र : 2021-22 हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम का 60 प्रतिशत भाग अर्द्धवार्षिक परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है अर्थात उक्त 60 प्रतिशत पाठ्यक्रम के आधार पर ही अर्द्धवार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र निर्माण/ आयोजन किया जाएगा।

3. परख/परीक्षा का प्रतिशत अधिभार :

- सत्र 2021-22 में नॉन बोर्ड कक्षाओं यथा कक्षा 1 से 7 तथा कक्षा 9 एवं 11 के लिए 4 परीक्षाएँ/आकलन किए जाने हैं।
- नॉन बोर्ड कक्षाओं के लिए विविध परीक्षाओं का वेटेज निम्नानुसार निर्धारित किया गया है।

क्र.सं.	परीक्षा/आकलन	वेटेज (Weightage)	अंक
1.	प्रथम परख	कुल अंकों का 10%	20 अंक
2.	द्वितीय परख	कुल अंकों का 10%	20 अंक
3.	अर्द्धवार्षिक परीक्षा	कुल अंकों का 30%	60 अंक
4.	वार्षिक परीक्षा	कुल अंकों का 50%	100 अंक

- बोर्ड कक्षाओं के लिए विविध परीक्षाओं का वेटेज निम्नानुसार रहना प्रस्तावित है-

क्र.सं.	परीक्षा/आकलन	वेटेज (Weightage)	अंक
1.	प्रथम परख	कुल अंकों का 20%	20 अंक
2.	द्वितीय परख	कुल अंकों का 20%	20 अंक
3.	अर्द्धवार्षिक परीक्षा	कुल अंकों का 60%	60 अंक

नोट : बोर्ड में भेजे जाने वाले आंतरिक मूल्यांकन के 20% अंकों का निर्धारण इन्हीं परीक्षाओं के आधार पर किया जाना है।

4. परीक्षा/आकलन का पैटर्न :

- सत्र 2021-22 के लिए 21 जून 2021 से आरंभ किए गए 'आओ घर में सीखे-2.0 कार्यक्रम' के अंतर्गत संचालित स्माइल 3.0 द्वारा विद्यार्थियों को डिजिटल अध्ययन सामग्री, गृहकार्य वर्कशीट, व्हाट्सएप क्विज इत्यादि उपलब्ध करवाए जा रहे है, जिसका संधारण विद्यालय में विद्यार्थी पोर्टफोलियो में किया जा रहा है।
- साथ ही कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों को कार्य पुस्तिकाएँ (workbooks) भी उपलब्ध कराई गई हैं। कक्षा-1 से 5 तक के लिए किए जाने वाले आकलन तथा कक्षा-6 से 8 के लिए विद्यालय स्तर पर आयोज्य होने वाली परीक्षा/आकलन में विद्यार्थियों की (Back grade competency) विगत कक्षा की दक्षता (कोविड-19 के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के मद्देनजर विगत सत्र में वंचित दक्षताओं के सुधार हेतु) का भी मूल्यांकन किया जाना सुनिश्चित किया जाए।
- प्रति विद्यार्थी संधारित पोर्टफोलियो, वर्क बुक तथा विविध आयोजित परीक्षा/आकलन तथा मौखिक परीक्षा (कक्षा 1 से 8 के लिए) योगात्मक आकलन/कक्षौन्नति का अंतिम आधार रहेंगे।

सत्र 2021-22 के लिए कक्षावार परीक्षा पैटर्न निम्नानुसार रखा जाना प्रस्तावित है-

कक्षा	आंतरिक मूल्यांकन एवं परीक्षा की क्रियाविधि	अंक	
कक्षा 1-2	50% पहचान आधारित प्रश्न (विषयानुसार पहचान आधारित प्रश्न) : पेन-पेपर टैस्ट हेतु	30	60
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (कार्यपुस्तिका पूर्णता + वर्कशीट पोर्टफोलियो + क्विज आधारित)	12	
	30% मौखिक परीक्षा आधारित।	18	
कक्षा 3-5	50% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही/गलत, बहुवैकल्पिक : पेन-पेपर टैस्ट हेतु।	30	60
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (कार्यपुस्तिका पूर्णता + वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	12	
	30% मौखिक परीक्षा आधारित।	18	
कक्षा 6-8	70% लिखित परीक्षा आधारित।	42	60
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (कार्यपुस्तिका पूर्णता + वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	12	
	10% मौखिक परीक्षा आधारित।	06	
कक्षा 9-10	80% लिखित परीक्षा आधारित।	48	60
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	12	
कक्षा 11-12	गैर प्रायोगिक विषय (Non-practical subjects) 80% लिखित परीक्षा आधारित	48	60
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	12	
	प्रायोगिक विषय (Practical subjects)		
	• **यथा जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूगोल इत्यादि हेतु** 80% (सैद्धांतिक+ प्रायोगिक परीक्षा आधारित)	34 सैद्धां. 14 प्रा.	60

	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (वर्कशीट पोर्टफोलियो+ क्विज आधारित)	12 आ मू.
	● अन्य प्रायोगिक विषय यथा-संगीत, चित्रकला इत्यादि हेतु 80% (सैद्धांतिक + प्रायोगिक परीक्षा आधारित) 20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (वर्कशीट पोर्टफोलियो + क्विज आधारित)	14 सै. 34 प्रा. } 60 12 आ मू.

5. परीक्षा प्रश्न पत्र पैटर्न :

- सत्र 2021-22 हेतु बहुवैकल्पिक प्रश्नों को भी सम्मिलित किया जाएगा।
- अन्य अति लघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्नों में आंतरिक विकल्प (यथा-या अथवा कोई दो) उपलब्ध करवाए जाएंगे।
- निबंधात्मक प्रश्नों की संख्या कम की जानी है।
- विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी हेतु परीक्षा योजना (पैटर्न) के अनुरूप नमूने के प्रश्न पत्र (मॉडल प्रश्न पत्र) उपलब्ध करवाए जाएंगे। कक्षावार प्रश्न पत्र पैटर्न निम्नानुसार रखा जाना प्रस्तावित हैं-

कक्षा	प्रश्न पत्र पैटर्न
कक्षा 1-2	100% पहचान आधारित बहुवैकल्पिक (MCQ) प्रश्न (विषयानुसार पहचान आधारित प्रश्न) : पेन-पेपर टैस्ट हेतु।
कक्षा 3-5	100% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही /गलत, बहुवैकल्पिक प्रश्न : पेन-पेपर टैस्ट हेतु।
कक्षा 6-8	**अर्द्धवार्षिक परीक्षा हेतु :** 50% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही/ गलत, बहुवैकल्पिक प्रश्न, अति-लघुत्तरात्मक 30% लघुत्तरात्मक 20% दीर्घ उत्तरात्मक
कक्षा 9-12	**अर्द्धवार्षिक परीक्षा हेतु :** 40% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही /गलत, बहुवैकल्पिक प्रश्न, अति-लघुत्तरात्मक 30% लघुत्तरात्मक 30% दीर्घ उत्तरात्मक/निबंधात्मक

समस्त सम्बन्धितों द्वारा उपर्युक्त निर्देशों की अक्षरशः पालना निर्धारित समयावधि में करवाए जाने की सुनिश्चितता की जावे।

● **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. द्वितीय श्रेणी अध्यापक एवं समकक्ष स्तर के प्रकाशित वरिष्ठता सूचियों में नामांकन, विलोपन, संशोधन एवं योग्यता अभिवृद्धि के अंकन के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/वरि./के-2/ 11968/2019-20 दिनांक : 23.11.2021 ● विषय : वरिष्ठता सूची में नामांकन, विलोपन, संशोधन एवं योग्यता अभिवृद्धि के अंकन के संबंध में।

निदेशालय स्तर से द्वितीय श्रेणी अध्यापक एवं समकक्ष स्तर के प्रकाशित वरिष्ठता सूचियों में नामांकन, विलोपन, संशोधन योग्यता अभिवृद्धि के संभाग कार्यालयों से जारी आदेशों का परीक्षण उपरान्त राज्य स्तरीय आदेश जारी किये जाते है, इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 18-01-2021 के द्वारा पूर्व में प्रकाशित वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि हेतु 06 माह से पूर्व अर्जित योग्यता अभिवृद्धि के मामले में अंतिम तिथि 20 फरवरी 2021 निर्धारित की गई थी।

राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधिनस्थ) सेवा नियम, 2021 दिनांक 03.08.2021 से प्रभावी होने से पदौन्नति नियमों में संशोधन होने के कारण छः माह से पूर्व अर्जित योग्यता अभिवृद्धि का अंकन वरिष्ठता सूची में करवाने हेतु अंतिम तिथि में वृद्धि करते हुए 20 मार्च 2022 निर्धारित की जाती है। कार्मिक निर्धारित प्रपत्र में अपना आवेदन मय दस्तावेज कार्यालयाध्यक्ष/संस्था प्रधान/पीईईओ से अग्रेषित करवाकर सीबीईओ कार्यालय को 20 मार्च 2022 तक प्रेषित करेंगे। सीबीईओ कार्यालय समस्त प्रकरण संबंधित संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा संभाग कार्यालय को 22 मार्च 2022 तक आवश्यक रूप से प्रेषित करेंगे।

निर्धारित तिथि तक सीबीईओ कार्यालय से प्राप्त समस्त प्रकरण संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, संभाग द्वारा परीक्षण उपरांत कार्यालय स्तर से स्थाई वरिष्ठता सूची में इस हेतु उक्त कार्यवाही के आदेश प्रसारित कर दिनांक 25 मार्च, 2022 तक आवश्यक रूप से निदेशालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

उक्त तिथि के पश्चात 06 माह (परीक्षा परिणाम तिथि) से पुराने प्रकरण पर भविष्य में किसी भी स्तर पर विचार नहीं किया जाएगा। शेष निर्देश समसंख्यक आदेश दिनांक 08.04.2021 के अनुसार यथावत रहेंगे।

● **(काना राम), आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

5. मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/विविध दिवस/2018 दिनांक : 26.11.2021 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा। ● समस्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा। ● समस्त संस्थाप्रधान। ● विषयः मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : प्रमुख शासन सचिव, गृह (ग्रुप-7) विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर का पत्रांक : प.7(1) गृह-7/2021 दिनांक 26.11.2021

उपर्युक्त विषयान्तर्ग प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि राज्य के

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों (कक्षा 1 से 12) में शैक्षणिक गतिविधियाँ विभाग द्वारा जारी परिपत्र दिनांक 12.09.2021 द्वारा दिनांक : 15.11.2021 से 100 प्रतिशत क्षमता के साथ अनुमत किए गए है।

वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर राज्य में शिक्षण गतिविधियों के सुचारू रूप से संचालन हेतु समस्त शिक्षण संस्थाओं द्वारा निम्नांकित की पालना सुनिश्चित की जावे–

1. विद्यालय के शैक्षणिक व अशैक्षणिक स्टाफ एवं संस्थान आवागमन हेतु संचालित बस, ऑटो एवं कैब के चालक इत्यादि को 14 दिन पूर्व वैक्सीन की दोनों खुराक (1st & 2nd dose) अनिवार्य रूप से लेनी होगी।
2. शैक्षणिक व अशैक्षणिक स्टाफ/विद्यार्थियों के आवागमन हेतु संचालित स्कूल बस/ऑटो/कैब इत्यादि वाहन की बैठक क्षमता के अनुसार ही अनुमत होंगे।
3. शिक्षण संस्थानों में आने पूर्व सभी विद्यार्थियों द्वारा अपने माता–पिता/अभिभावक से लिखित में अनुमति लेना अनिवार्य होगा। वे माता–पिता/अभिभावक जो अपने बच्चों को अभी ऑफलाइन अध्ययन हेतु संस्थान नहीं भेजना चाहते उन पर संस्थान द्वारा उपस्थिति हेतु दबाव नहीं बनाया जाएगा। (Attendance optional) एवं उनके लिए ऑनलाइन अध्ययन की सुविधा निरंतर संचालित रखी जाए।
4. ऐसे विद्यार्थी जो ऑफलाइन अध्ययन करने नहीं आ पा रहे है, उनके अध्ययन की निरंतरता बनाए रखने के लिए पूर्व की भाँति ऑनलाइन अध्ययन सामग्री, स्माइल ग्रुप्स/आओ घर में सीखे अथवा विद्यालय द्वारा उपयोग में लिए गए अन्य माध्यम से, प्रति दिवस विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाना अथवा ऑनलाइन शिक्षण जारी रखा जाए।
5. शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रत्येक शैक्षणिक व अशैक्षणिक स्टाफ/विद्यार्थी की स्क्रीनिंग की व्यवस्था करनी होगी एवं इसके उपरान्त ही प्रवेश दिया जावे।
6. अध्ययन अवधि के दौरान संस्थान में एवं आवागमन के दौरान फेस मास्क पहनना अनिवार्य होगा। 'No Mask No Entry' की पालना आवश्यक है। किसी विद्यार्थी/स्टाफ द्वारा मास्क नहीं लगाया जाने पर संस्थान द्वारा मास्क उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाए।
7. नियमित कक्षाओं के अध्ययन के लिए छात्रों की बैठक व्यवस्था इस प्रकार की जाए कि प्रत्येक छात्र के मध्य कम से कम दो गज की दूरी सुनिश्चित हो सके।
8. शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रार्थना सभी (Assembly) एवं अन्य किसी भी प्रकार के भीड़भाड़ वाले कार्यक्रमों का आयोजन नहीं किया जाए।
9. मुख्य द्वार पर प्रवेश एवं निकास के दौरान संस्थान परिसर, कक्षाओं में सामाजिक दूरी (दो गज की दूरी) का ध्यान रखा जाए एवं संस्थान में किसी भी स्थान पर विद्यार्थी/अभिभावक/कर्मचारी अनावश्यक रूप से एकत्रित न हो। इसके साथ ही भिन्न–भिन्न कक्षाओं के आवागमन के समय में 15 मिनट का अंतराल रखा जाए ताकि बड़ी संख्या में विद्यार्थी एकत्रित न हो। पृथक–पृथक कक्षाओं का विद्यालय में आगमन एवं प्रस्थान समय निम्नानुसार अलग–अलग रखा जाना है–

एक पारी विद्यालय	कक्षा 9 व 12 का आगमन समय प्रातः 10.30 तथा प्रस्थान सायं 04.15 बजे तथा कक्षा 06 व 08 का आगमन समय प्रातः 10.15 तथा प्रस्थान सायं 04.00 बजे तथा कक्षा 1 से 5 हेतु आगमन समय प्रातः 10.00 तथा प्रस्थान सायं 03.45 बजे रखा जावें।
दो पारी विद्यालय	दो पारी विद्यालयों में कक्षा 1 से 5, कक्षा 6 से 8 तथा कक्षा 9 से 12 के आगमन एवं प्रस्थान समय में संस्थाप्रधान 15 मिनट का अंतराल रखना सुनिश्चित करेंगे ताकि भीड़भाड़ से बचा जा सके।

10. संस्थान परिसर में स्थित कैंटीन को आगामी आदेशों तक बंद रखा जावे।
11. प्रत्येक फ्लोर पर क्लासरूम एवं फैकल्टी रूम में कुर्सियों, सामान्य सुविधाओं एवं मानव संपर्क में आने वाले सभी बिंदुओं जैसे रेलिंग्स, डोर हैण्डलस एवं सार्वजनिक सतह, फर्श आदि प्रतिदिन सेनेटाइज किया जावे एवं खिड़की/दरवाजों को खुला रखा जावे ताकि हवा का पर्याप्त प्रवाह सुनिश्चित रहे।
12. संस्थान में प्रतिदिन काम में आने वाली स्टेशनरी एवं अन्य उपकरणों को सेनेटाइज कराना अनिवार्य होगा।
13. जिन शिक्षण संस्थानों द्वारा छात्रावास का संचालन किया जा रहा है, उनके द्वारा बाहर से आने वाले छात्रों का आरटीपीसीआर टेस्ट करवाया जाए व रिपोर्ट आने तक क्वारंटीन किया जाए।
14. सार्वजनिक स्थान पर थूकने पर प्रतिबंध है एवं उल्लंघन किए जाने पर नियमानुसार कार्यवाही किया जाए।
15. संस्थान परिसर में किसी भी विद्यार्थी/शिक्षकगण/कार्मिक के कोविड पॉजिटिव या फिर संभावित संक्रमण की स्थिति बनने पर संस्थान द्वारा संबंधित कक्ष को 10 दिनों के लिए बंद किया जाए।
16. किसी विद्यार्थी/शिक्षकगण/कार्मिक में कोविड–19 के लक्षण पाए जाने पर उसे तुरंत निकटस्थ अस्पताल/कोविड सेंटर में इलाज/आईसालेशन हेतु रेफर/भर्ती करवाया जाएगा एवं संस्थान द्वारा एंबुलेंस की व्यवस्था की जाएगी।
17. शिक्षण संस्थानों द्वारा माता–पिता/अभिभावक को यह परामर्श दिया जाए कि किसी भी छात्र या उसके परिवार के किसी भी सदस्य के बीमार होने पर उसकी सूचना विद्यालय/स्थानीय प्रशासन को दी जावे।
18. विभाग के अधिकारियों (संभाग/जिला/ब्लॉक स्तर के समस्त अधिकारी) द्वारा लगातार मॉनिटरिंग एवं निरीक्षण द्वारा विद्यालयों में

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

कोविड गाइडलाइन की पालना सुनिश्चित कराई जाए। कोविड गाइडलाइंस की पालना हेतु विद्यालय का संस्थाप्रधान व स्कूल प्रशासन पूर्णतया उत्तरदायी होंगे।

19. विद्यालय में विद्यार्थी लंच के समय अपने कक्ष में ही भोजन करेंगे, जिनके साथ कक्षा-अध्यापक का भी उसी कक्षा में लंच में रहना सुनिश्चित किया जाए। विद्यार्थियों द्वारा लंच टिफिन व भोजन का पारस्परिक उपयोग नहीं किया जावे।
20. विद्यार्थियों को पीने का पानी यथासंभव घर से लाने हेतु शिक्षकों द्वारा प्रेरित किया जाए तथा पानी की बोतल के पारस्परिक (अदला-बदली) उपयोग से बचने हेतु पाबंद किया जाए। घर से पानी नहीं ला पाने वाले विद्यार्थियों हेतु विद्यालय परिसर में समुचित स्वास्थ्यप्रद स्थान शुद्ध एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
21. आगामी आदेशों तक मिड-डे-मील में पूर्व की भाँति विद्यार्थियों हेतु सूखा राशन ही दिया जाएगा।
22. विद्यालय/छात्रावास के समस्त परिसर, फर्नीचर, उपकरण, स्टेशनरी, शौचालय-मूत्रालय, भण्डार कक्ष, पानी की टंकियां अथवा अन्य स्थान, किचन, प्रयोगशाला एवं अन्य समस्त स्थानों को संक्रमण मुक्त करने के लिए सेनेटाइज किया जाना संस्थाप्रधान द्वारा सुनिश्चित किया जाएगा। विद्यालय में हाथ धोने की सुविधा सुनिश्चित की जाए। इस हेतु लिक्विड हेंडवाश/साबुन एवं जल की नियमित व्यवस्था का दायित्व विद्यालय का होगा।
23. विभिन्न शहरों/कस्बों/ग्रामीण क्षेत्र में कोविड संक्रमण की तात्कालिक परिस्थिति के मद्देनजर किसी भी विद्यालय/हॉस्टल इत्यादि को कुछ समय के लिए बंद करने या अन्य कोई प्रतिबंध लगाने के लिए जिला कलक्टर अधिकृत होंगे ताकि उनके द्वारा स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप निर्देश जारी किए जा सके।

उपर्युक्त निर्देशित एसओपी बिन्दुओं का भी मूल मानक संचालन प्रक्रिया S.O.P. के साथ समस्त सम्बन्धितों द्वारा प्रदत्त निर्देशानुरूप पालना एवं क्रियान्विति सुनिश्चित की जावे।

● **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : दिसम्बर, 2021	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.12.21	बुधवार	जयपुर विश्व समता दिवस/विश्व एड्स दिवस-गैर पाठ्यक्रम				
02.12.21	गुरुवार	जोधपुर	8	संस्कृत	5	कण्टकेनैव कण्टकम्
03.12.21	शुक्रवार	कोटा	10	हिन्दी	--	समास
04.12.21	शनिवार	उदयपुर	गैर पाठ्यक्रम आधारित			
06.12.21	सोमवार	जोधपुर	8	संस्कृत	4	सदैव पुरतो निधेहि चरणम्
07.12.21	मंगलवार	बीकानेर	12	भूगोल	6	जल संसाधन
08.12.22	बुधवार	जयपुर	12	जीव विज्ञान	15	जैव विविधता एवं संरक्षण
09.12.21	गुरुवार	जोधपुर	9	उर्दू	4	ओस
10.12.21	शुक्रवार	जयपुर	गैर पाठ्यक्रम आधारित			
11.12.21	शनिवार	कोटा	गैर पाठ्यक्रम आधारित			

● **(इन्द्रा सोनगरा)** प्रभारी अधिकारी, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर।

मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर!

शिविरा पत्रिका में 'मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर!' के नाम से स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया गया है, जिसमें शिक्षक स्वयं रिपोर्टर की भूमिका में होंगे जो अपने कार्यरत विद्यालय के नवाचार, उत्कृष्ट शैक्षणिक-सह शैक्षणिक गतिविधियों, भामाशाहों-दानदाताओं के सहयोग से विद्यालय के संस्थागत विकास, पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन के अनुपम कार्यों तथा विद्यालय स्टाफ के ऐसे अभिनव कार्य जो प्रेरकीय-अनुकरणीय हो, की रिपोर्ट मुद्रित अथवा सुपाठ्य हस्तलिपि में मय फोटोग्राफ्स संस्थाप्रधान से प्रमाणित करवाकर स्वयं के नाम, पद, कार्यरत विद्यालय का नाम मय मोबाइल नम्बर शिविरा पत्रिका के ई-मेल shivira.dse@rajasthan.gov.in अथवा वरिष्ठ संपादक, शिविरा पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011 के पते पर भिजवाएँ ताकि शिविरा पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित की जा सके।

-वरिष्ठ सम्पादक

पुस्तक समीक्षा

नेव निवाळी

कहानीकार: किरण राज पुरोहित 'नितिला'; **प्रकाशक** : सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर; **संस्करण** : 2020; **मूल्य** : ₹ 250; **पृष्ठ** : 120

मां, जौड़ायत, बैन, बेटी आद देवी रूपां में सिणगारियोड़ी सगती स्वरूपा ऐक लुगाई सांप्रत ई कुदरत री कोख है। संसार रो सिरजण करवा वाळी नारी नै भगवान नैहचा सूं बैठ'र घणी चुतराई सूं घड़ी। भगवान ऐक लुगाई री मानखा दैही में असंखां खासियतां रची है जिको उणनै समाज रै मांय 'मातृशक्ति' रै पूजनीक रूप में थरपावै। बखत रै परियाण रुत माथै कुदरत रै मांय जिका बदळाव दैखीजै वा री वा बातां ऐक असतरी री जीयाजूण में ऊमर मुजब लखावै। ओ बात सौळे आना साची है कै ऐक लुगाई घणा भी देखै जद उणरी ऊमर पाकै। ऐक लुगाई आपरै देही रा दोखा भुगत मानखै रो सिरजण करै। असल में ओ उणरी सिरजण स्रस्टी का कुदरती वरदान है जिणरै कारण ई उणरौ हेतु अर अस्तित्व है। विधना रै इण नारी परक वरदानां सूं ई तो संसार चालै। अग्यानता अर नासमझी रै पांण मात सगती रा ओ वरदान कदैई कदै अळूझाड़ बण जावै। ऐक टाबरी ज्यूंई बाळपणै सूं लबाकड़ी ऊमर में पग राखै उण बखता वीं रै सरीर में आवण वाळा औचक बदळाव देख वा हाकबाक व्है जावै। इण अबखी वैळा में आं रीतां सूं वाकिब उण बाई री मां ऐक सखी, साथणकी, सलाहकार बण धीजौ दैती समझावै कै ओ लुगाई जमारै रा गीरबैजोग ऐनाण है अर औ आबाचूकौ अळूझाड़ उणरै नार जूण रो सुखद एहसास बण जावै।

साहित रश्मि श्रीमती किरण जी राजपुरोहित 'नितिला' री पौथी 'नेव निवाळी' लुगाई जीयाजूण रै झांझावतां अर अळूझाड़ां रो खुलासौ अर निवेड़ौ करती निगै आवै। वाकई लुगाई जूण रा कैई पंपाळ हुया करै। ऐ तो ऊरमे वाळी असतरी जात ई है जकौ आपरी देही माथै प्रक्रती रा पंपाळ हर महिणै हंसी खुशी झेलै। कवयित्री अर कहाणीकार किरण जी री पोथी 'नेव निवाळी' लुगाई जमारै रै बाळपणै सूं लैय बूढ़ापै तक रा कैई खाटा-मीठा अनुभव पाठकां नै बांटै। कलम कुमदुनी किरण जी री काळजयी कृति 'नेव निवाळी' पाठकां नै कदैई तो बाळपणा रै निरबोध झूला में झूलावै तो कदै चढ़ती जवानी रा झोंका दिरावै तो कदै कोलेज रे रंगीलां दिनड़ां री याद दिलावै तो कदै लाज, मरजाद अर प्रीत रै अबोठ प्यालां री निछरावळ करावती निगै आवै तो कदै घर ग्रैस्थी री जिम्मेदारी रै सागै सामाजिक परंपरावां री सांगोपांग झलक दिखावै।

कल्पनावां रै कलेवर में वींटीज्योड़ी 'नेव निवाळी' री इगयारै कहाणियां हकीकत रै धरातळ माथै घणी सुभाविक लागै। पाठकं नै यूं लागै के ओ उणरै खुद री जिनगाणी में घटित विगत बाच रियौ है। काचा कंवळा कहाणी, ऐक किशोरी कन्या नंदिता नै आपरै भावी जीवण री चुणौतियां सूं मुकाबलौ कर ऐक जननी री जूण रो हेतु समझावै-

'मां, दादीसा, भाभीसा, जीजी अर कैई बडेरियां री हजारूं हजार सीखां री बातां उणनै उदास कर देवती। कित्ती बातां वै वतावती। हर लुगाई कनै न्यारी बात, न्यारी सीख। ओह! मुलक भर री सीखां कांई उण सारूं ईज है? वा पाछी फुंदी होवणो चावै पण पाछौ पैला ज्यूं क्यूं नी हुयीजै? वा उडाण कांई ठाह कठै गमगी? कांई बात है जकी रौके उणनै। ठाह नी कठै सूं धौबा भर-भर लाज माथै कोई फैंकतो जावै है।' (काचा कंवळा पृ. सं. 17)

नितिला जी री इण पौथी रै मायं ऐक कानी कोलेज जीवण री मस्ती रै सागै संजोग रो सुहावणौ समंदर हिलोरां लैवे तो दूजी कानी होणहार रै क्रूर हाथां बाळ विधवा रमा रै अंतस रै ऊकळते आधण री आंच सूं पाठक संसार री छिणभंगूरता में खौय जावै-

'ऐ दुख खतम तो कदै होवण ही नी है। बैमाता लुगाई रा दुख भाटा पर लिखै जका कदैई हळका नी पड़ै। मैह, आंधी, तावड़ौ, आंसू अवळा उणरै करमां री तासीर नी बदळ सकै। जिका लिखीजै वै ईज भोगणा पड़ै।' (तिरसी नैव, पृ. सं. 26)

ऐक कामणी रै काचै काळजै रा कळझळता कंवळा कंवळा भाव मांडण में माहिर किरण जी राजपुरोहित रै कंठ अर हियै रै मांय मां सरस्वती रो अकूत खजानौ कैळ करतौ निजर आवै। व्है क्यूं नी, आप ब्रह्मा-पुतरी जो ठैर्या, मां शारदा रा लाडेसर जो है। आपरी कलम में पाठकां नै बांधै राखण री सांवठी खिमता है। तिरसी नेव, सीली संद जमीं, थळगट मत डाक आगळ आद लांबी लांबी कहाणियां रै मांय लेखिका जी ऐड़ा फूठरा बिंब उकेरिया है जिणसूं पाठक पूरी कहाणी बाच्यां बिगर रैय ई नी सकै।

पौथी 'नेव निवाळी' रै मांय विदुषी किरण जी मायड़ भासा रै समृद्ध सबदकोस रै मौतियां रै सागै आम जन रै दिहाड़ी प्रचलन में अंगरेजी रा लोक सबद ई नगीनां रै ज्यूं जुड़्यां है। विदेशी भासा रा कैई ऐड़ा सबद है जको राजस्थानी रै अथाह समंदर में रिळ मिळ ग्या है- सेल्फी, ओनलाइन, फ्रेंड, क्वीन, ड्रीम, ट्रेफिक जाम आद सबदां रो सांगोपांग मेळाप इण पोथी में निजर आवै।

ऐक अबळा रै अंतस री ऊंडाई में उफणते जवालामुखी री थाह ऐक लुगाई बिना कोई नी ले सकै। एक मां री पळपळती पीड़ तो ऐक मां ईज समझ सकै। लेखिका कवयित्री किरण जी राजपुरोहित रै मांय मातृत्व, ममत्व अर वात्सल्य रो अथाह सागर हिलौरां लैवे। सांवठी पढ़ाई, सामाजिक मेळजोळ, परठा वाळो कुटुंब, साहितकारां री संगत, सतत स्वाध्याय, लिखणे रो अभ्यास, परिवार रो माहौल अर मां सरस्वती री किरपा बिना साहित सिरजण नी व्है सकै। नितिला जी भागशाली है जिकौ इतना सुख कैवट्या। आपरी अंजसजोग लेखणी नारी हिवड़ा रै मनोभावां नै घणी चुतराई अर मासूमियत सूं उकेरै। ऐ चीजां ऐक सू हिरदै बिना नी ऊकलै अर नी मांडीजै।

सबद शिल्पी आदरजोग नितिला जी आपरी पौथी में नारी जीवण रै अळूझाड़ नै सांवठी शैली सूं सुळझावण री ठावकी खेचल कीधी है। इण पौथी रै बाच्यां पछै हर किशोरी रै मांय गीरबैजोग ग्यान वापरैला। मनमोहणै मधुर आखरां अर भावां सू सराबोर 'नेव निवाळी' नुवीं पीढ़ी नै सद मारग बतावती दीसै। गरीब अर लाचार पण मेहनती अबोध बाळक री नादारगी माथै अमीर मिनखां रा आखर पाठक रो काळजौ

Rajasthan Education Department

लूरां लूरं कर दे- 'आंटी....चरखी लेयलो.... दिन ढळण वाळौ है।' (बरंगो तावड़ो, पृ. सं. 90)

वाकई लेखिका री कलम मिनखपणै रा भाव उकेरण में महारत है। हर जगै कंवळापणौ अर मासूमियत निगै आवै। सबदां री संजीदगी रै पांण कठै कोई बणावटीपणौ नी दीसै।

किरण जी राजपुरोहित री पोथी 'नेव निवाळी' साहित रै हरैक पागौतियां माथै खरी उतरै। पौथी रा कला पक्ष अर भाव पक्ष घणा अटीपा अर सरावणजोग है। साहित री दीठ सूं ओ पौथी घणी सतोल है जिणमें अलंकार, समास, मुहावरा, लोकोक्ति, व्याकरण रै सागै सरस मीठी शबदावली परूसी गई है। आपरी कहाणियाँ में साहित रै सगळां रसां रो सांगोपांग परिपाक हुयौ है जिणसूं पाठक आगै सूं आगै वधतौ जावै कै आगे कांई व्हैला।

म्हनै पूरौ पतियारो है के साहितकारा नितिला जी री आ पौथी नार जात रै नैसर्गिक अळूझाड़े नै सुळझाय उणरे चित में चानणौ करेला। ऐक'र फैरूं शिक्षाविदुषी श्रीमती किरण राजपुरोहित 'नितिला' जी नै सद्य प्रकाशित पौथी 'नेव निवाळी' री मौकळी बधाइयां अर शुभकामनावां इण दो दूहां रै मारफत निजर करूं-

किरण जी री किताब नै, धौबा भर धनवाद।
सदा बसै उर शारदा, दाखूं लख लख दाद।।
आखर मांड्या औपता, टणकी लगाया टीप।
नेव निवाळी निरमळी, देत बधाई 'दीप'।।

समीक्षक : दीपसिंह भाटी 'दीप'
प्राध्यापक
217 घ, वार्ड नंबर 43, इंद्रा कॉलोनी, बाड़मेर (राज.)-344001
मो: 9460221222

काडर चेंज

लेखक: ओम प्रकाश तंवर; **प्रकाशक :** सनातन प्रकाशन, जयपुर; **संस्करण :** 2021; **मूल्य :** ₹ 140; **पृष्ठ :** 96

दादी-नानी से मौखिक परम्परा से प्रारम्भ हुई कहानी विधा आज साहित्य जगत में सर्वाधिक पसन्द की जाने वाली विधा है। कहानी एक घटनाक्रम को क्रमिक विकास के साथ प्रस्तुत करते हुए मनोरंजन, ज्ञान एवं जिज्ञासा के साथ पाठक को बांधे रखने का काम करती है। इस कहानी विधा के साहित्य-भण्डार में वृद्धि करते हुए सेवानिवृत्त शिक्षाविद् ओमप्रकाश तंवर ने साहित्य जगत को भेंट की है।

काडर चेंज नाम से एक नवीन राजस्थानी कहानी पुस्तक। कहानियों के इस गुलदस्ते में कुल 31 कहानी पुष्प रखे गए हैं जो प्राचीन व अर्वाचीन दोनों ही तरह के दैनिक जीवनचर्या अनुभवों को समेटते हुए साहित्यिक सुवास बिखेरने का कार्य कर रहे हैं। कहानियाँ न तो लघुकथा के समान हैं और न ही बहुत लम्बी। सामान्य घटनाक्रम से एक सहज शुरुआत कर कब कहानी समापन की ओर बढ़ जाती है, पता ही नहीं चलता। पाठक कथानक से बंधा हुआ एक के बाद एक पृष्ठ पलटते ही रहता है, यह कथानक की सरलता, भाषा की प्रवाहशीलता और लेखकीय कौशल का ही कमाल है।

कहानी संग्रह की प्रथम कहानी बेट्यांरी करामात एक ओर जहाँ हुणताराम के रूप में अभावग्रस्त किसान की व्यथा बयान करती है, वहीं ग्रामीण परिवेश में भार समझी जाने वाली बेटियाँ ही इस कथा की नायक है। हुणताराम की दोनों बेटियाँ सोनू और मोनू अपनी सहेली रमा के सहयोग से खेत को बिना बैलों के ही स्वयं जोतकर अनूठी पहल करती है। इस कथा के माध्यम से लेखक ने बेटियों के महत्त्व को बताने का तो प्रयास किया है, किन्तु आज के परिवेश में बैलों की जगह स्वयं को जोड़कर खेत जोत देना यथार्थ के धरातल पर डगमगाता सा विचार ही लगता है।

संग्रह की कहानी लिछमी संदेश देती है कि पुत्री का जन्म कोई अभिशाप नहीं है। इन दिनों अवांछित पुत्री जन्म पर उसे भगवान भरोसे फैंक देना आम बात हो गई है। ऐसे समाज में गणपतराम जैसे लोगों की दस्तक बहुत जरूरी है। बनवारीलाल द्वारा गठरी में बाँधकर कन्या को जन्म के बाद झाड़ियों में फैंकता देखते हुए गणपतराम का विरोध करना और बाद में स्वयं उसी कन्या को अपनाने की पहल करना एक सकारात्मक संदेश देता है। आज जरूरत है ऐसे लोगों की जो खुली सोच के साथ आगे आए और कन्या भ्रूण हत्या और शिशु हत्या जैसे मामलों को रोकते हुए व नई पहल करते हुए समाज को जीने का ढंग बता सके। बीनणी रो पगफेरो कहानी में जहाँ बाकी कन्याएँ अपने-अपने स्वार्थ की पूर्ति के बारे में सोच रही है, वहीं इक्कीसवीं कन्या स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर जनमानस के भले का विचार रखती है और शिव पार्वती से अच्छी वर्षा करने का वरदान माँगती है।

न्यारो चूल्हो कहानी में सामूहिक परिवार के साथ असंतुलन से उपजी समस्या को उकेरा गया है तो घर ही घर में कहानी में असमय वैधव्य के गर्त में गिरी स्त्री सरला को सुलझी मानसिकता का परिचय देते हुए परिवारजन द्वारा देवर के साथ पुनर्विवाह के लिए राजी करके एक अनुकरणीय सन्देश दिया गया है। काम रो बंटवारो कहानी यह काम आदमियों का, यह काम औरतों का जैसी सोच से ऊपर उठकर काम हम सबका की रीति अपनाने की सीख देती है। कहानी संग्रह की प्रमुख कहानी काडर चेंज, जिस पर संग्रह का नामकरण किया गया है, एक नए तरह की कहानी है।

इस कहानी में नगरपालिका का सफाई कर्मचारी हीरालाल, सफाईकर्मी होते हुए चैयरमैन की गाड़ी चलाता है। इससे उसके सहकर्मियों में ईर्ष्या भाव का उदय हो जाता है और वे उसके गाड़ी चलाने के कार्य का विरोध करते हैं, विरोध से उत्पन्न स्थिति पर चेयरमैन और ई.ओ. दोनों विचार करते है और हीरालाल को यथावत गाड़ी चालक का काम देने के लिए आधिकारिक रास्ता निकालते हुए उसका काडर ही बदल देते हैं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने कार्यालयों की कार्यप्रणाली का सजीव चित्रण किया गया है। जीवण री सांझ कहानी में ढलती उम्र के पड़ाव का सुन्दर चित्रण किया गया है। भानीराम और गोपीराम दो पुराने साथी मिलकर अपने अतीत का स्मरण कर आनंदित हो रहे हैं और उन दिनों को जलेबी और पकौड़ी के बहाने लौटाने की कोशिश कर रहे हैं। सेवानिवृत्ति के बाद व्यक्ति अकेलेपन के अंधकार में धँसता चला जाता है। बच्चे बड़े होकर जीवन की धारा में बहने लग जाते हैं और वरिष्ठजन बहती धारा में पड़े पत्ते कचरे आदि की तरह किनारे लग जाते हैं। ऐसे में पुराने साथियों का मिलाप सुखानुभूति

Rajasthan Education Department

कराता है। फीस कहानी में डॉक्टर वर्ग की मानवता को पीछे करते हुए धन को अति महत्त्व देने की वर्तमान मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। फौजी भायो कहानी में एक सैनिक परिवार की मर्म व्यथा और फौजी नमनसिंह के आमजन के प्रति स्नेह का सजीव चित्रण किया गया है।

मजबूरी कहानी लॉकडाउन के दौरान एक तरफ अपने-अपने घरों में रहने का आदेश तो दूसरी तरफ पिता के प्रति संतान का दायित्व बंटवारा बताकर वर्तमान समय की एक कटु स्थिति का मार्मिक वर्णन करने में लेखक को पूरी सफलता मिली है। वर्तमान में अस्पतालों में मची लूट और मानवीय संवेदनाओं को ताक पर रखकर डॉक्टरों का अमानवीय व्यवहार आमजन के प्रति बहुत ही पीड़ादायी स्थिति है। जिनेरिक दवाई कहानी के माध्यम से लेखक ने दवा निर्माता कम्पनियों द्वारा आमजन के मन में यह भय पैदा करके कि ब्राण्डेड दवाई ही लेनी है, एक आर्थिक व मानसिक शोषण की स्थिति को स्पष्ट करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

लेखक ने एक शिक्षक के रूप में राजकीय सेवा करते हुए घाट-घाट का पानी पीया है। सामाजिक सरोकारों से जुड़ा व्यवसायी होने के कारण आपका समाज के हर वर्ग से गहरा जुड़ाव होने के कारण हर तबके का अनुभव आपने किया है, जिसका परिचय आपकी कहानियों के कथ्य के माध्यम से पाठकों तक पहुँच सकेगा। निश्चय ही काडर चेंज नामक कहानी पोथी पाठकों को पसन्द आएगी और उनकी साहित्यिक क्षुधा को तृप्त करने में सफल हो सकेगी।

पुस्तक का आवरण आकर्षक है तथा चित्र शीर्षक कहानी के कथानक को प्रकट करने वाला है। छपाई सुन्दर व आकर्षक है। सनातन प्रकाशन की तरफ से यह प्रकाशित कहानी की पुस्तक साहित्य जगत के लिए अनुपम सौगात रहेगी और निश्चय ही पाठकों की कसौटी पर खरी उतर सकेगी, ऐसा विश्वास है।

समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
प्रधानाचार्य
वार्ड नं. 9, मालासी मंदिर के पास, तारानगर,
चूरू (राज.)-331304
मो: 941388820

फाइव स्टार

लेखक : डॉ. मदन गोपाल लढ़ा; **प्रकाशक :** सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर; **संस्करण :** 2021; **पृष्ठ संख्या** : 64; **मूल्य :** ₹ 100

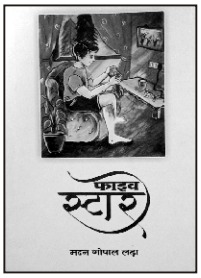

बाल मनोविज्ञान पर आधारित ये बाल कहानियाँ आज के सच को उजागर करती है।

कवि, कथाकार, अनुवादक और बाल मन के रचनाकार डॉ. मदन गोपाल लढ़ा का राजस्थानी भाषा में यह तीसरा बाल कहानी संग्रह 'फाइव स्टार' हाल ही में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कुल पंद्रह बाल कहानियाँ हैं। पूर्ण रूप से बाल मनोविज्ञान पर आधारित ये बाल कहानियाँ आज के सच को उजागर करती है।

एक्सपायरी डेट की दवाई के उपयोग को दर्शाती बाल कहानी 'मियाद पार दवाई' हो, चाहे रासायनिक खाद से फसलों को नुकसान पहुँचा रही 'बिना जहर री फसल', बच्चों द्वारा मोबाइल पर खेले जा रहे जानलेवा गेम्स पर आधारित शीर्षक कहानी 'फाइव स्टार' हो या आवारा लड़कों द्वारा छात्राओं से छेड़छाड़ के मामले को दर्शाती 'गरिमा पेटी', बच्चों की जिद हो या जंगल के जीवों पर दया भावना की बात। बच्चों की आगे की शिक्षा के लिए विषय का चयन हो या घर-परिवार में फैलते नशे की समस्या। इन सभी सामयिक और समस्या ग्रस्त विषयों पर लेखक मदन गोपाल लढ़ा ने न केवल सरल एवं सहज शब्दों में बाल कहानियों का ताना-बाना बुन कर प्रस्तुत किया है बल्कि बाल कहानियों में उठाई गई समस्या का बहुत ही सटीक और सरल ढंग से समाधान भी प्रस्तुत किया है।

संग्रह में पत्र शैली की बाल कहानी समेजा पात्र के माध्यम से 'बेटी रो कागद' इतनी मार्मिक ढंग से लिखी है कि पाठक भावुक हो उठता है। वहीं डायरी शैली में लिखी गई बाल कहानी 'डायरी रा पाना' में डायरी लिखने की महता दर्शाई गई है।

बाल कहानी संग्रह 'फाइव स्टार' का आवरण बहुत ही मनमोहक है। वहीं बढ़िया कागज पर उत्कृष्ट छपाई और कहानियों के साथ दिए गए चितराम पुस्तक की खूबसूरती में चार चाँद लगाते हैं। इतनी सरल, तरल और सहज राजस्थानी बाल कहानियों के लिए मैं कृति 'फाइव स्टार' के लेखक डॉ. मदन गोपाल लढ़ा को बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

समीक्षक : **दीनदयाल शर्मा**
10/22 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
हनुमानगढ़-335512 (राजस्थान)
मो. 9414514666

दो दूनी पाँच

लेखक : भंवरलाल जाट; **प्रकाशक :** अनन्य प्रकाशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032; **संस्करण :** 2021; **पृष्ठ संख्या** : 142; **मूल्य :** ₹ 325

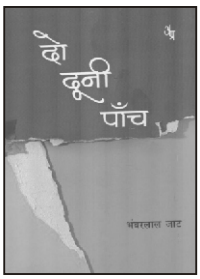

बुरी से बुरी घटना का भी कहीं न कहीं कोई सकारात्मक पक्ष जरूर होता है। इसी प्रकार पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से जारी कोरोना महामारी की घटना के गंभीर और घातक परिणाम ही ज्यादा हैं लेकिन कहीं ना कहीं इसका भी कुछ सकारात्मक पक्ष देखने को मिलेगा। विशेषकर लॉकडाउन के दौरान एकांतिक जीवन जीने की मजबूरी के दौरान बहुत से लोगों को अपना आत्मावलोकन कर चिंतन-मनन का अवसर मिला। श्री भंवरलाल जाट द्वारा सृजित कृति 'दो दूनी पाँच' के आकार लेने का श्रेय भी इसी महामारी के लॉकडाउन को बहुत कुछ जाता है। लेखक ने स्वीकार किया है कि अपने हृदय में कुलबुलाते भावों को यत्र-तत्र अभिव्यक्ति मिलती रहती थी, लेकिन कोरोना के समय जब लॉकडाउन में काफी वक्त मिला तो इस विषय में गंभीरता से सोचने और सोचे हुए को क्रियान्वित करने का अवसर मिला। कुछ साहित्यिक मित्रों से सोशल मीडिया के माध्यम से आदान-प्रदान द्वारा मन के भाव शब्दों में मूर्त हुए और उसी का परिणाम है कि एक काव्यकृति जिसमें विभिन्न भावों को व्यक्त कर लेखक ने अपने कवि मन को प्रकट किया है।

Rajasthan Education Department

समीक्ष्य कृति 'दो दूनी पाँच' में जहाँ एक ओर एक ठेठ ग्रामीण, खेती किसानी और लोक जीवन से जुड़े व्यक्ति के भाव का उद्घाटन है, वहीं दूसरी ओर एक गंभीर साहित्य अध्येता के शास्त्रीय चिंतन-मनन की झलकियाँ भी हैं। कहीं-कहीं ठेठ ग्रामीण परिवेश के चित्र हैं, तो कहीं उनके शास्त्रीय चिंतन-मनन और कबीर जैसे कवियों की गूढ़ वाणी की झलक दिखाई देती है। 'दो दूनी पाँच' संकलन में अपने आसपास के जीवन में सहज घटित होने वाली घटनाओं के प्रति एक संवेदनशील व्यक्ति की प्रतिक्रिया को सीधे-साधे शब्दों में उद्घाटित किया गया है, तो दूसरी ओर अपने सामाजिक परिवेश में दिखाई दे रही बुराइयों सांप्रदायिकता, ऊँच-नीच, जातिवाद आदि का चित्रण मिलता है। कुछ कविताओं में कवि एक सृजन धर्मी के रूप में काव्य कला और भावाभिव्यक्ति पर भी अपने विचार व्यक्त करते हैं। कुछ कविताओं में कवि का एक शिक्षक के रूप में और उससे भी ऊपर एक इंसान के रूप में कर्त्तव्य के प्रति सर्मपण का भाव है। कबीर की तरह का प्रभाव अपने लेखन में लाना चाहते हैं-

अपनी बात में तू असर पैदा कर
तू समंदर सा जिगर पैदा कर।
बात थी जो रहितन कबीर में
अपनी बात में वो सुगंध पैदा कर।
बात एक तरफा न बनेगी भंवर
जो इधर है वह उधर पैदा कर।
मज़ा लेना है जिन्दगी का गर साथियों
एक बच्चे-सी तू नज़र पैदा कर।

काव्य संग्रह का शीर्षक 'दो दूनी पाँच' व्यंजनात्मक है। कवि के अनुसार ज़िंदगी का गणित दो और दो चार की तरह सीधा सादा नहीं होकर बड़ा जटिल और उलझा हुआ है, जिसमें दो और दो का जोड़ अथवा गुणा हमेशा चार न होकर कभी-कभी पाँच भी होता है अर्थात जीवन गणित के सूत्रों की तरह सरल व सपाट ना होकर जटिलताओं से भरा हुआ है। कवर पेज पर लिखी कविता

स्वार्थों की लंगड़ी भिन्न में जीवन का
गणित उलट-पुलट गया है,
प्रतिज्ञाओं के जाल और शपथों वाली
सौदेबाजी को
राजमार्ग के सांचे में फिट करके
अपरिचित आकर्षण से अलगाव की
अनंत चेष्टा के बावजूद पगडंडियों के सहारे
उजड़ वन में
दूर क्षितिज के अनहदी स्वर ने पुकारा है
और जीवन के गणित को नकारा है।
कभी-कभी एक और एक सच है
तो कभी-कभी जीवन दो दूनी पाँच है।

'दो दूनी पाँच' कविता में भी यही भाव व्यक्त हुआ है, सुनने में भले ही गलत या **अटपटा लगे, मगर सच है कि दो दूनी चार नहीं, पाँच होते हैं। नहीं है जीवन का फिक्स फार्मूला और कोई निर्धारित ढांचा। उतना ही उघड़ता है, जिसने जितना बांचा।**

वर्तमान समय में बहुत कुछ गलत घटता हुआ देखकर भी अनदेखा करने की प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए आँख कविता में कवि ने लिखा है, कि **आँखों के सामने गलत होते देखना अंधेपन से भी बदतर हालात है, काश अंधे होते तो शायद न मंदे होते, काफी कुछ ठीक होता और ठीक से धंधे होते।**

सीधी बात को भी सीधा नहीं समझ कर हम उसमें कोई उलझाव देखना चाहते हैं, क्योंकि हमारा व्यक्तित्व ही सीधा सरल नहीं होकर जटिल हो गया है, **उलझे हैं मकड़ी के जाले की तरह, फिर कैसे समझ पाएँगे ऋजुता को, सहजता को और शांत-प्रशांत को।**

अपने अंधभक्त चाहने की मनोवृत्ति, जिसमें आदमी केवल भीड़ को अपना अनुगामी बनाए रखना चाहता है, उस पर मुझे भीड़ चाहिए कविता में व्यंग्य किया गया है:- **मुझे आदमी नहीं, सिर्फ तख्ती पर टंगे आदमी चाहिए, आदमी का क्या भरोसा, कल को आज़ादी मांगने लग जाए तो।**

इसी क्रम में छवि युग कविता में अपने आप को जो है, उससे इतर दिखाने का जो प्रचलन है, उस पर व्यंग्य किया गया है **चमको खुद, और चमकाओ औरों को, बढ़ने दो आगे प्यारे दुलारे चोरों को, छवि युग है।** काश हम इंसान होते कविता में अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए जिस प्रकार मनुष्य को संप्रदायों और जातियों में बांटा गया है, उस पर व्यंग्य के साथ हास्य का भी तड़का है **कृषि प्रधान देश में, कब कुर्सी प्रधान हो गई है, पता ही नहीं चला, कौन था वो मनचला जिसने तूंतड़ा को बाजरी और बाजरी को तूंतड़ा करके, सब उलटफेर कर डाला, हाय रे मार डाला....., गीत गुनगुनाते हुए जियो जी भर के।**

अदाओं में स्वार्थ से वशीभूत होकर एकदम से बदल जाने की मनुष्यवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है और उसे ज़माने की अदा बताया गया है तो गरीब अमीरी में फैशन के नाम पर अमीरों द्वारा महंगे कपड़ों को फटे पुराने बनाकर पहनने पर व्यंग्य है।

'जानना मना है' कविता का भाव है कि हर कोई पिछलग्गू ही बनाए रखना चाहता है न कि किसी को सक्षम बनाने में मदद करे। नींद में वर्तमान जीवन शैली में जीवन का सबसे आवश्यक अंग नींद भी हमने खो दी है **पद की मादकता से, पाने की अनंत तृष्णा से, आजकल उड़ चुकी है नींद, पैसों की अधिकता से, खानी पड़ती है गोलियाँ नींद के लिए।** जीवन के हर क्षेत्र में बाज़ारवाद का बोल-बाला है और हम उपभोक्ता संस्कृति में बुरी तरह धंस चुके हैं। **ज़माना बाज़ार वाद का है, बिकती है हर चीज़, रोना भी बिकता है और हँसना भी। ईर्ष्या भी बिकती है, बिकता प्रेम भी। शब्द बिकते, आवाज भी।** हमें जैनेंद्र के इसी शीर्षक वाले लेख की याद दिलाता है।छत पर कविता में अति महत्त्वाकांक्षा की विडम्बना है **मगर आदमी की सीढ़ियाँ बनाकर चढ़ना कोई समझदारी नहीं। रसोईघर में चूल्हे पर पाव रखकर धुंआकाश के रास्ते छत पर जाना भी कोई जाना हुआ।**

महामारी काल ने मास्क की महिमा से परिचित कराया है तो लेखक ने इसी में मास्क अर्थात् मुखौटे लगाने की मानवीय कला जो कि वर्तमान में अपने चरम पर है, पर व्यंग्य किया है। **मास्क में अच्छा बना रहता हूँ और ईमानदारी से तना रहता हूँ। तेरा वैभव अमर है, जब तक इंसानियत की वैक्सीन न आ जाए।** सब कुछ

Rajasthan Education Department

भूल कर समझौतों के बल पर जीवन जीने की प्रवृत्ति पर सौदा कविता में कहा है कि नानक की तरह सच्चा सौदा करके अपना जीवन सफल कर सकते हैं लेकिन हम क्षुद्र स्वार्थ के चलते ज़िंदगी भर मन-वचन-कर्म के सौदों में जीवन व्यर्थ कर रहे। तथाकथित स्वयंभू समाज सुधारक जो आत्म सुधार से बिल्कुल वंचित लोग हैं, इससे समाज सुधार के चोले में प्रपंच रच कर सफल होना चाहते हैं, सच्चा समाज सुधारक मौन रहता है। इस के बहाने क्या-क्या नहीं होते, जो लगे हैं आत्म सुधार में वह तो मौन रहते हैं, उनको देखकर कोई सुधरे तो सुधरे। वर्तमान ग्रामीण जीवन में आ चुकी बुराइयों को आधुनिक गाँव काव्य में रेखांकित किया है मैं उठवा देता हूँ बेमतलब के मुद्दे, ईर्ष्या, द्वेष, घमंड, मूंछ का सवाल और अनेक बवाल। मानवीय करुणा से व्यक्तित्व के बड़प्पन के प्रदर्शन के स्थान पर धन और पद की प्रतिष्ठा के बल पर बड़प्पन जताने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य मानवता में किया गया है। **अब चाहिए दुकान भी, गाड़ी भी, पद भी, पैसा भी, रुतबा भी, नौकर चाकर भी, कुछ और भी जिसके बिना नहीं रहा जा सकता ज़िंदा। अहंकार शून्य होकर, खुद को खोकर, कालिख को धोकर, कठिन है, कठिन है, मिनख है, मगर मिनखपणां नहीं है।**

कर्त्तव्य बनता अभिशाप कविता में वर्तमान में काम चोरी, चालबाजी, बेईमानी और बदचलनी के बढ़ते प्रकोप में ऐसे लोगों को, जो स्वीकारोक्ति मिली है, उस पर आक्रोश व्यक्त किया गया है और अपने कर्त्तव्य को समर्पण भाव से करने वाले लोगों को आज हिकारत और बेचारगी से देखने की सामाजिक प्रवृत्ति ठीक नहीं है। पूजे जाते हैं वो, जो हैं चालबाज, हरामखोर, कामचोर और बदचलन। यही बन गया है शायद प्रचलन। बनावटीपन कविता में वर्तमान के जीवन में नकली आवरण ओढ़ कर खुशी का अभिनय करना छिप नहीं पाता है, आँखें सब कुछ कह देती है। झूठी बात को यकीनी बनाने के लिए झूठी कसमें खाना रस्म हो गया है और सबको पता है कि इन कदमों से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता है। हकदार कविता में किसी भी पद को पाने के लिए सही हकदार की बजाय तिकड़मी लोग हासिल कर लेते हैं और बाकी सब चुपचाप देखते रहते हैं, गलत का कोई भी विरोध ही नहीं करता है। बड़ी कुर्सी का असली हकदार कौन है जिम्मेदार और समझदार तो मौन है। वादा कविता में नेताओं द्वारा झूठे वादे कर चुनाव जीतना एक सामान्य बात हो गई है, जबकि उन्हें पता है कि वह जो वादे कर रहा हूँ, उन्हें मुझे पूरा नहीं करना है।

या तो तुम्हारी गरीबी हटाउंगा अथवा मैं गरीब बन जाऊंगा।

वादे के मुताबिक सच निकली वह बात..... आए वो माँगने ठीक पाँच साल बाद, क्योंकि चुनाव की पूरी हो गई मियाद।

वादा करना और तोड़ देना आज एक सामान्य बात हो गई है। वादे, संकल्प और सौगंध बहुत अच्छे से सोच समझकर तोड़ दिए जाते हैं और लोगों को धोखा देने का साधन बन चुके हैं। कथनी और करनी का अंतर आचरण कविता की विषय वस्तु है पर उपदेश कुशल बहुतेरे के अनुसार उपदेश देने वालों की कमी नहीं है और आचरण में जरा सा भी उसे डालने वाला कोई बिरला मिलता है। उपदेश देना अभी भी जारी है, इससे उससे सबसे यारी है, उपदेश पर आचरण भारी है। हिम्मत करके जब पाट दिया अंतर आचरण और उच्चारण का। अपने भी हो गए पराए और पैदा हुआ नजारा मरण-मारण का।

प्रगतिवादी चेतना की कविताओं में भाई भाई का बंटवारा में किस प्रकार ग्रामीण किसान वर्ग के साथ अशिक्षा के कारण शोषण होता था, व्यक्त किया गया है, अब समझ में आया कि अशिक्षा मौन और लोक लाज घाटे की सगी माँ है। प्रगतिशीलता तथा साहित्यिक फैशन कविता में छंद अलंकार आवश्यक न मान कर सीधे सपाट शब्दों में अपनी संवेदना को व्यक्त करने को ही काव्य सौंदर्य माना है, बजाय इसके की हवाई और काल्पनिक बातें की जाए।

'रीढ़ की हड्डी' कविता किसान के नाम पर सदा से होती आ रही राजनीति पर व्यंग्य किया गया है और किसान को देश और समाज की रीढ़ कहा गया है, जिसे अनेक तरह से तोड़ने का प्रयास होता रहा है लेकिन स्वाभिमान का प्रतीक रीढ़ रूपी किसान आज भी अस्तित्व बचाए हुए है लेकिन आखिर कब तक। **अन्नदाता है रीढ़ मगर इतनी मजबूत है कि इसे तोड़ो, मरोड़ो तो भी रह रह जाती है, देखते हैं कितने दिन तक, किसान का न्यूरोलॉजिस्ट कब आएगा, कब खुशियों के गीत वो गाएगा।** अवधान कविता में किसान और मेहनतकश वर्ग की मेहनत करते हुए संतोषीवृत्ति का उल्लेख किया गया है जबकि तथाकथित सभ्य वर्ग काम चोरी को अधिकार समझता है। **काश मैं भी मेरे खेत में पिताजी की तरह जा पाऊं, खुद को बार बार समझाऊं, फर्क यह है कि एक विधाता से डरता है दूसरा केवल काम से।** किसान की समस्याओं के नाम पर राजनीतिक रोटियाँ सेंकने वालों के लिए किसान आगे बढ़ने का और सफलता पाने का फार्मूला बन चुका है, **प्रदर्शन का मसाला है, पूंजीपतियों का प्याला है, इसके नाम से सब करना, मगर इसके लिए मत मरना।** उजालों के बीज कविता में रुढ़ियों और परंपराओं को त्याग कर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई है, जंग खाई परंपराओं को ढोती पीढ़ियाँ, नहीं बनती सफलताओं की सीढ़ियाँ, शुष्क शरीरों को कर स्निग्ध, ऊर्जस्वित, लिख डाले पसीने की स्याही से श्रम का इतिहास, उजालों के बीज बोकर फैलाएँ विवेकी हास।

मानवीय मनोभावों तथा मनोविकारों ओं से संबंधित कविताओं में क्रोध, निष्ठुर, आशा का व्यक्तित्व, ईर्ष्या, मैं, कुंठा का गर्भ आदि में मनोभावों के प्रभाव को व्यक्त किया गया है। क्रोध में हिदायत भी बेअसर, अपने परायों से बेखबर, विवेक की मृत्यु और नासमझी का पर्याय है, क्या कोई अतिरिक्त आय है?, ना, नकारात्मक उर्जा का है विस्फोट, और अहंकार पर गहरी चोट, जीवन का संहारक, मारक, अपकारक क्रोध।

सूतली बम घूम रहे हैं यत्र, तत्र, सर्वत्र। मनुष्य के सुंदर और मुस्कुराते रूप में ना जाने कब, कौन, कहाँ पर फट जाए और कब कौन बेवजह निपट जाए।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

निष्ठुर समर्पण, श्रद्धा और विश्वास से जीवन जीने की चाहत है, मैं कभी किसी के एहसान अथवा अन्य प्रभाव में आकर अपनी मानवीय करुणा को जगाना नहीं चाहता, सो निष्ठुर बना दो, प्रभु क्षमा करो, जिससे मेरा दिन भी सो जाए, वह अंधेरी रात मुझे मत देना।

आशा का व्यक्तित्व में आशा को जीवन का सबसे उज्ज्वल भाव बताया गया है और सृजन और प्रगति का मूल मंत्र बताया गया है। **संक्रामक सकारात्मकता की और नींव सृजनात्मकता की, बन जाए सब का अभिन्न, अभिनंदनीय एवं आदरणीय, आशा और केवल आशा, बन जाए जीवन की पिपासा, जिज्ञासा और प्रत्याशा।** तो दूसरी ओर ईर्ष्या को मन का सबसे संहारक भाव माना गया है, **जलना और जलाना, चिढ़ना और चिढ़ाना, मरना और मारना, डरना और डराना, शत्रु भाव का पचासा लगाना, और बेवजह दुखी होना और दुखी करना फिर भी कहाँ छोड़ पाता हूँ उसे कहाँ मुक्त हो पाता हूँ इस विषपाई भाव से।** रामधारी सिंह दिनकर की ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से निबन्ध की याद दिलाता है।

'मैं' में अहंकार को अपना सहोदर बताया गया है और चाहते हुए भी उससे अलग हो पाना असंभव है नहीं जी पाते एक दूसरे के बिना, उठते, बैठते, बोलते, खाते, सोते, सारे अवसरों पर संग संग, अंग अंग में रंग रंग चुके, काश मैं सबके साथ इतने प्रगाढ़ संबंध बना पाता। कुंठा का गर्भ में कुंठा में फंसे व्यक्ति की बेबसी देखिए, कुंठा का गर्भ पूरा काल ले ले, तो बन जाए काल, यथासमय गिर जाए तो महाकाल।

लेखक ने सामाजिक समरसता तथा सामान्य लोक व्यवहार से संबंधित कई कविताओं में नीति तथा दैनिक व्यवहार में आए परिवर्तन को रेखांकित किया है, काश हम इंसान होते, में सांप्रदायिकता तथा जातिवाद के बढ़ते अंधकार को बहुत बड़ा खतरा माना है, जिन्होंने उप योनियां निर्मित कर डाली इंसानियत सीमित कर डाली।कृषि प्रधान देश में कब कुर्सी प्रधान हो गई, पता ही नहीं चला। लौह पुरुष उद्बोधन शैली में ऐसी गुणी लोगों के लिए है, जो तमाम बाधाओं से पार पाकर सफल होते हैं, क्योंकि **लौह पुरुष लौह पुरुष होते हैं, वह परिस्थितियों का रोना नहीं रोते हैं, सूली की सेज पर भी सो लेते हैं।** उस पार या आर-पार कविता में जीवन के खट्टे-मीठे-कड़वे अनुभव हैं, **जिन्दगी के स्वाद निराले हैं, कभी मीठे, कभी कड़वे, कभी फीके तो कभी तीखे। चलते रहो राही, एक दिन पहुँच ही जाओगे, उस पार या आर-पार।**

गति काव्य में धन के पीछे पागल वर्तमान पीढ़ी के लिए संदेश है, कि उतने ही धन की आवश्यकता है, जितने का सदुपयोग हम कर पाए और एक सीमा हमें धन कमाने की निर्धारित करनी होगी चाहे उम्र की हो अथवा धन की।

धन को गाली देना भी ठीक नहीं, धन जरूरत है, निर्वाह की,जीवन की, संसार की, भौतिक उन्नति की,

धन पर पागल होना भी ठीक नहीं। धन लालची है लोभी है, अहंकारी है, मदोन्मत है, यह ईर्ष्यालु है, भोग विलासी है, आभासी है, आकाशी है। छोड़ नहीं पाए लालच तो सत्यानाशी है।

भाई बहन कविता भाई तथा बहन दोनों के ही अपने कर्त्तव्यबद्ध होने की अवस्था में एक दूसरे की सहायता न कर पाने की बेबसी का चित्र है, कौन गलत और कौन सही, रिश्तों की नदियाँ यूं ही बही, अपने अपने स्वार्थ अथवा अपने अपने कर्त्तव्य, निर्णायक कौन? लेखक है मौन! सड़कें बोलती, मनुष्य मौन कविता में हमारे लोकतंत्र में पनप चुकी तथाकथित वीआइपी संस्कृति पर व्यंग्य है।

कविता बात में हमारे कथन की महत्ता बताई गई है जो कि कुंवर नारायण की कविता बात सीधी थी मगर की याद दिलाती है, **बात होती है परिवर्तनकारी, बात में बदलने की कूव्वत, बात मुलाकात का कारण, बात से महाभारत रण, बातों से चलता है संसार। बातों का होता व्यापार, बात बिकती है, चलती है, रुकती है, सरकती है , सरकाती है, संभलती है तो संभालती है। बस खेल सारा बातों का, स्नेह हो या जलन बात का ही चलन।** नेतृत्व उद्बोधन शैली में आतंक के विरुद्ध प्रेरित करने वाली तुकांत कविता है, सज्जनों की एकता, जमाना अब माँग रहा, गठन हो सत्संग का, खूब तलक सांग रहा। घर घर चूल्हा माटी का कविता में जीवन की नश्वरता को समझते हुए जीवन में अच्छा बुरा जो भी सामने आए हैं उसे सहज भाव से स्वीकार करने से जीवन बहुत आसान और संतुष्टि पूर्ण जिया जा सकता है, जितना हो जोश बनते समय, उतना ही हो होश मिटते समय, परिवर्तन की सनातनता को जिसने भी स्वीकारा है, वो जीवन में कभी नहीं हारा है। महाभिनिष्क्रमण कविता में वर्तमान के बनावटी पन के बीच दिग्भ्रमित हो चुके व्यक्ति की व्यथा है, परमात्मा के बिगड़े नाटक में कौन नायक है और कौन छोटा? बस मुखौटा ही मुखौटा। तो बदलाव कविता में ग्रामीण जीवन में आए बदलाव को रेखांकित करते हुए बतलाया गया है की वर्तमान में ग्रामीण जीवन भी इतना निर्दोष नहीं रह पाया है, मैं पीछे लौट कर देखता हूँ, स्मृतियों को टटोलता हूँ, तो पाता हूँ बड़ा परिवर्तन, अब नहीं रहा वह अपनापन, जाने कहाँ चले गए वह दिन।

शांति कविता में शांति का महत्त्व तो है मगर वर्तमान दौर में संघर्ष के बिना कुछ भी हासिल करना संभव नहीं है इसलिए शांति के लिए शोर आवश्यक है, मगर शांत रहने से अस्तित्व पर आंच आती है, तभी तो शांति के लिए अशांति को, भीड़ बुलंदियों तक पहुँचाती है। चांद कविता में चांद का रात्रि कालीन प्रकृति वर्णन चित्र है जो मानवीकरण द्वारा बहुत कुछ छायावादी कविता की तरह बन पड़ा है, शर्मीले चांद के भी नखरे देखो, बादल से बतियाता, बल खाता, इठलाता और लेकर ओट, घूंघट निकाल लेता है।

पेट भरना जिनके लिए आज भी सबसे बड़ा संघर्ष है, रोटी के लिए तेरे खातिर घूम घूम कर हो गया भ्रष्ट, भटक भटक कर भोगे कितने ही कष्ट, आखिर थक हार कर तुझ पर ही केंद्रित हो बैठा संसार। स्वाद कविता एक चित्र है विगत हो चुके सीधे-साधे ग्रामीण जीवन का,जो अब दुर्लभ है। भय कविता में परिस्थितियों के बोझ से अपने ही संकल्प ध्वस्त कर कवि स्वयं को ही

Rajasthan Education Department

नए रूप में पाकर भयभीत होता है जो उसके लिए भी नया रूप है,मैं जब भी अपने को अनावृत होते देखता हूँ, अपने ही आवरण से अनभिज्ञ, अनजाने भय से दुबका हुआ, टकटकी लगाए बैठा पाता हूँ, खुद को कितना कठिन लगता है, एक ही खेल पर दृढ़ प्रतिज्ञ। लाग लपेट कविता में फूल के माध्यम से प्रकृति से हम क्यों नहीं सीखते कि **कालक्रम के साथ पैदा होना, परिपक्व होना और मिट जाना एक सतत प्रक्रिया है, क्यों नहीं हम निर्विकार भाव से इसे ग्रहण कर पाते हैं।**

कई कविताओं में उनके काव्य कर्म के प्रति चिंतन व्यक्त हुआ है मज्जन, साहित्य सम्मेलन में, होता है जरूर मज्जन, मन का, विचारों का और भावों का। कवि में मन की यात्रा विचार से शुरू होकर अनंत की ओर चलकर शब्द दरवेश बन गई। रचना और लिखना में, **जितना श्रद्धा और विश्वास में अंतर होता है, जैसे पिता और चाचा में फर्क होता है, ठीक वैसा ही अंतर रचना और लिखना में होता है, रचना अपनी भाषा में शोभती है और लिखना किसी भी भाषा में।** पुरस्कार में बेबसी विकलांग याचक की, बनाकर कविता मैं सुनाता गया, श्रोताओं को भाता गया, पाठकों को पढ़ाता गया, सबको सुहाता गया, बनाता गया करुणा का चित्र। इसी प्रकार सृजन, संपादक तथा कविताएँ भी काव्य प्रक्रिया के प्रति कवि की अनुभूति का उद्घाटन है।

कवि अपने कर्म क्षेत्र अर्थात शिक्षक को अछूता कैसे छोड़ सकते थे, उनकी कविता भाग्यविधाता में शिक्षक कर्म के प्रति उद्बोधन शैली में शिक्षक को पीढ़ी निर्माता के रूप में प्रेरित करने का भाव व्यक्त किया गया है, नूतन समाज निर्मित कर, क्योंकि तू है गुरुवर। महानता तथा शिक्षक धर्म कविता में शिक्षक का पारंपरिक वर्णन ही है जहाँ अपने ज्ञान से प्रकाशित करने वाले सच्चे शिक्षक को महान बताया गया है। शिक्षकों को समाज में यथोचित सम्मान नहीं मिल पाने की पीड़ा व्यंग्य के माध्यम से प्रकट हुई है, **बकवास बंद करो, जाकर अपना काम करो, आदि आदि, साहब के पीछे दीवार पर लिखा था, शिक्षक का सम्मान करो।**

बहुत सी कविताओं में आज की वैश्विक समस्या पर्यावरण को भी विषय वस्तु बनाया गया है पेड़ कहीं समरसता का संदेश देता है तो कहीं निस्वार्थ भाव से जीवन जीने की प्रेरणा का माध्यम बना है। स्वच्छ हवा अभियान में, **हवा की स्वच्छता बड़ा मुद्दा है, माद्दा चाहिए इस मुद्दे के क्रियान्वयन के लिए, प्रदूषण मुक्त महत्त्वाकांक्षी योजना का स्वच्छ हवा कार्यक्रम, स्वच्छ होने से पहले हवा न हो जाए।** सिलेंडर, पेड़ का संदेश, निष्काम भाव तथा पेड़ का मानव के साथ संवाद में पर्यावरण और पेड़ के महत्त्व को दर्शाया गया है तो दूसरी ओर मुझे भी बांटोगे और अचरज जैसी कविताओं में पेड़ और पर्यावरण बचाने के संदेश के साथ साथ जातिवाद और संप्रदायवाद पर व्यंग्य किया गया है।

दो दूनी पाँच काव्य संग्रह में कवि ने सामान्य तौर पर दैनिक जन जीवन से जुड़ी किसी भी विषय वस्तु को अछूता नहीं छोड़ा है और सुधारवादी दृष्टिकोण से लिखी कविताओं में व्यंग्य के साथ साथ है कहीं-कहीं हास्य के छींटें भी है जो हमारी संवेदनाओं को झकझोरती नहीं तो जगाती जरूर हैं। कवि का एक संवेदनशील सामान्य मनुष्य के साथ-साथ ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े व्यक्ति, एक शिक्षक और एक साहित्य के विद्यार्थी के रूप में प्रकट हुए हैं कबीर का प्रभाव स्पष्ट है लेकिन कवि की शैली में कबीर की प्रखरता नहीं होकर एक संवेदनशील मनुष्य की विनम्रता का भाव बोध मिलता है। भाषा सामान्यतया प्रवाहमान है। पुस्तक में एक और संस्कृत में शब्द भी है तो ठेठ ग्रामीण अंचल और बोलचाल के शब्दों की बहुतायत है, पुस्तक की प्रिंटिंग तथा जिल्दसाजी उच्च कोटि की है और कुल मिलाकर एक पठनीय पुस्तक हमारे हाथ में है, जो एक सामान्य जन के जीवन के सभी पहलुओं को छूती हुई हमारी संवेदना के तारों को झंकृत जरूर करती है।

समीक्षकः **राजेन्द्र प्रसाद मील**
सहायक निदेशक (शालादर्पण),
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर
मो. 8118852336

रातीघाटी युद्ध

लेखकः जानकी नारायण श्रीमाली; **प्रकाशकः** गणराज प्रकाशन, ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर; **संस्करण** : 2021; **पृष्ठ संख्या** : 424 **मूल्य** : ₹ 750

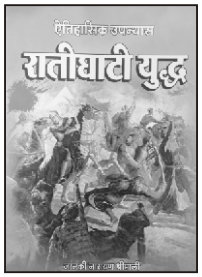

इतिहास, भारत के लिए और भारत की पूरी सभ्यता के लिए ऐतिहासिक सत्यों का उद्घाटन जितना महत्त्वपूर्ण है। उसका महत्त्व आज तक ठीक से समझा नहीं गया है। क्योंकि जिस सभ्यता को अपना गौरवशाली इतिहास, संघर्ष, सभ्यता, संस्कृति, भाषा याद नहीं होते, उन्हें अपने सम्मान का भी भान नहीं हो पाता। सत्य को छिपाने के प्रयास भूत-काल से लेकर आज तक होते रहे हैं। इतिहासकार भय, प्रलोभन अथवा अपनी विचारधाराओं के प्रभाव में आकर झूठ का एक ऐसा आवरण रच देते हैं। जिसमें देश का गौरव कम करके दिखाने का या पूरी तरह छुपाने का भी प्रयास होता है। भारतीय प्रतिरोध के इतिहास को भी इसी तरह से प्रस्तुत किया गया है, जैसे यह पराजय का इतिहास है। परन्तु ऐसा है नहीं। यह योगदान बलिदान का ओर अपने आप को उत्सर्ग कर देने वाले समाज का एक अप्रतिम उदाहरण है। ऐसे ही इतिहास की एक महान गाथा, अनछुए पृष्ठ को, एक स्वर्णिम पृष्ठ को 'रातीघाटी युद्ध' नामक ऐतिहासिक उपन्यास द्वारा, शिक्षाविद, साहित्यकार, समाजसेवी एवं इतिहास अध्येता श्री जानकी नारायण श्रीमाली ने अपने उपन्यास से प्रकाश में लाने का महनीय कार्य किया है।

इस ऐतिहासिक उपन्यास में, 26 अक्टूबर1534 ईस्वी को भारत के प्रतिरोध के इतिहास की एक अनुपम घटना जो राजस्थान के बीकानेर में घटित हुई। जब बीकानेर के महाप्रतापी, तेजस्वी राजा राव जैतसी ने बाबर के पुत्र कामरान को एक निर्णायक युद्ध में पराजित किया। यह युद्ध समय की धूल में खो गया, विस्मृत हो गया, श्री जानकी नारायण श्रीमाली द्वारा ऐतिहासिक ग्रंथों, तथ्यों, संदर्भों एवं गहन

Rajasthan Education Department

शोध के द्वारा इसे सबके सामने लाया गया है। लेखक का यह प्रयास सराहनीय बन पड़ा है। यह ऐतिहासिक उपन्यास जिसमें नौ अध्याय पहला बीके बीकानेर, दूसरा कुँवर जैतसी, तीसरा राव जैतसी, चौथा युद्ध के बादल, पांचवा रण निमंत्रण, छठा रणभूमि, सातवां मरुभूमि में कामरान, आठवाँ प्रति चक्रव्यूह और आखिरी अध्याय यानि की नवां अध्याय है मरुधरा मंडीय उछब मंडाण। 424 पेज में समेटे हुए इस अगाध ज्ञान, इस ऐतिहासिक उपन्यास में भाषा, संवाद शैली, लोक जीवन ग्राम्य जीवन की सहजता, खानपान, वेशभूषा, संस्कारों का मनुष्य पर कैसा प्रभाव होता है? इन सबका सांगोपांग वर्णन है। यह उपन्यास अपनी विशिष्ट शैली एवं भाषा के प्रवाहमय रूप में अद्वितीय बन पड़ा है। ऐतिहासिक उपन्यास का। एक गुण प्रमुख होता है कि वह पाठकों को अपने साथ उस कालखंड में होने का एहसास दिला सके वह भाव, वो भावनाएँ जो उस समय हुईं, पाठक अपने आसपास घटित होती महसूस कर पाए। इस उपन्यास में लेखक ऐसा वातावरण निर्मित करने में सफल रहे हैं। लेखक अपनी पाँच दशक की साहित्यिक यात्रा से समृद्ध ज्ञान कोश राजस्थानी, हिंदी, संस्कृत, उपनिषद, रामचरित मानस, गीता, मीराबाई के भजन, कबीर के दोहे और लोक में आलोक फैलाने वाले लोकगीतों के द्वारा समां बांध लेता है। बीकानेर राज्य की स्थापना और उसमें आने वाली कठिनाइयों के बीच किस तरह से राव बीका ने राज्य स्थापित किया। उस समय की कठिन स्थितियों पर प्रकाश पड़ता है, परंतु साथ ही उस समय के शासकों का अपनी प्रजा के साथ के सहजता और मिठास भरे संबंधों का पता चलता है, यह हृदयस्पर्शी है। कुंवर जैतसी एवं राव जैतसी इन दोनों अध्यायों में जैतसी के विराट व्यक्तित्व और दूरदर्शितापूर्ण नेतृत्व की बानगी देखने को मिलती है। आज्ञाकारी, ज्ञान पिपासु, सुदर्शन व्यक्तित्व, प्रजावत्सल राजा। अच्छा नेतृत्वकर्ता वह होता है जो लोगों में आशा का संचार करता है, उन्हें सकारात्मक भाव से आप्लावित करे, परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगा सके और अपने लोगों को प्रेरित कर सके, साथ ही स्वयं आगे बढ़कर तूफानों का सामना करने की हिम्मत भी रखता हो, जैतसी एक ऐसा ही अद्भुत नेतृत्वकर्ता है। मध्यकालीन भारत के इतिहास का महान रणनीतिकार, श्रेष्ठ सेनापति।

खानवा के युद्ध में भारतीय पक्ष की पराजय से एक बात स्पष्ट हो गई थी कि भारतीय शक्ति एवं शौर्य में अद्वितीय है। परन्तु रणनीतिक दृष्टि से उन्हें अपने आप को बहुत उन्नत करने की आवश्यकता है। राव जैतसी ने उसी क्षण यह जान लिया कि ये युद्ध अवश्यंभावी है और उन्होंने तत्क्षण तैयारी करनी शुरू कर दी। इस ऐतिहासिक उपन्यास का राण निमंत्रण नामक अध्याय। इस बात की गहराई से विवेचना करता है कि किस तरह जैतसी ने पूरे भारत के योद्धाओं को, क्षत्रियों को एक छत्र के नीचे इकट्ठा करके, सामूहिक भारतीय शक्ति का सिंचन कर लिया, संचय कर लिया था।

रण भूमि एवं मरुभूमि में कामरान। इनमें अध्यायों में कामरान की सेना उसकी सोच, उसकी कार्य पद्धति,सैन्य संचालन, सोच, कुटिलता आदि पर गहरा प्रकाश डाला गया है। राव जैतसी द्वारा नियुक्त किए गए 108 सेनापति, उनकी सेना, उनके उद्भट योद्धाओं और अश्व शक्ति पर जानकारी विस्मयकारी है! आज से 500 वर्ष पूर्व के समय से हमारा परिचय प्रीतिकर है। प्रति चक्रव्यूह दोनों सेनाओं के मध्य हुए युद्ध का ऐसा वर्णन करता है, जो लोमहर्षक है। पता चलता है, किस तरह का जीवन मरण का यह संघर्ष था, परन्तु किसी परिणाम की चिंता किए बिना राव जैतसी और उनके साथियों ने। अपना सर्वस्व झोंक दिया। भारतीय पक्ष नर राम-राम को अपना। जय घोष बनाया और एक ऐसी सर्वथा नवीन रणनीति अपनाई, जो क्षत्रिय मूल्यों के कारण आज तक राजपूतों द्वारा नहीं अपनाई गई थी।

रात्रि युद्ध, छापामार युद्ध! जो बाद में महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा भी अपनाया गया। यह मुग़लों के लिए अप्रत्याशित था और इसने विजय का स्वर्णिम द्वार खोल दिया। समाज के प्रत्येक अंग द्वारा न सिर्फ सैनिक बल्कि आबाल, वृद्ध, नर-नारी खुद को मातृभूमि की रक्षा हित। झोंक देने को तत्पर थे इस उपन्यास में साफ दिखाई पड़ता है कि यह लोक युद्ध था यह जन युद्ध था।

उपन्यास की संवादशैली रोचक और प्रवाहमय है। मरुभूमि के पुत्रों ने अगणित बलिदान दिए। तब जाकर राष्ट्र सुरक्षित हुआ, संरक्षित हुआ। यह उपन्यास मरुभूमि बीकानेर के। सांस्कृतिक वैभव और शौर्य का अतुलनीय दर्शन करवाता है। राव बीका से लेकर राव जैतसी तक के इतिहास पर गहन दृष्टिपात करता है। यह रातिघाटी युद्ध भारतीय जीवन धारा के सारस्वत संस्कृति के मुखपत्र की तरह है। नृशंस आक्रमणों के बीच सभ्यता, अध्यात्म, दर्शन, इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृति, स्थापत्य, नगर नियोजन, राजनीति, युद्धकौशल, जनकल्याण, मीमांसा, तत्वदर्शन, तार्किकता इन सबका विशद साधिकार वर्णन इस उपन्यास में समावेशित किया गया है। इतिहास एवं स्वयं के गौरव को जो जानना चाहते हैं? हमारे पूर्वजों के अगणित बलिदानों की परंपरा को समझना चाहते हैं, हमारी शीलवती नारियों के। संस्कारों और बलिदानों की, जौहर की ज्वाला को महसूस करना चाहते हैं, उन सब के लिए यह ऐतिहासिक उपन्यास, एक ऐसी पुस्तक साबित होगा जो पीढ़ियों तक, समाज को दिशा दिखाएगा एवं आज की पीढ़ी को संदेश देगा कि भारत का इतिहास बर्बर आक्रमणों के विरुद्ध सतत विजय, विरोध और प्रतिरोधों का इतिहास है। मातृभूमि की रक्षा के हित, प्राणोत्सर्ग का इतिहास है,तथा साहस, अद्भुत रण कौशल एवं कठिनतम क्षणों में भी विचलित हुए बिना गौरवपूर्ण संघर्ष एवं अडिग स्वाभिमान का इतिहास है। पाठक इस ऐतिहासिक उपन्यास 'रातीघाटी युद्ध' को पढ़कर और प्रेरित बनें ऐसी कामना करता हूँ एवं लेखक को इस तरह की भूले हुए इतिहास को, ढके हुए सत्य इतिहास को सामने लाने के लिए अनेकानेक साधुवाद देता हूँ।

समीक्षकः **डॉ. चक्रवर्ती नारायण श्रीमाली**
सह आचार्य अभियांत्रिकी महाविद्यालय
बीकानेर (राज.)
मो: 9829297392

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

रात पछै परभात

उपन्यासकार: सन्तोष चौधरी; **छापणहार** : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़; **संस्करण** : 2019; **मोल** : ₹ 250; **पृष्ठ** : 176

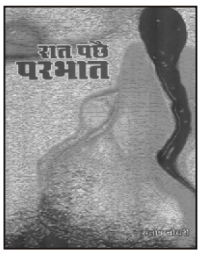

रात पछै परभात संतोष चौधरी रौ पैलो उपन्यास है पण जिण भांत उपन्यास लिखिज्यौ है, लागौ'क आप अेक मंज्योड़ा उपन्यासकार हो। उपन्यास री नायिका कृष्णा, मुख्य पात्रां में अजयसिंह जिको कृष्णा रौ भायलौ अर सकारात्मक ऊरमा रौ प्रतीक है। दूजा पात्रा में मांसा, किसन, विसन, मांगळी, रमा, कुसुम, कमला, पुलकित, मिरगा, मांजी, सुरभी, करणसिंह, सपना, राशी अर शिव सामळ है।

उपन्यास री सरूवात मांय ईज इण जग रै मानखै री दोवड़ी मनगत नै चौवड़ै करै'क जद कृष्णा अेकली ही अर अबखायां रै गतागम मांय उळज्योड़ी ही, उण बखत स्यात ई कोई उणरी मदद सारू आगै आवण री ठावकी आफळ करै। तो दूजै कांनी ऊगता सुरज नै निवण सारू सैंग जणा आप-आपरी कूड़ी खेंचळ कर रैया है। समाज री इण दोवड़ी मनगत रा बखिया उधेड़तौ निगै आवै औ उपन्यास/कृष्णा रा अबखायां भरिय दिनड़ा में कोई भी उण रौ साथ कोनी दियौ। कोई भी छिंया वाळौ रूंख कोनी मिळ्यौ जठै कृष्णा ऊभी रेय'र थोड़ी बिसराई लेय सकै। पण जद वां सफलता री टीकटोई माथै पूगी तद आखौ चौखळौ वीं रै औळ्यू-दौळ्यूं गेर-घुमेर घालतौ निगै आयौ। यानि ऊगतोड़ा सूरज नै सैंग निवण करै।

उपन्यास में अेक कांनी बेटी री चावना रौ प्रसंग है तो बीजै कांनी समाज री माड़ी मनगत रा दरसाव भी मिळै। दोय छोरा पछै तीजी औलाद री चावना लड़की रै रूप मांय करणौ बेटी सारू ठावी ठौड़ धरपै तो दूजै कांनी कृष्णा रै बेटी हुवण सूं वीं रै सासरिया री ओछी मनगत भी साम्ही आवै पण कृष्णा सेवट बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ रै नारा नै अंगेजता थकां आखै समाज सूं भिड़ जावै अर समाज नै अंक नूंवी सीख देवै।

'इत्ती ताकत, इत्तौ धीरज कठै सूं लावौ हो थे लुगायां'

किसन रा बापूजी रा अै बोल नारी सगती अर धीरज रौ सखरौ बखाण करै।

औ पूर्वाग्रह ईज इण उपन्यास रौ आधार बण्यौ'क जद घर-घराणौ आरथिक रूप सूं समरिध मिळै तो बेटी रा मां-बाप आपरी लाड़कड़ी सारू उणसूं रिस्तौ जोड़ता कीं टेम कोनी लगावै अर जे छोरो नौकरी आळो हुवै तो मानौ गंगाजी सम्पड़ीज्या, अेक जाग्यां सूं उपाड़नै दूजी ठौड़ रोप्योड़ो रूंखड़ौ ई जद ठौड़ छोड़ण सूं कुमळीजै, वौ रूंखड़ौ सासरिया नै छिंया, फळ-फूळ देवण मांय किणी भांत री कसर नीं छोड़ै।

'सारा ही घर रौ दिल जीतण सारू बोहळी मैणत करणी पड़सी'

(पृष्ठ 45)

पण फेर भी पुरुषवादी अहम री सोच उण उदैई री भांत हुवै जिको इण नारी रूपी रूंखड़ा री जड़ा नै कमजोर कर'र खुद नै इक्कीस बतावण मांय कोई कोर कसर नीं छोड़ै। ज्यां

'कर्त्तव्य फरज सैंग कृष्णा रा अरट्टक अधिकार आदेस सैंग सुरेश जी रा'

(पृ. 61)

इण उपन्यास मांय अेक कांती मां बाप, भाई-बैन, भाई-भोजाई, नणद, देवर, बेटा-बेटी, सास-ससुर आदि रिश्ता री सखरी मरजाद थरपीजी है तो बीजै कांनी सुरेश जी रै परिवार रा ईज अै रिस्ता बैरुपिया रै सांग सू कतई कमती नीं हुय सकै। उपन्यास मांय नायिका नै बखत रै बायरै रा झोळा रै साथै चालणौ ई पड़ै। नीं चावता थकां ई घर री हालात नै देखर पढ़ाई छोड़'र ब्याव करणौ ई पड़ै। आपरै लकवाग्रस्त बाप माथै अबै बा औरूं बोझ नीं बणनी चावै। पण कृष्णा रै सासरिया री मनगत तो अवनि रौ औ प्रसंग चौवड़ै करै' घर री नौकराणी बतावै जकी घर री बिनणी है।' (पृ. 86) जठै हेत, हिवळास री बातां नीं हुयर नरक सौ आभास हुवै है। कांई इणनै ई केवै सासरौ, कांई औई हुवै घणी रौ हेत।

'मिनख नै मिनख नीं समझै, वो आदमी कींकर प्रीत री बात कर सकै। (पृ. 94)

सेवट कृष्णा अेकली पड़ जावै क्यूंक 'जिण लुगाई नै आदमी रौ सपोर्ट नीं होवै, उणनै कोई सपोर्ट नी करै। पृ. 108

सेवट 'रात पछै परभात' रौ चानणौ हुवण लागौ अर मा'सा अजयसिंह, मा'जी, राशी सरीखा मिनखपणा री मरजाद थरपणियां लोग कृष्णा रै जीव मांय आया। शिव रै जलम माथै मा'सा कैयौ' अेक मां री आंवड़ी आसीस देवै है।' (पृ. 123) तो कृष्णा मजबूती रै सागै आपरै कर्त्तव्यपथ कांनी बधती निगै आवै। 'बेटी थारी पढ़ाई में कोई विघन नीं आवै' अठै बेटी सारू सबद बपरावणो मां-बाप रै हेत हिंवलास रौ जबरो दाखळौ है तो इणीज भांत कमली काकी री आसीस' पीळौ ओढ़ौ-पैरौ सा, दूधा न्हावौ, पूतां फळौ' मांय नौकराणी नै घर रौ मेम्बर मानण रौ अेक आदर्श रूप साम्ही आवै।

हां, पूरौ परिवार कृष्णा रै सागै हो, मा'सा, शिव, राशी, अजय सिंह अर मा'जी। पुस्तक छपण रौ ठाणै माथै/ सेवट कृष्णा आपरी पिछाण बणावण मांय सफल हुयी अर नारी संघर्ष अर सम्मान री प्रतीक बणी। तो आखिर मांय पुरुषवाड़ी सोच अर मिनखपण री मरजाद नै थरपणं में भी उपन्यासकार कामयाब रैया' अजयसिंह जी अर सुरेश जी रै मार्फत।

'कित्तौ फरक है, अेक सिरक मरद बण्यौ (सुरेश), अर अेक इन्सान (अजयसिंह) (पृ. 157)

तत्वां रै दीठ सूं उपन्यास खरौ उतरै। तो राजस्थानी भासा री देसी-मठौठ, सखरी लकब अर प्रसंग मुजब औपता सबद-चितराम। यूं लखावै'क मानौ चलचित्र माथै दरसाव ही चाल रैयौ है। प्रसंग मुजब अंगरेजी सबद काम लिखिज्या है ज्यां, नंबर, रिटायर, प्राइवेट, कंट्रोल, सिफ्ट साईड, वार्ड, इगनोर, लोड, डबल-बेड, पर्सनली, प्रोग्राम आद तो अंगरेजी शब्दो रौ राजस्थानी करण भी घणै फूटरापै साथै करिज्यौ है ज्यां फ्रांका, स्कूलां, नम्बरा आद। देशज सबदा मांय थपेड़ा, झपाड़ा दौटा, गडमगड, थेथड़योड़ा आर बपराया/ तो गोरकी गाय, भूरियौ कुत्तौ, चितकवरी बकरी जैड़ा विसेसण भी काम लीरीज्या है/ राजस्थानी रौ लाड़लौ प्रत्यय'डी रौ प्रयोग हुयौ ज्यां किताबड़ी कोयलड़ी, सुवटड़ी और उपन्यास राजस्थानी लेखन परम्परा नै समाधि करै तो उपन्यास विधा सारू तो औ नूंवौ इतियास ही बणावै।

समीक्षक : **डॉ. रामरतन लटियाल**
प्राध्यापक (राजस्थानी साहित्य)
मेड़ता सिटी, नागौर राज.

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

अपनी राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।
-व. संपादक

सफलता का श्रेय

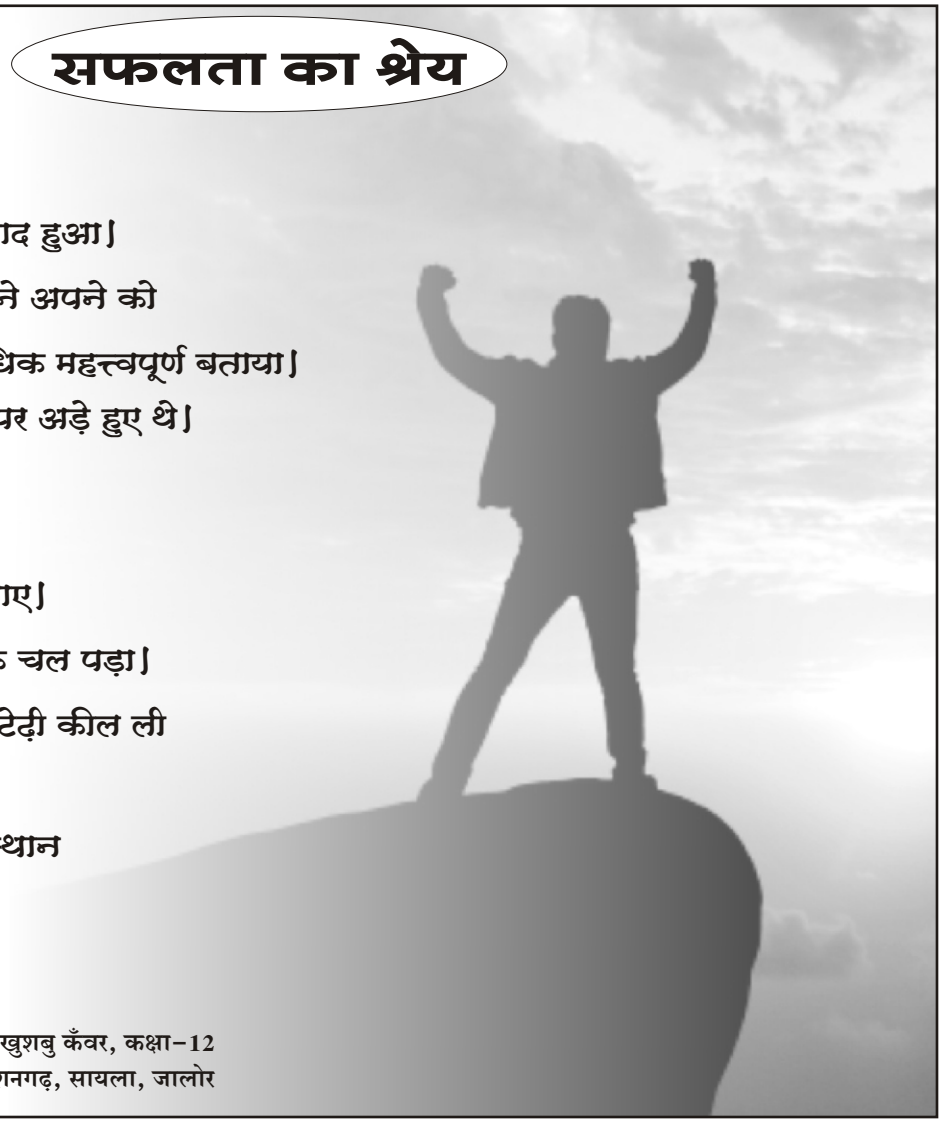

सफलता का श्रेय किसे,
एक दिन इस प्रश्न पर विवाद हुआ।
संकल्प ने अपने को, बल ने अपने को
और बुद्धि ने अपने को अधिक महत्त्वपूर्ण बताया।
तीनों अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे।
अंत में तय हुआ
कि विवेक को पंच बनाकर
झगड़े का फैसला कराया जाए।
तीनों को साथ लेकर विवेक चल पड़ा।
उसने एक हाथ में लोहे की टेढ़ी कील ली
और दूसरे में हथौड़ा।
चलते-चलते वे लोग ऐसे स्थान
पर पहुँचे जहाँ
एक सुंदर बालक खेल रहा।

खुशबु कँवर, कक्षा-12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, सायला, जालोर

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

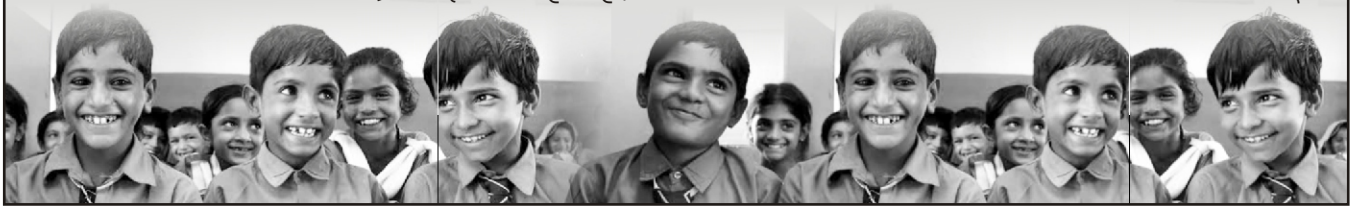

कविता

चढ़ गये जो हँसकर सूली
खाई सीने पर
जिन्होंने गोली
प्रणाम उन को हम करते हैं
मिट गये देश पर जो
सलाम उनको हम करते हैं।

दिव्या सोलंकी, कक्षा 12–ए
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़ (जालोर)

मानवाधिकार

साहस से लड़ने वाला ही मैंदान जीतता हैं,
इंसान लाखों दुःख सहकर सुख के मोती बीनता हैं,
शिक्षा और पैंसा न हो तो जीवन में आती हीनता हैं,
इंसान ही इंसान के अधिकार छीनता हैं।

गरीबों को भी बोलने का अधिकार हैं,
मुफ्त में शिक्षा पाने का अधिकार हैं,
मंदिर में जाने का अधिकार हैं,
स्वतंत्र रूप से जीवन साथी चुनने का अधिकार हैं,
फिर भी उनका अधिकार छीना जाता हैं,
गुलामों की तरह जीवन जीने को मजबूर किया जाता हैं।

सड़क पर भीख मांगते
बच्चों के अधिकारों के बारे में
कौंन सोचता हैं,
अगर स्वार्थ न हो
स्वयं का लाभ न हो
वो मानवाधिकार
भी नहीं बोलता हैं।

दीपिका जाँगिड़, कक्षा 9
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डूडवा, सीकर (राज.)
मो: 6367983907

मानवाधिकार

प्रत्येक मानव चाहे वह किसी भी धर्म, लिंग, जाति स्तर या फिर किसी भी देश का हो वह जन्म से समान व स्वतंत्र है। एक मनुष्य का जीवन तभी सफल है, जब उसे गरिमामय लक्ष्य पूर्ण जीवन जीने का अवसर प्राप्त हो। मानवाधिकार मनुष्य की क्षमताओं को पूरी तरह उपयेग अवसर देते है।

मानवाधिकार आयोग मानवता के खिलाफ क्रूरता की भर्त्सना करता है। इन सब भेदभाव के अंत के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1948 में 10 दिसंबर को मानवाधिकार की सार्वभौमिक घोषणा को अपनाया। मानवाधिकार अधिनियम के तहत मानव के मूलभूत अधिकार जैसे जीवन, स्वतंत्रता, समानता व गरिमा संविधान द्वारा निश्चित है।

मानवाधिकार के उल्लंघन को रोकने के लिए भारत में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया है। जो मूल अधिकारों की रक्षा और मानवाधिकारों के उल्लंघन की जाँच पड़ताल का कार्य करता है।

प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार के सदस्यों की 6 सप्ताह के लिए बैठक करता है। बैठक में इससे मानवाधिकार से जुड़े सारे मुद्दों पर चर्चा होती है।

रौनक, कक्षा 12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डूडवा, सीकर (राज.)

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुड़ा एन्दला, जिला-पाली

(संघवी सरस्वती बेन लखमीचन्द चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई के द्वारा निर्मित)

❒ देवेन्द्र प्रसाद डाबी

पश्चिमी राजस्थान का गोडवाड क्षेत्र शिल्प कला की बेजोड़ कलाकृतियों के साथ-साथ प्रवासियों का भी गढ़ है। रेगिस्तानी क्षेत्र व रोजगार के अवसर में कमी को देखते हुए यहाँ के प्रवासियों ने व्यवसाय के लिए गुजरात, महाराष्ट्र जैसे औद्योगिक राज्यों के साथ ही दक्षिण भारत के राज्यों की तरफ भी रुख किया। राजस्थान के प्रवासियों ने अपनी अथक मेहनत, बुद्धिचातुर्य व कार्य के प्रति लगाव के कारण अपने व्यवसाय को पल्लवित किया। व्यवसाय को पल्लवित करने व अन्य राज्यों के निवासी होने के बावजूद भी उनका अपनी मातृभूमि से लगाव कभी कम नही हुआ। प्रवासियों ने अपनी जन्मभूमि से लगाव के कारण यहाँ पर कई प्रकार से सहयोग प्रदान किया है। ऐसे ही अभूतपूर्व दान का साक्षी पाली ब्लॉक का ग्राम गुड़ा एन्दला बना है जहाँ पर संघवी सरस्वती बेन लखमीचन्द खांटेर चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई के द्वारा भव्य विद्यालय भवन का निर्माण करवाया जा रहा है।

भामाशाह परिवार- जयपुर अहमदाबाद नेशनल हाइवे पर पाली जिले के ग्राम कीरवा से 3 किमी अन्दर की तरफ ग्राम गुड़ा एन्दला स्थित है। इसी गाँव के जैन समुदाय के तीनों भाइयों श्री सुरेश कुमार खांटेर, श्री किरण कुमार खांटेर, श्री अजित कुमार खांटेर, को जब यह पता चला कि गाँव में विद्यालय भवन की आवश्यकता है, तब इन तीनों भाइयों ने अत्याधुनिक विद्यालय भवन के निर्माण का बीड़ा उठाया था। तीनों भाई इसी गाँव के विद्यालय में पढ़े थे तथा विद्यार्थी जीवन मे उन्होंने जिन कठिनाइयों का सामना किया था, उसी को ध्यान में रखते हुए उनके मन में भी यह विचार आया कि हम भी ग्रामवासियों के लिए कुछ ऐसा करें जिससे आने वाली पीढ़ियाँ लाभान्वित हो सके। जन कल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए व अपनी जन्मभूमि पर कुछ करने की प्रेरणा को आधार मानते हुए तीनो भाइयों ने मिलकर विद्यालय भवन बनाने का निश्चय किया। खांटेर परिवार के तीनो भाइयों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

1. श्री सुरेश कुमार पुत्र श्री लखमीचन्दजी उम्र 59 वर्ष, शिक्षा-स्नातक, जन्म स्थान-गुड़ा एन्दला।
2. श्री किरण कुमार पुत्र श्री लखमीचन्दजी उम्र 49 वर्ष, शिक्षा-स्नातक, जन्म स्थान-गुड़ा एन्दला।
3. श्री अजीत कुमार पुत्र श्री लखमीचन्दजी उम्र 45 वर्ष, शिक्षा-स्नातक, जन्म स्थान-गुड़ा एन्दला।

व्यवसाय-स्टील, आभूषण निर्माता।

तीनों भाइयों के नेतृत्व में संघवी सरस्वती बेन लखमीचन्दजी खांटेर चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई के अन्तर्गत विद्यालय भवन का निर्माण करवाया जा रहा है।

विभागीय सहयोग- जब मैने प्रधानाध्यापक से पदोन्नत होकर विद्यालय में जुलाई 2017 में प्रधानाचार्य के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था, उस समय पुराना विद्यालय भवन जर्जर होकर गिर चुका था एवं कक्षा-कक्षों की कमी होने के कारण विद्यालय संचालन में कठिनाई होती थी। कक्षा-कक्षों की कमी को देखते हुए एवं नए विद्यालय भवन बनवाने के लिए ग्रामवासियों के माध्यम से भामाशाहों से सम्पर्क करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। 15 अगस्त 2017 को स्वंतत्रता दिवस के दिन भामाशाह श्री खांटेर परिवार से सम्पर्क किया गया। अगस्त 2017 में आयोजित विद्यालय

विकास प्रबन्धन समिति की बैठक में भामाशाह परिवार की स्वीकृति मिली। विद्यालय भवन के लिए कुछ औपचारिकताओं को पूर्ण करने के लिए मेरे द्वारा चेन्नई और मुम्बई की यात्रा भी की गई। जब कागजी कार्यवाही और औपचारिकताएँ पूर्ण हो गई तब विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति की बैठक में भामाशाह परिवार की विद्यालय नामकरण शर्त मय सहमति पत्र को लेकर प्रस्ताव पारित किया गया, तदोपरान्त जिशिअ. पाली के माध्यम से विद्यालय भवन निर्माण का प्रस्ताव निदेशक महोदय बीकानेर को प्रस्तुत किया गया। बीकानेर मे सहायक निदेशक श्री दिलीप परिहार के द्वारा इस प्रोजेक्ट की सराहना करते हुए ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से स्वीकृति जारी करवाने में विभागीय सहयोग किया। राज्य स्तरीय संवीक्षा समिति की स्वीकृति दिनांक 16.06.2018 के उपरान्त विद्यालय भवन का निर्माण कार्य अनवरत रूप से जारी है।

लोकार्पण को तैयार है भवन–दिनांक 16.06.2018 से निर्माण कार्य अनवरत रूप से जारी है एवं कोरोना की दो लहरों के बीच भी लगभग 30 माह के बाद भवन निर्माण का कार्य पूर्ण होने की ओर है। आराध्य जैन संतों, भामाशाह परिवार, जनप्रतिनिधियों, ग्रामवासियों व अन्य मेहमानों की उपस्थिति में विद्यालय भवन का लोकार्पण दिनांक 19.12.2021 को होना निश्चित हुआ है। इतने बड़े स्तर पर निर्माण कार्य करना भी चुनौतीपूर्ण कार्य था लेकिन भामाशाह परिवार का सम्बलन, ग्रामवासियों का सहयोग व मजदूरों की अथाह मेहनत के कारण यह निर्माण कार्य पूर्णता की ओर है।

विस्तृत क्षेत्र में फैला है भवन– संघवी सरस्वती बेन लखमीचन्दजी खांटेर चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा लगभग 40000 वर्ग फीट में अत्याधुनिक दो मंजीला विद्यालय भवन का निर्माण करवाया गया है। भवन में कुल 26 कक्ष है जिसमें से प्रधानाचार्य कक्ष, स्टॉफ कक्ष, कार्यालय कक्ष, तीन प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, कम्प्यूटर कक्ष व अन्य कक्षा-कक्ष शामिल है। इस भवन में लगभग 800 छात्रों के बैठने की क्षमता वाले विशाल हॉल मय रंगमंच का निर्माण करवाया गया है, जिसमें प्रार्थना व विद्यालय की अन्य गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती है। छात्रों की बैठक मय रसोईघर युक्त विशाल पोषाहार कक्ष का निर्माण भी किया गया है। विद्यालय के सभी कक्षा-कक्षों, मय प्रधानाचार्य कक्ष व कार्यालय कक्ष के लिए फर्नीचर की व्यवस्था भी भामाशाह परिवार के द्वारा की गई है। छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक शौचालय व ठण्डे पानी की व्यवस्था भी भामाशाह द्वारा की गई है। विद्यालय के बाहर की तरफ खुला मैदान रखा गया है। इस विद्यालय का उपयोग आने वाले समय में ग्राम गुड़ा एन्दला(पाली) के लगभग 10 गाँव व ढाणियों के निवासियों के द्वारा किया जाएगा।

आभार–विद्यालय परिवार व समस्त ग्रामवासी ऐसे भामाशाह परिवार का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इतने बड़े स्तर पर जनकल्याण कार्य करने का बीड़ा उठाया हो। यह शिक्षा मन्दिर आने वाले समय में सभी वर्गों के लिए लाभदायक होगा

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
गुड़ा एन्दला, पाली (राज.)
मो. 9414678957

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-अक्टूबर 2021 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	RAJKUMAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	711111
2	SUNITA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GULPURA (215226)	CHURU	500000
3	BHANWAR LAL MAHICH	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	321000
4	RAMAVATAR MEEL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KOLIDA (213375)	SIKAR	320000
5	BAJRANG LAL KUKANA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	320000
6	OM PRAKASH MEEL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	270000
7	NEMICHAND	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	200000
8	KANARAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BOYAL PALI (221167)	PALI	200000
9	PRANAY CARE PRIVATE LIMITED	GOVT. GIRLS SECONDARY SCHOOL BAYA (213338)	SIKAR	200000
10	NAWAL KHANDELWAL	GOVT. GIRLS SECONDARY SCHOOL BAYA (213338)	SIKAR	199501
11	NIPRA INDUSTRIES PVT LTD	GOVT. GIRLS PRIMARY SCHOOL JHIROTA (484274)	AJMER	175000
12	GANESH RAM SEWDA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	170000
13	BHANWAR LAL MAHICH	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	151121
14	SUNIL KUMAR PUROHIT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MELUSAR RATANGARH (215594)	CHURU	124000

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

15	VIKASH MANTRI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	111000
16	KHEM RAJ DANGI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GHASA (223108)	UDAIPUR	100000
17	FUTURETEL ENERGY PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LALASI (213222)	SIKAR	100000
18	DILIP KUMAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	100000
19	MANOJ KUMAR BASER	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NAYI AABADI PARSOLI BEGUN (224080)	CHITTAUR GARH	80000
20	SHREE BALAJI IRON FOUNDRY PVT LTD	MAHATMA GANDHI GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ENGLISH MEDIUM SIKAR (219153)	SIKAR	75750
21	MANISH CHAHAR	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL NAIYASAR (474712)	CHURU	68000
22	SURENDRA SINGH	GOVT. SECONDARY SCHOOL BARWALA (227075)	NAGAUR	66250
23	LAXMINARAYAN TAILOR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LALLAI (214188)	AJMER	61000
24	BAJARANG LAL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51121
25	JANKI DEVI KOTHARI	GOVT. PRIMARY SCHOOL BID GHAS (452314)	UDAIPUR	51000
26	KUSHALA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DUDOLI (219776)	NAGAUR	51000
27	VIJAY SINGH	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51000
28	JAGDISH PRASAD	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51000
29	RAJESH ROAT	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BHAGELA FALA (480055)	DUNGARPUR	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–अक्टूबर 2021 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	NAGAUR	115	2374616
2	CHURU	62	1701660
3	SIKAR	60	1062781
4	BANSWARA	79	318118
5	AJMER	171	277986
6	PALI	88	272150
7	UDAIPUR	158	203422
8	CHITTAURGARH	66	153321
9	DUNGARPUR	41	105862
10	JHUNJHUNU	11	95210
11	DAUSA	63	81920
12	BUNDI	184	74865
13	BHILWARA	128	72116
14	BARMER	199	64573
15	PRATAPGARH	32	54748
16	JODHPUR	56	52685
17	BARAN	7	52301
18	KOTA	149	41757
19	SAWAIMADHOPUR	17	40850
20	JAIPUR	40	39182
21	GANGANAGAR	15	23150
22	JALOR	237	22486
23	RAJSAMAND	34	22255
24	BHARATPUR	68	13352
25	HANUMANGARH	27	12231
26	JHALAWAR	61	10200
27	SIROHI	35	5991
28	ALWAR	33	5442
29	DHAULPUR	20	4951
30	BIKANER	15	3591
31	TONK	17	2950
32	KARAULI	29	2830
33	JAISALMER	13	2231
	Total	**2330**	**7271783**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : दिसम्बर, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका : दिसम्बर, 2021

राष्ट्रमण्डल संसदीय संघ (राजस्थान शाखा) के तत्त्वावधान में विधान सभा बाल सत्र का आयोजन

चित्र सौजन्य : मोहन गुप्ता 'मितवा' मो. 9414265628

बदामबाई उदयलाल सिंयाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुड़ला, खमनौर (राजसमन्द) के नवीन भवन का लोकार्पण समारोह

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● दिसम्बर, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2021 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2021

दिनांक : 16 नवम्बर, 2021 **स्थान : बिड़ला सभागार स्टेच्यू सर्कल, जयपुर**

मुख्य अतिथियों का स्वागत 'गार्ड ऑफ ऑनर'

दीप प्रज्वलन

गरिमामय मंच

'प्रशस्तियाँ' पुस्तक का लोकार्पण

उद्बोधन

माननीय मुख्यमंत्री
श्री अशोक गहलोत

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
श्री गोविन्द सिंह डोटासरा

अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा)
श्री पी.के. गोयल

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
श्री काना राम

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2021 में उपस्थित सम्माननीय शिक्षक एवं संभागी

चित्र सौजन्य : मोहन गुप्ता 'मितवा' मो. 9414265628